।। श्री शासनपति महावीराय नमः ।।
।। गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरिगुरुभ्यो नमः ।।

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | नवम्बर-2019
दिव्याशीष-लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

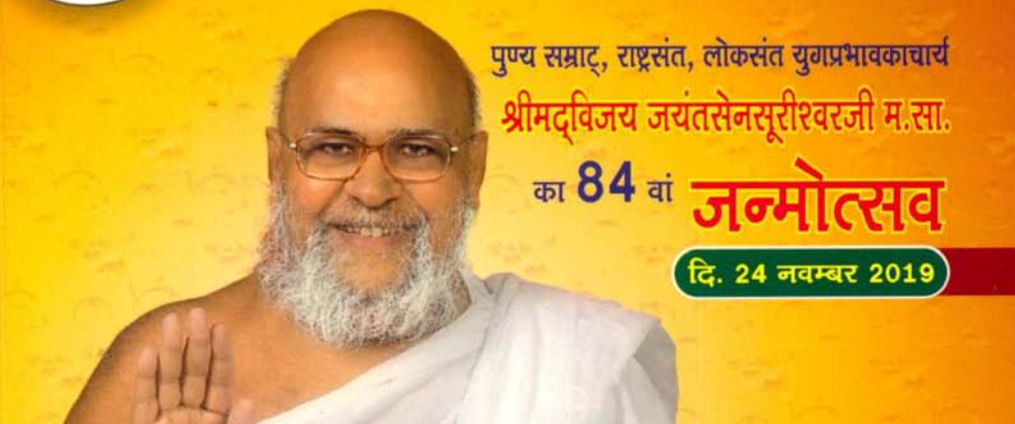

पुण्य सम्राट्, राष्ट्रसंत, लोकसंत युगप्रभावकाचार्य

श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

का 84 वां जन्मोत्सव

दि. 24 नवम्बर 2019

गच्छाधिपति आचार्यश्री श्रीमद्विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

आचार्यश्री जैनाचार्य श्रीमद्विजय
जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. व
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजन

- 9-10 नवम्बर - अ.भा. श्री राजेन्द्र नवयुवक परिषद् का अधिवेशन तथा महिला व तरुण परिषद् के भी अधिवेशन ।
- 12 नवम्बर- कार्तिक पूर्णिमा चातुर्मास समाप्त ।
- 24 नवम्बर- भाभरा (जिला अलीराजपुर) में पुण्य सम्राट का जन्मोत्सव ।
- 28 नवम्बर-भाभरा में श्री सुविधिनाथ जिनालय तथा गुरु मंदिर प्रतिष्ठा एवं मुमुक्षी चांदनी बहिन की दीक्षा ।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)
11. श्री जैन श्वेताम्बर त्रिस्तुतिक संघ, बागरा, जिला-जालोर (राज.)
12. श्री कुंथुनाथ राजेन्द्र जैन चेरिटेबल ट्रस्ट, सरसी, जिला-रतलाम (म.प्र.)
13. श्री अजितनाथ जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ, बर्डियागोयल (त. जावरा, म.प्र.)
14. श्री अमराईवाड़ी श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक संघ, बलियावास, अहमदाबाद
15. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्र यतीन्द्र जयन्तसेन वाटिका पिपलौदा (रतलाम, म.प्र.)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

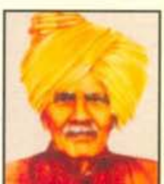
शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
पाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

श्री पुखराजजी पूनमचन्दजी जोटा
दाधाल

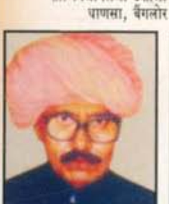
शा. हजारीमलजी गजाजी वेदमुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी वालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

हमारे गौरव

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोसंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्टूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोरायु

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

श्री शा. कालूचंदजी हंजाजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

स्व. शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा मेंगलवा/मदुराई

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी जोधपुर/चैन्नई

श्री उत्तमचंदजी दरगचंदजी संकलेचा, मेंगलवा/मदुराई

34373

हमारे गौरव

शा. सेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
धलवाड नेल्लोर

स्व. श्रीमती बदामीबाई मोडमलजी
बाफणा-धलवाड, नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा रसींगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दापाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

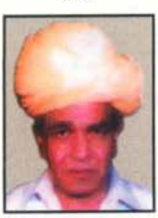
श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
कोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

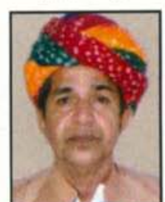
श्री उमराबजी तोलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेड़ी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

कमलाबाई धींगड़मलजी पटवारी
चैन्नई, मांडवला

शा. निहालचंदजी धुलाजी
कातरेला, आहोर/मुंबई

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैनावा

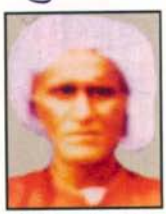

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी राधाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

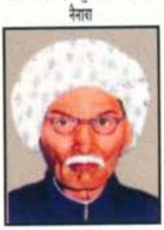

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, डीसा

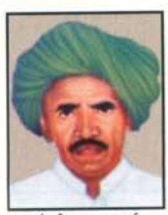

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

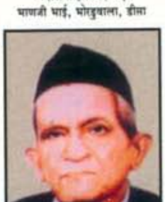

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई
थराद

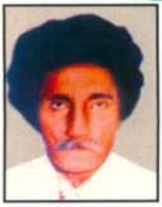
संघवी चिमनलाल खेमचंद
थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद
थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद
थराद

वोहेरा श्री माणकलाल
भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी
चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद
महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज
वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल
मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी
वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी
झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना
रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा
जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक
कुक्षी

स्व. समरथमलजी तह्लेरा
कर्माइवाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन
राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी
तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी
रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी
रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी
भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत
दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी
मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया
पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी
तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी
सेठिया, कुशलगढ़

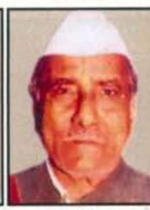
दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी
मेहता, कुशलगढ़

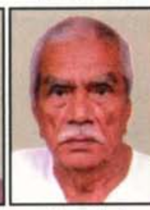
श्री मानसिंहजी
राजगढ़

स्व. श्री बाबुलालजी भारतीय
खाचरौद

हमारे गौरव

कालूरामजी औरा
टोपीवाले, रतलाम

जैन भूषण स्व. श्री वर्धमानजी
राठौर (बड़नगर)

स्व. श्री प्रकाशचंद्र लुणावत
(बामनिया वाले)

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपडा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
मित्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

नवम्बर-2019 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
स्व.पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 67 अंक 11
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2073

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

हार गई व्यंतरी – विजयी रहे भगवंत

श्री महावीर स्वामी की आत्मा के 18 वें भव में वे त्रिपृष्ठ वासुदेव थे ।

जिसके सोलह हजार रानियां थीं तथा उनमें एक रानी विजयवंती थी। उसे उपेक्षा का दर्द था, रौद्र ध्यान में मृत्यु का वरण कर व्यंतरीदेवी कठपुतना बनी ।

श्री महावीर स्वामी चार्तुमास के पश्चात् शालशीर्ष ग्राम के उद्यान में विचरण करते हुए पधारे तथा कायोत्सर्ग में ध्यानस्थ हो गये।

वहीं कठपुतना भी थी, उसे श्री महावीर स्वामी को देखते ही पूर्व का भव याद आ गया।

बस !

प्रतिशोध की आग में जलने लगी। उसने डरावना रूप बनाया तथा अपनी माया से अति दुःखकारी शीत का प्रकोप कर दिया।

शीत–खूब शीत – उग्र शीत – मरणकारी शीत

लेकिन श्री महावीर स्वामी अडिग–अटल रहे। पूरी रात कठपुतना का उपसर्ग चलता रहा, महावीर स्वामी ध्यानस्थ सहन करते रहे।

रात व्यतीत हो गई। कठपुतना थक गई– हार गई। महावीर स्वामी के चरणों में गिर गई। वह पश्चाताप करने लगी– अब कठपुतना श्री महावीर स्वामी के चरणों में क्षमा मांग रही थी।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1. धारावाहिक उपन्यास–किस्मत की बात (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	9
2. अतिथि रचना–जैन प्रतिमाओं की प्राचीनता के प्रमाण (पं.श्री गुणसुंदरविजयजी गणी)	11
3. विभिन्न जैन रामायण : एक परिचय (डॉ. दिलीप धींग)	13
4. प्रवचन–अशुभ वचनयोग (31) (स्व. श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	16
5. गणधरवाद (लेखांक–70)	19
6. तीर्थंकर श्री भगवान शान्तिनाथ (जैन जसराज देवड़ा, धोखा)	22
7. एक की ही शरण–चिन्तन का चित्रांकण (जैनाचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.)	24
8. बेहतर शाकाहारी भोजन –उत्तम आहार शाकाहार–26 (जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)	26
9. तीर्थंकर–तारेश (33) (मुनिराज डॉ. सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	28
10. स्मरणवर्जन याने क्या ? प्रश्नोत्तरी	30
11. सुख की प्राप्ति (कुसुम जैन, संपादिका–णाणसायर)	31
12. जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)	33
13. विराट् व्यक्तित्व – श्री जयंतसेन जयनाद (मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.)	35
14. सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	38
15. अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	41
16. अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	43
17. सात प्रकार की शुद्धि (मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)	45
18. सम्यक्त लक्षणों की व्याख्या का दस्तावेज (शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)	47
19. शुभ चिन्तन (डाह्यालाल जोटा, दाधाल)	50
20. गुजराती संभाग	51–70
21. चातुर्मास–क्या पाया ? कितना पाया ? (श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा.)	71–74
22. कुमकुम सने पगलिये	75–93
23. परिषद् प्रांगण से	94–116
24. श्रीसंघ सौरभ	117–120
25. जैन विश्व	121–122
26. शाश्वत धर्म के संरक्षक	123–124

(लेखांक-1)

धारावाहिक उपन्यास

किस्मत की बात

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

विश्व के अनेक द्वीपों में एक द्वीप है- जम्बूद्वीप । इस जम्बूद्वीप के अनेक क्षेत्रों में एक क्षेत्र है भरत क्षेत्र। भरत क्षेत्र के अनेक नगरों में एक नगर है कनकपुर । ख्याति/ प्रसिद्धि में कनकपुर का अलग ही स्थान है । इस नगर की नगर योजना भी अन्य नगरों से भिन्न ही है। इसका श्रेयभागी कनकपुर नरेश वीरधवल है। उन्होंने अतिप्राचीन कनकपुर को नया स्वरूप प्रदान किया है। इसके लिये प्रारम्भ में उन्हें काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। नगर निवासी उनकी योजना से सहमत ही नहीं हो पा रहे थे। वीरधवल अपनी योजना को प्रजा से समर्थित करवाकर ही कार्यान्वित करना चाहते थे। इसका कारण यह था कि इस योजना के अन्तर्गत अनेक लोगों के भवन, मकान तोड़ना थे। उनके पुनर्वास के लिए राजा वीरधवल ने नवीन भूमि की व्यवस्था भी कर दी थी किन्तु लोग अपनी पैतृक भूमि को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हो रहे थे। लोगों को समझाने में उन्हें महीनों लग गए। इसके लिए भी उन्हें नये उपायों का आश्रय लेना पड़ा। जब सामूहिक बैठकें आयोजित करने से सफलता नहीं मिली तो उन्होंने अपनी योजना को मूर्तरूप प्रदान करने की अपनी विचारधारा को कुछ दिनों के लिए विराम दे दिया। उसके पश्चात् उन्होंने एक-एक, दो-दो व्यक्तियों को बुलाकर अपनी बात बताई और उन्हें अन्य स्थान पर दी जाने वाली भूमि पर अपना आवासगृह बनवाने के लिए सहमत कर लिया। इस प्रकार जो कार्य सामूहिक बैठकों में महीनों तक सम्भव नहीं हो पाया था, वह कुछ ही दिनों में सम्पन्न हो गया। लोगों को राज्य की ओर से कुछ

मुआवजा राशि भी दी गई थी। अपनी योजना के कार्यान्वित हो जाने के पश्चात् राजा वीरधवल अत्यन्त प्रसन्न था। अब कनकपुर का सौन्दर्य निखर उठा था। भरत क्षेत्र में उसके मुकाबले का एक भी नगर नहीं था।

राजा वीरधवल चाहता तो शक्ति के द्वारा अपनी योजना को कार्य रूप में परिणत कर सकता था किन्तु वह शांतिप्रिय, न्यायप्रिय, प्रजाप्रिय, नीतिज्ञ राजा था। अन्य मानवीय गुण भी उसमें कूट-कूट कर भरे थे। साथ ही वह प्रतापी और पराक्रमी भी था। वह अपनी प्रजा को कष्ट देकर कोई भी कार्य करना नहीं चाहता था। वह अपने राज्य से सम्बन्धित प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य का निर्णय अपनी प्रजा के परामर्श से करता था। इसके लिए उसने एक प्रजापरिषद् का गठन भी कर रखा था। राजा वीरधवल की प्रजावत्सलता के कारण वह अपनी प्रजा में अति लोकप्रिय और सम्माननीय ही नहीं श्रद्धा का केन्द्र भी था। उसकी कीर्ति अन्य अनेक राज्यों में भी फैली हुई थी। कुछ राजा तो उसे अपना आदर्श मानकर उसके पदचिन्हों पर चलने का प्रयास भी कर रहे थे।

राजा वीरधवल की पत्नी पद्मावती भी प्रजा की हितैषीणी थी। दया, करुणा, क्षमा जैसे मानवीय गुण उसमें थे। वह धर्मपरायणा और पति परायणा महिला थी। वह एक शीलवती नारी थी और हर स्थिति में संतुष्ट रहना जानती थी। प्रजा के सुख में वह अपना सुख मानती थी। यदि अपने राज्य के किसी भी कौने से उसे प्रजा के दुःखी होने का समाचार मिलता तो वह अपने पति राजा वीरधवल से आग्रह करके उसके दुःख निवारण का त्वरित उपाय करवाती। अपने इन्हीं गुणों के कारण रानी पद्मावती भी जनता में लोकप्रिय और आदरणीय थीं। प्रजा अपनी रानी के गुणानुवाद करते थकती नहीं थी।

महामात्य सुमतिचन्द्र अपने नाम के अनुरूप ही विवेक सम्पन्न था। महामात्य साम, दाम दण्ड और भेद नीति में निपुण था। प्रजा पर उसका प्रभाव भी काफी था। प्रजा अपने महामात्य का भी काफी सम्मान करती थी। महामात्य के हृदय में भी अहिंसा, करुणा, उदारता आदि गुण कूट-कूट कर भरे थे। धार्मिक दृष्टिकोण से वह जैनधर्म का उपासक था। तात्विक ज्ञानी था। उसकी दिनचर्या का प्रारम्भ सामायिक और महामंत्र नवकार की आराधना से होता था। वह अपने राजा के प्रति वफादार था और राज्य के प्रति समर्पित भी था। राजा और महामात्य के अनुरूप ही अन्य अमात्य और सेनापति भी थे।

(क्रमशः)

■■■

अतिथि रचना

जैन प्रतिमाओं की प्राचीनता के प्रमाण

(पं. श्री गुणसुंदरविजयजी गणी)

कोई भी व्यक्ति चाहे जैन हो या जैनेतर, स्थानकवासी हो या तेरापंथी जैनधर्म का इतिहास तटस्थता से लिखे तो इन्हें यहाँ दी गई विगत को उजागर करना अत्यंत जरूरी होगा ही।

मूर्तिपूजा जैन आगमों में : 卐 श्री ठाणांग सूत्र के चतुर्थ स्थान में नन्दीश्वर द्वीप के 52 जिन मंदिरों का अधिकार है । 卐 श्री समवायांग सूत्र के सत्तरहवें समवाय में जंघाचारण- विद्याचारण मुनियों के यात्रा का वर्णन का उल्लेख है। 卐 भगवती सूत्र शतक 3 उद्देशा 1 के चमरेन्द्र के अधिकार में जिन प्रतिमा का शरण कहा है । 卐 श्री उपासकदशांग सूत्र में आनन्द श्रावक के अधिकार में जिनमूर्ति का उल्लेख है।卐 रायपसेणीय सूत्र में सूर्याभदेव ने जिनप्रतिमा की पूजा की, उसका वर्णन है। 卐 द्रौपदी जिन प्रतिमा की पूजा करती थी। उसका ज्ञाताधर्मकथा सूत्र में विशद वर्णन है। 卐 विजयदेव ने जिनप्रतिमा की पूजा की, इसका जीवाभिगम सूत्र में विशद वर्णन है। 卐 श्री शत्रुंजय तीर्थ पर कई आत्माएँ मोक्ष में गई, इसका अंतकृत सूत्र में वर्णन है। 卐 अष्टापद तीर्थ पर ऋषभदेवजी के पुत्र भरत चक्रवर्ती ने 24 तीर्थंकरों का मन्दिर बनाया है। वहाँ जिन प्रतिमा के आगे रावण ने वीणा बजाकर भक्ति करके तीर्थंकर गौत्र बाँधा है।

आध्यात्मिक प्राचीन जैन संस्कृति के द्योतक : 卐 आबू (देलवाड़ा) पर 18 करोड़ की लागत से विश्व - विख्यात जैन मन्दिर बनवाने वाले विमल मंत्री ने 2 हजार जिनप्रतिमाएँ भी बनवाई थी। इसे 1046 वर्ष हुए हैं । 卐 आबू (देलवाड़ा) पर 12 करोड़ तिरेपन लाख की लागत से नेमिनाथ भगवान का मन्दिर बनवाने वाले वस्तुपाल- तेजपाल ने 5 हजार जैन मन्दिर व 11 हजार जिनेश्वर भगवान की मूर्तियाँ बनवाई थी। इसे 844 वर्ष हुए हैं। 卐 राजा कुमार पाल ने तारंगा (जिला- महेसाणा, गुजरात) में अजितनाथ भगवान का भव्य मन्दिर व 7 हजार जिन प्रतिमाएँ बनवाई थी। इसे 850 वर्ष हुए हैं। 卐 देलवाड़ा (जिला उदयपुर) के जैन मन्दिर 800 वर्ष पहले बने थे। 卐 गुजरात में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ की मूर्ति असंख्य वर्ष पुरानी है। 卐 पालीताणा के सैंकड़ों जैन मन्दिर व गिरनार, सम्मेतशिखर, पावापुरी आदि तीर्थ, जैनधर्म में प्राचीनता के बोलते उदाहरण हैं। 卐 दयालशा किला तीर्थ मेवाड़ के महाराणा राजसिंहजी के मंत्री दयालशा व धर्मपत्नी पाटमदे ने 300 वर्ष

पूर्व बनवाया। 卐 करेड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ का जीर्णोद्धार 700 वर्ष पूर्व पेथड़शा के पुत्र झांझणशा ने कराया । इससे अधिक मूर्तिपूजा के और अधिक प्रमाण आप क्या चाहेंगे ?

मथुरा का कंकाली टीला के बारे में–

मूल लेखक : चंद्रचूड चतुर्वेदी (जैन ज्योति-द्वितीय पुस्तक - अंक सातवाँ, चैत्र 1989 अंक 19 में) ने जो लिखा है वह यहाँ देकर यह प्राग् कथन पूर्ण करते हैं ।

मथुरा में कंकाली टीला नामक एक प्राचीन भूमि है। उसके निकट एक मंदिर है जिसमें एक अति प्राचीन नक्काशी कामवाला पत्थर का स्तंभ है। उसका नाम कंकाली देवी है। इस टीले में से दो हजार वर्षों से भी अधिक प्राचीन जैन मंदिरों के अवशेष निकले हैं, जो स्तूप, तोरण, आयागपट (सम्मानसूचक फलक), खंभे, खंभों के ऊपरी भाग, पाटछत्र, मूर्ति आदि के रूप में हैं। ईसा के पूर्व 150 वर्ष पहले उत्कीर्ण यह लेख एक मंदिर का है जिसमें मंदिर का निर्माण कराने वाले का भी नाम है। इससे यह सिद्ध होता है कि मथुरा में ईसा के पूर्व सैंकड़ों वर्ष पहले जैन मंदिरों का अस्तित्व था।

एक मूर्ति की बाईं ओर लिखा गया है कि यह मूर्ति करीब ई. सं. 156 के आसपास स्थापित की गई थी और वह एक ऐसे स्तूप पर थी जो देवों द्वारा निर्मित था। डॉ. फुहरर ने ई.स. 1895 में भी इस कंकाली टीले की खुदाई का काम करवा के अनेक वस्तुएँ निकाली हैं जिसमें से तीर्थंकर प्रभु महावीर की एक पूरे कद की मूर्ति में संवत् 299 का एक लेख मिला है।

अर्थात् – जो कथाएँ जैन ग्रंथों में हैं वे यहाँ चित्र, शिलालेख तथा मूर्तियों के आकार में निर्मित हैं। इससे एक बात सिद्ध होती है और वह यह है कि **जैनधर्म अत्यंत प्राचीन धर्म है।**

(1) आयागपट : यह एक पत्थर का चोकौर टुकड़ा है। उसके मध्य में तीर्थंकर की मूर्ति है और चारों ओर उत्तम प्रकार का नक्काशीकाम है। जैन लोग प्राचीन समय में जैन मंदिर में तीर्थंकरों के सम्मान हेतु ऐसे पट लगाते थे। इस पट के नीचे प्राचीन लिपि में एक लेख है जिसकी शैली इस प्रकार है।

यह लेख प्राकृत भाषा में है जिसका भावार्थ यह है कि जिसके पिता सिंह नामक वणिक हैं तथा जिसकी माता कौशिकी है उस सिंहनादिक अथवा सिंहनंदिक ने अरिहंतों की पूजा तथा सम्मान हेतु यह आयागपट स्थापित किया है। (इति चंद्रचूडजी)

दशवैकालिकसूत्र में निर्युक्तिकार श्री भद्रबाहुस्वामीजी भी जब दशवैकालिक शास्त्र के रचयिता शय्यंभव गणधर महाराज को वंदन करते हैं तब इनका परिचय देते हैं कि वे मनकमुनि के पिताजी थे और जिनवर प्रतिमा (सद्भाव स्थापना रूपा) के दर्शन से प्रतिबोध पाए थे– अर्थात् इस दर्शन से इनका मिथ्यात्व-अज्ञानरूप निद्रा का त्याग हुआ था और वे सम्यक्त्व विकास प्राप्तिवाले बने थे। आशा है वाचक वर्ग जिनप्रतिमा और जैनधर्म की अति प्राचीनता-पूजनीयता के विषय में सत्य समझेंगे स्वीकारेंगे ।

■■■

विभिन्न जैन रामायण : एक परिचय

(डॉ. दिलीप धींग)

भगवान राम भारतीय संस्कृति के प्राण-पुरुष रहे हैं। उनके जीवन आदर्शों ने भारतीय संस्कृति को पर्याप्त रूप से प्रभावित किया है। हिन्दू जैन और बौद्ध इन तीनों भारतीय धर्म परम्पराओं की अपनी-अपनी रामकथाएँ हैं। राम के जीवन सम्बन्धी ग्रन्थों में वाल्मिकी रामायण प्राचीनतम ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ हिन्दू परम्परा में प्रचलित रामकथाओं का आधार ग्रन्थ है। जैन परम्परा में रामकथा सम्बन्धी ग्रन्थों में प्राकृत भाषा में रचित आचार्य विमलसूरि का 'पउमचरियं' (पद्म चरित्र) एक प्राचीनतम प्रमुख ग्रन्थ है। इसे प्रथम सदी की रचना माना जाता है। लेखकीय प्रशस्ति के अनुसार इसकी रचना पाँचवें आरे के 530 वर्ष और भगवान महावीर का निर्वाण होने के बाद की गई। वाल्मिकी रामायण के पश्चात् रामकथा से सम्बन्धित ग्रन्थों में यही प्राचीनतम ग्रन्थ है। तीनों परम्पराओं की सभी भाषाओं की सभी रामकथाएँ इन दोनों परम्पराओं के दोनों ग्रंथों के बाद लिखी गई हैं।

राम का नाम पद्म : – जैन परम्परा में भगवान राम का नाम पद्म है। इसलिए रामकथा पर आधारित प्राचीन जैन ग्रंथों के नाम पद्म के आधार पर हैं. राम को पद्म कहने का कारण बताते हुए प्राचीन रचनाकारों ने कही उनके नयनों को पद्म जैसी उपमा दी है तो कहीं उनके मुखमण्डल को पूर्ण विकसित कमल की उपमा दी है। उन्होंने राम के शरीर की तुलना नीलकमल से करके भी पद्म नाम होना बताया है। जैन रामायण के अनुसार राम दीक्षा लेते हैं और निर्वाण प्राप्त करके सिद्ध भगवान बन जाते हैं। दीक्षा के उपरान्त उनका नाम 'पद्म' होता है। राम का मुनि अवस्था का नाम पद्म था, अतः जैन परम्परा में रामकथा का पद्मचरित या पद्मपुराण नाम रूढ़ हो गया, ऐसा अनुमान भी किया जाता है।

कई भाषाओं में जैन रामायण : – जैन परम्परा में भगवान राम को नौ बलदेव के अंतर्गत 63 शलाका पुरुषों (महापुरुषों) में स्थान व सम्मान दिया गया है। जैन परम्परा में चौपन महापुरुषों के अन्तर्गत भी रामचरित का गौरवपूर्ण उल्लेख है। प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंस, कन्नड़, हिन्दी आदि भारतीय भाषाओं में जैनों का रामकथा सम्बन्धी साहित्य विपुल मात्रा में है। बौद्ध परम्परा में रामकथा मुख्यतः जातक कथाओं में

वर्णित है। जातक कथाएँ मुख्यतः बोधिसत्व के रूप में बुद्ध के पूर्वभवों की चर्चा करती है। इन्हीं में 'दशरथ जातक' में रामकथा का उल्लेख है। इसके अलावा बौद्ध परम्परा में रामकथा सम्बन्धी ग्रन्थों की जानकारी का अभाव है।

रामकथा सम्बन्धी जैन साहित्य : – जैन साहित्यकारों ने विपुल मात्रा में रामकथा सम्बन्धी ग्रन्थों की रचना की है। इनमें दिगम्बर जैन लेखकों की अपेक्षा श्वेताम्बर जैन लेखक और उनके ग्रन्थ अधिक रहे हैं। जैनों में रामकथा सम्बन्धी प्राचीन प्रमुख ग्रन्थों की सूची निम्नानुसार है–

क्र.	ग्रंथ	लेखक	भाषा	काल ई.सन्
1	पउमचरियं	आचार्य विमलसूरि (श्वे.)	प्राकृत	प्रथम सदी
2	वसुदेव हिण्डी	संगधासगणि (श्वे.)	प्राकृत	609
3	पद्मपुराण	रविषेण (दि.)	संस्कृत	678
4	पउमचरिउ	स्वयम्भू (दि.)	अपभ्रंश	8 वीं सदी
5	चउपन्न महापुरिसचरियं	आचार्य शीलांक (श्वे.)	प्राकृत	868
6	उत्तरपुराण	गुणभद्र (दि.)	संस्कृत	9 वीं सदी
7	बृहत्कथाकोष	हरिषेण (दि.)	संस्कृत	631–632
8	महापुराण	पुष्पदंत (दि.)	अपभ्रंश	965
9	कहावली (कथावली)	आचार्य भद्रेश्वर (श्वे.)	प्राकृत	11 वीं सदी
10	त्रिषष्टि शलाका पुरुष चरित	आचार्य हेमचन्द्र (श्वे.)	संस्कृत	12 वीं सदी
11	योगशास्त्र स्वोपज्ञ वृत्ति	आचार्य हेमचन्द्र (श्वे.)	संस्कृत	12 वीं सदी
12	शत्रुंजयमहात्म्य	आचार्य धनेश्वरसूरि (श्वे.)	संस्कृत	14 वीं सदी
13	पुण्यचन्द्रोदय पुराण	कृष्णदास (दि.)	संस्कृत	1528
14	रामचरित	देवविजयगणि (श्वे.)	संस्कृत	1596
15	लघु त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित	मेघविजय (श्वे.)	संस्कृत	17 वीं सदी

(श्वे. = श्वेताम्बर । दि. = दिगम्बर)

इनमें एकाध को छोड़कर शेष सभी ग्रंथ प्रकाशित हैं। इनके अतिरिक्त भी जैन रामकथा सम्बन्धी अनेक हस्तलिखित प्रतियों का उल्लेख जिनरत्नकोश में मिलता है, जिनकी संख्या 30 से अधिक हैं। इनमें हनुमानचरित, सीताचरित आदि भी सम्मिलित हैं।

आधुनिक युग में हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में अनेक जैन विद्वानों, संतों और जैनाचार्यों ने रामकथा सम्बन्धी ग्रन्थों की रचना की है। हिन्दी में जैन दिवाकर मुनि चौथमलजी की काव्यकृति 'आदर्श रामायण', मरुधरकेसरी मुनि मिश्रीमलजी की 'रामयशोरसायन', शुक्लचन्द्रजी महाराज की 'शुक्ल जैन रामायण', आचार्य भद्रगुप्तसूरीश्वरजी की 'जैन रामायण', आचार्य तुलसी की 'अग्नि- परीक्षा' आदि उल्लेखनीय हैं। इन सब में जैन धर्म का विराट् दृष्टिकोण अभिव्यक्त होता है। जैन रामकथाओं की निराली विशेषताओं का वर्णन एक स्वतंत्र विषय है। ■■■

साहित्य समीक्षा

मोक्षमार्ग के कदम

मोक्षमार्ग के कदम : लेखक- जैनाचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म. प्रकाशक तथा प्राप्ति स्थान- दिव्य संदेश प्रकाशन ठि. सुरेन्द्र जैन, 205 सोना चेम्बर्स, 507-509, जे.एस. एस. रोड़, चीरा बाजार, सोनापुर गली के सामने, मरीन लाईन्स (ई), मुबई 400002 मो. 9892069330 आवृत्ति - प्रथम, मूल्य 120 रु., पृष्ठ -302, पक्की बाइंण्डिग, सफाई-छपाई- ठीक, मुद्रक - शुभम 9833835899।

प्रस्तुत पुस्तक 'सिंदुर प्रकट' ग्रंथ पर आधारित है जिसका लेखन आचार्य श्री सोमप्रभसूरीश्वरजी म. ने अपने आध्यात्मिक शिष्यों के लिए किया था। इस ग्रंथ में मोक्षमार्ग की ओर बढ़ने के इक्कीस कदमों का विवेचन है। प्रत्येक विषय के चार-चार श्लोकों का वर्णन दिया गया। आचार्यश्री रत्नसेनसूरीश्वरजी ने कई बार सिन्दूर प्रकार पर चातुर्मास में प्रवचन दिये हैं। इस आधार पर प्रवचनों का लेखन किया गया है जो काफी उपयोगी तथा प्रेरक है। यह ग्रंथ पर्याप्त आध्यात्मिक सामग्री को एकत्र करता है अतएव आध्यात्म के अध्येताओं के लिये सार्थक एवं उपयोगी है। विवेचन सरल भाषा में है तथा दृष्टान्त भी दिये गये हैं जिससे पढ़ना रुचिकर हो गया है। आचार्य श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी का यह 209 वां ग्रंथ है। पाठकों के लिये यह साहित्यिक तथा आद्यात्मिक विधि के रूप में है।

- सुरेन्द्र लोढ़ा

प्रवचन

अशुभ वचनयोग (31)

स्व. पुण्य सम्राट युग प्रभावक लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सरल शब्दों में संक्षिप्त बात कहने के अभ्यास की आवश्यकता बताते हुए विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक रस्किन की सलाह भी ध्यान देने योग्य है 'जो कुछ कहना हो, संक्षेप में कहो, वर्ना पढ़ने वाला उसे छोड़ता चला जाएगा और जहाँ तक हो सके, सरल शब्दों में कहो, वर्ना सुनने वाला उसका मतलब नहीं समझ पायेगा।'

अगर अपना कहा तुम, आप समझे भी तो क्या समझे ?
मजा कहने का तब है, एक कहे दूसरा समझे ।।

मनुष्य हमेशा दूसरों के लिए लिखता है और दूसरों के लिए ही बोलता है, इसलिए प्रकट की गई बात दूसरों को समझ में आनी ही चाहिए, अन्यथा लिखने और बोलने का जो प्रयोजन है, जो ध्येय है, जो उद्देश्य है, जो लक्ष्य है, उसकी पूर्ति नहीं हो सकेगी।

संस्कृत भाषा में तीन - चार सौ महाकाव्य रचे जा चुके हैं, परन्तु उनमें से पाँच महाकाव्य उत्तम माने गए हैं - (1) रघुवंश, (2) कुमारसम्भव (3) किरातार्जुनीय (4) शिशुपालवध और (5) नैषधीय चरित। इन पाँच महाकाव्यों में भी पञ्चम महाकाव्य सर्वोत्तम माना गया है। उसके रचियता थे महाकवि श्री हर्ष। उनके जीवन की एक महत्त्वपूर्ण प्रेरक घटना यहाँ प्रस्तुत की जा रही है, जिससे सरल भाषा का महत्त्व अच्छी तरह समझ में आ जाता है।

महाकवि श्री हर्ष की माता का नाम मामल्लदेवी था और पिता का नाम श्री हीर। श्री हीर को वाद में पराजित करके किसी दूसरे पंडित ने 'राजपण्डित' का पद हथिया लिया। बाद में इस पराजय के आघात से श्री हीर बीमार हो गए। उस समय अपने 5-7 वर्ष के पुत्र श्री हर्ष को बुलाकर उन्होंने अपनी व्यथा-कथा सुनाई और कहा कि इस पराजय का बदला उस पण्डित को वाद में ही पराजित करके लेना है। यदि तुम मुझे आश्वासन दे दोगे तो मैं शान्ति से अपने प्राण छोड़ सकूँगा।

श्री हर्ष ने कहा- 'मैं आपका आदेश शिरोधार्य करके प्रतिज्ञा करता हूँ कि उस राजपण्डित को वाद में परास्त अवश्य करूँगा। जैसे उस जवान पण्डित ने वृद्धावस्था में पराजित करके आपको मानसिक आघात पहुँचाया है, वैसे ही जवान होकर मैं भी उसे उसकी वृद्धावस्था में पराजित करके प्रतिशोध लूँगा। आप निश्चिन्त रहें।'

यह सुनकर श्री हीर पण्डित ने शान्तिपूर्वक अपनी अन्तिम साँस छोड़ दी। इधर अपने संकल्प का निरन्तर स्मरण करते हुए श्री हर्ष ने गहराई से दर्शनशास्त्रों का स्वाध्याय किया। व्याकरण और काव्य का तो प्रारम्भ में ही अध्ययन कर लिया था। जब अध्ययन के बाद उन्हें ऐसा लगने लगा कि अब मैं शास्त्रार्थ कर सकता हूँ, तब उन्होंने एक चिट्ठी लिखकर जयन्तचन्द्र राजा के पास यह संदेश भिजवा दिया कि अमुक राजपण्डित से शास्त्रार्थ करने के लिए मैं अमुक मास की अमुक तिथि को आ रहा हूँ। आप राजपण्डित को तैयार रहने के लिए कह दें।

फिर निश्चित तिथि के दिन वे राजसभा में पहुँचे। शास्त्रार्थ सुनने के लिए सभा विद्वानों से भरी हुई थी। उस समय यह नियम था कि जब कोई नया विद्वान सभा में प्रविष्ट होता, तब उसे कोई स्वरचित प्रशस्तिपद्य सुनाना पड़ता था। श्री हर्ष ने अपना प्रशस्तिपद्य इस प्रकार प्रस्तुत किया-

गोविन्दनन्दनतया च वपुः श्रिया च,
माऽस्मिन् नृपे कुरुत कामधियं तरुण्यः ।
अस्त्रीकरोति जगतां विजये स्मरः स्त्रीः,
अस्त्रीजनः पुरनेन विधीयते स्त्रीः ।।

पद्य बहुत सुन्दर था, शब्दलंकारों और अर्थालंकारों से अलंकृत था, परन्तु इसका पूरा अर्थ किसी को समझ में नहीं आ पा रहा था। सब एक-दूसरे का मुँह देखने लगे, परन्तु किसी के मुखमण्डल पर ऐसी प्रसन्नता परिलक्षित नहीं हो रही थी, जो इस बात का आभास देती कि उस पूरे पद्य का अर्थ समझ में आ गया है। राजा जयन्तचन्द्र भी विद्वान थे, इसलिए सब लोग उनकी ओर देखने लगे, परन्तु उन्हें भी कुछ समझ में नहीं आया था, इसलिए राजा के साथ सब लोग राजपण्डितजी की ओर निहारने लगे। उनका चेहरा लटका हुआ था।

आखिर राजा ने अनुरोध किया - श्री हर्षजी ! कृपया अपने प्रशस्तिपद्य का अर्थ आप ही विस्तार से प्रकट कर दीजिएगा।'

श्री हर्ष ने कहा- 'गोविन्द (राजा के पिता का नाम भी गोविन्द था और कृष्ण का भी) के पुत्र होने के कारण और शारीरिक सुन्दरता के कारण इस राजा को कोई कामदेव न समझ ले, क्योंकि कामदेव तो जगत् पर विजय पाने के लिए स्त्रियों को अस्त्र बनाते हैं, परन्तु ये राजा अस्त्री (अस्त्रधारी शत्रु योद्धा) जनों को स्त्री (भीरू) बनाते हैं। रणक्षेत्र में इनकी गर्जना सुनकर सभी शत्रु योद्धा स्त्रियों की तरह थर-थर काँपने लगते हैं। इस प्रकार राजाजी के शारीरिक सौन्दर्य का और शूरत्व का इस पद्य में प्रशंसात्मक वर्णन किया गया है।

(क्रमशः)

लेखांक - 70

प्रवचनकार

गणधरवाद

(स्व. मनीषी लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.)

व्यक्त एवं उनसे पूर्व गए हुए विद्वानों के भी दीक्षित होने का समाचार सुनकर अग्रगणनीय वेदज्ञ पंडित सुधर्मा ने विचार किया कि मैं भी सर्वज्ञ महावीर स्वामी के निकट पहुँचकर नमस्कार करूँ, उनकी पर्युपासना सेवा करूँ और स्व संशय का समाधान प्राप्त कर निःसंशयमना हो जाऊँ।

संशय का आधार

ऐसा संकल्प करके सुधर्मा ने शिष्य समुदाय सहित समवसरण की ओर प्रयाण किया और जैसे ही वे महाप्रभु महावीर के निकट पहुँचे कि उन्हें भी सर्वज्ञ- सर्वदर्शी महावीर ने पूर्ववत् नाम एवं गोत्र से संबोधित करते हुए कहा- सुधर्मा अग्निवैश्यायन ! आओ । इसीलिए तो शंकित मना हो कि वेद में परस्पर विपरीत विचारों के विवेचन को देखते हो। एक स्थल पर तो वेद में 'पुरुषों भूतः, सत् पुरुषत्व मेवाश्नुते, पशवः पशुत्वम्' कहा गया है और दूसरे प्रसंग में कहा है 'श्रृगालो वै एवं जायते यः स्त्पुरीषो दह्यते।' जिससे तुम्हें संशय है कि जीव जैसा इस भव में है, वैसा ही पर

भव में भी होता है अथवा नहीं ? क्योंकि प्रथम वाक्य का तात्पर्य तुम यह समझते हो कि भवान्तर में भी जीव सदृश ही रहता है और दूसरे वाक्य का यह कि भवान्तर में वैसा दृश्य संभव है। उक्त वेद वाक्यों में परस्पर विरोध परिलक्षित होने से तुम्हें संशय है। किन्तु तुम्हें संशय करना नहीं चाहिये, क्योंकि उन वाक्यों का तुम जो अर्थ समझते हो, वस्तुतः उनका वह अर्थ नहीं है। मैं उनका यथार्थ अर्थ बताता हूँ, जिससे फिर संशय नहीं रहेगा और तुम निःशंक होकर सत्यार्थ को समझ सकोगे।

तुम्हारे संशय की आधार भूमि है- भ्रान्त धारणा । अतः सर्व प्रथम तुम्हारे भ्रम का निवारण करना आवश्यक है। तुम ऐसा समझते हो कि कारण जैसा ही कार्य होता है। जैसे यव (जौ) बीज सदृश ही यवांकुर होता है। इसीलिए तुम यह मानने की ओर उन्मुख आकर्षित होते हो कि पर भव में भी जीव इस भव जैसा ही होता है। लेकिन तुम्हारा यह दृष्टिकोण अयुक्त है।

संशय निराकरण : कारण से कार्य विलक्षण है

सुधर्मा- आर्य आपने मेरे मन की बात तो यथातथ्य रूप में अभिव्यक्त कर दी है, किन्तु यह बतलाइए कि वैसा मानना अयुक्त क्यों है, किसलिए है ?

महावीर- आयुष्मन् ! कारण सदृश ही कार्य हो, ऐसा एकान्तिक नियम नहीं है। क्योंकि यद्यपि श्रृंग से भी शर नामक वनस्पति उत्पन्न होती है, किन्तु उस पर यदि सर्षप (सरसों) का लेप कर दिया जाये, तो फिर उससे अमुक प्रकार की घास की ही उत्पत्ति होती है तथा गाय एवं बकरी के बाल से दूर्वा- दूब होती है। इस तरह नाना प्रकार के द्रव्यों के संयोग से विलक्षण वनस्पतियों की उत्पत्ति का वर्णन वृक्षायुर्वेद में है। जिससे यह सिद्ध होता है कि यह कोई नियम नहीं, जो कारणानुरूप ही कार्य हो। कारण से विलक्षण भी कार्य हो सकता है। तथा योनिप्राभृत में जहाँ योनि

का वर्णन है, उसके आधार से भी सिद्ध होता है कि विविध द्रव्यों के सम्मिश्रण से सर्व सिंहादि प्राणियों की और सुवर्ण तथा मणि की उत्पत्ति होती है। इससे भी यही मानना चाहिये कि कारण से विलक्षण कार्य उत्पन्न हो सकता है। अतः कारणानुरूप ही कार्य होना चाहिये, ऐसा कोई एकान्त नियम निर्धारित नहीं किया जा सकता।

दूसरी बात यह है कि भले ही तुम कारणानुरूप कार्य मानो तो भी भवान्तर में विचित्रता संभव है। याने कारणानुरूप कार्य मानने पर भी मनुष्य मर कर मनुष्य ही होता है, ऐसा निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

सुधर्मा- वह कैसे ?

महावीर- चाहे तुम बीच के अर्थात् कारण के अनुरूप ही अंकुर अर्थात् कार्य का जन्म में जाति कुल, बल, ऐश्वर्य रूप आदि विचित्र परिणामों की अपेक्षा जीव में वैचित्र्य मानना ही चाहिये। क्योंकि भवांकुर का बीज मनुष्य नहीं किन्तु उसका कर्म है और वह विचित्र है। इसलिए पर भव में मनुष्य विचित्र हो, तो इसमें क्या विशेषता की नवीनता है? अर्थात् कुछ भी विशेषता नहीं है। कारण विचित्र हो, तो कार्य विचित्र होता ही है। (क्रमशः)

■■■

प्रेरक प्रसंग

अपनापन

जब तक पिता का साया था, दोनों भाइयों में आपस में अच्छा प्रेम-भाव था। पिता के स्वर्गवासी होने पर लोगों के बहकावे में व पत्नी की शह पर छोटे भाई ने बड़े भाई से झगड़ा कर लिया और जमीन-जायदाद बांट कर दोनों अलग रहने लगे। दोनों की बोलचाल भी आपस में बंद हो गई। एक दिन गांव के मन्दिर में रात्रि जागरण था। दोनों भाई भी वहां गये। जागरण शुरू होने वाला था कि वर्षा आ गई, अतः लोगों का ध्यान बाहर पड़ी जूतियों के भीगने की ओर चला गया। सब अपनी जूतियां बरामदे में रखने लगे। बड़ा भाई भी उठकर गया। उसके पहले छोटे भाई की जूतियां बरामदे में रखीं और फिर अपनी रखी। छोटा भाई यह सब देख रहा था। उसकी आँखों में आंसू आ गये। उसने उसी समय बड़े भाई से क्षमा मांगी। **शिक्षा- अपना-अपना ही होता है।**

तीर्थंकर श्री भगवान शान्तिनाथ

(जैन जसराज देवड़ा, धोखा)

जैन शासन के पन्द्रहवें तीर्थंकर भगवान धर्मनाथ का शासन लगभग तीन सागर तक चला, उसके अन्त भाग में पाव पल्य (असंख्यात वर्ष) तक धर्म का विच्छेद हो गया था, तत्पश्चात् इस भरत क्षेत्र की हस्तिनापुरी नगरी के कुरुवंश के महाराजा विश्वसेन व उनकी महारानी ऐरादेवी (अचिरा देवी) की रत्नकुक्षि से सोलहवें तीर्थंकर भगवान शान्तिनाथ का जन्म हुआ। उत्तम दान के लिए हस्तिनापुर नगरी भगवान ऋषभदेव के शासनकाल से जगप्रसिद्ध है। शान्ति प्रभु के अवतरण से तीनों लोकों के अन्तर में 'शान्ति' अवतरित हुई। स्वर्ग के दिव्य वाद्य एक साथ बजने लगे और दिव्य ऐरावत हाथी पर बैठकर इन्द्र महाराजा बाल प्रभु का जन्मोत्सव मनाने देवों के साथ ठाठ-बाट सहित हस्तिनापुर आ पहुँचे। प्रभु को दिव्य हाथी पर विराजमान कर महान शोभा यात्रा सहित इन्द्र मेरू पर्वत पर ले गया और वहाँ अतिशय भक्तिपूर्वक अभिषेक किया। इन्द्र महाराजा ने नृत्य करती अप्सराओं मय अपूर्व प्रभु भक्ति सात प्रकार की सेनाओं, करोड़ों वाद्ययन्त्रों, अरबों हाथी, घोड़ों रथादि के साथ की। शान्ति प्रभु के सान्निध्य में शान्ति का वह एक चमत्कार था। धन्य है जिन महिमा। शान्तिनाथ का अवतार सर्वजीवों को शान्ति का कारण हुआ। वे जिस राजभवन में विराजते थे, उस नंदावर्त भवन की शोभा अद्भुत थी। उस भवन के प्रांगण में प्रतिदिन प्रातः काल हजारों लाखों की भीड़ प्रभु के दर्शन को उमड़ती थी, एक साक्षात जिन मन्दिर था। बालक शान्तिनाथ के जन्म के कुछ समय पश्चात् महाराजा विश्वसेन की दूसरी रानी ने भी एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया जो आगे चलकर चक्रायुध कुमार के नाम से अपने भाई के समान आत्मतत्व ज्ञाता व अचिन्त्य महिमावान बने। शान्तिनाथ और चक्रायुध, तीर्थंकर और गणधर दोनों राजकुमार युवा हुए व राजकार्य संभालने लगे। पिताश्री ने उत्तम गुणवंती कन्याओं के साथ उनके विवाह किये। एक लाख वर्ष के आयु

वाले राजकुमार शान्तिनाथ जब पच्चीस हजार वर्ष के हुए, तब महाराजा विश्वसेन ने उनका राज्याभिषेक करके उन्हें हस्तिनापुरी का साम्राज्य सौंप दिया और चक्रायुध कुमार को युवराज पद दिया। दूसरे पच्चीस हजार वर्ष तक महाराजा शान्तिनाथ राज्य का संचालन करते रहे तब अचानक उन्हें शास्त्र भंडार से चक्रवर्ती पद का सूचक सुदर्शन चक्र प्रकट हुआ। इस प्रकार कुल चौदह रत्न प्राप्त हुए। वे दूसरी बार चक्रवर्ती हुए व अटूट नवनिधी व वैभव के स्वामी बने।

महाराजा शान्तिनाथ के जीवन में जन्म दिवस के शुभ दिन दर्पण में मुँह देखते-देखते वे वैराग्य को प्राप्त हुए। चिन्तन की धारा बही, क्षण भर में ऐसा परिवर्तन शरीर की ऐसी क्षणभंगुरता अरे मेरे जीवन के पचहत्तर हजार वर्ष बीत गये, मुझे अभी केवल ज्ञान की साधना करना है ? ऐसे चिन्तनपूर्वक चक्री दीक्षा लेने को तैयार हुए। दीक्षा लेने के पश्चात् वैरागी शान्तिनाथ भगवान ने वनगमन किया, करोड़ों देवों व इन्द्र महाराजा ने वैराग्य की महिमा करते हुए कहा- छह खण्ड का वैभव छोड़कर धर्मचक्री मोक्ष की साधना करने जा रहे हैं तो वह मोक्ष सुख कितना महान होगा।

प्रभु की शिविका सहस्राम्रवन आई भगवान पालकी से उतरकर एक शुद्धशिला पर उत्तराभिमुख बैठकर वस्त्र आभूषणों को निकालकर ॐ नमः सिद्धेभ्यः का ध्यान कर लोच किया ध्यान में स्थिर होते ही उन परम श्रवण को साँतवा गुणस्थान तथा चौथा ज्ञान प्रकट हुआ। सोलहवर्ष तक मौन रूप से भगवान ने आत्म साधना की व शुक्ल ध्यान चक्र चलाकर शेष तीनों 'घातीकर्मरूपी' अरि को एक साथ हन कर प्रभु अरिहन्त हुए।

भगवान शान्तिनाथ का जीवन वास्तव में अद्भुत है, उनकी उपासना ही मोक्ष का पथ है। प्रभु शान्तिनाथ के साथ उनके भ्राता चक्रायुध गणधर भी केवल ज्ञान प्रकट करके मोक्ष को प्राप्त हुए। प्रभु के मोक्ष गमन से सम्मेदशिखर की जो कूट पावन हुई, उसका नाम कुन्दप्रभा कूट है।

कितना सुन्दर संयोग बगवान शान्तिनाथ का जन्म, दीक्षा एवं मोक्ष इन तीन कल्याणक का एक ही मंगल दिवस है। वैसे तो विश्व में शान्तिनाथ प्रभु के कई जिनालय हैं- हमारे शहर हैदराबाद त्रयनगर में श्री शान्तिनाथ जिनालय जिनेश्वर धाम काचीगुडा व श्री कुशलसूरी दादावाड़ी तारला गड्डा, कारवान में श्री शान्तिनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर, अपनी भव्यता के लिए विख्यात हैं, प्रतिवर्ष भगवान के तीनों कल्याणक अत्यन्त हर्षोल्लास से मनाये जाते है। आमजन सदैव एक ही प्रार्थना करता हैं- शान्तिनाथ प्रभु शान्ति करो, सर्व विघ्न को दूर करो ।

■■■

चिन्तन का चित्रांकण

एक की ही शरण

गच्छाधिपति जैनाचार्य
श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा. की डायरी के पृष्ठ

दिनांक 21.01.2017

मन का मेला व्यक्ति विश्वासघाती, धोखा दे सकता है। जो कभी किसी का हुआ ही नहीं और होता भी नहीं है। भाई-भाई के साथ, माँ-बाप के साथ, मित्र - सम्बन्धी के साथ भी धोखा दे सकता है। ऐसे मन मेले व्यक्ति का कभी विश्वास ही नहीं करना चाहिए। यदि पता चल भी जाय कि यह मैला है तो बहुत सावधानी से काम लेकर उससे दूर हो जाना चाहिए।

दिनांक 22.01.2017

अविचल आराधक, अक्षय सुख को पाता है। अविचल रूपेण भक्ति आत्म शक्ति को पाता है। अविचल सुख अर्हम् पद को पाकर जीवन का अमृतानन्द पाता है। अविचल पथिक निरंजन निराकार अनुपम योग को पाकर शाश्वत स्थान को पाता है। यही सच्चा जीवन का सुख है। ऐसा अविचल जीवन ही सच्चा जीवन है।

दिनांक 23.01.2017

कर्मों के साथ अडिग रहकर पूरा सामना करके जीत जाय उसे कहते हैं जीत की यशोगाथा। सारा संसार जाने माने और गाये वह जीतयशा जीव कहाता है, जब तक कर्मों से जीव जकड़ा रहता है, तब तक जीव की यशोगाथा गाई नहीं जाती। कर्मों से जीतने के लिये गुरु शरण बिना ज्ञान नहीं आयेगा।

दिनांक 24.01.2017

पथिक पथ कैसे भूल गया ? जब जीवन मार्ग का ज्ञान नहीं हुआ और उन्मार्ग पर बिना सोचे- समझे गति करने लगा तब उन्मार्ग है। असत् प्रवृत्ति, अनाचार एवं अत्याचार का पथगामी बन जाता है। तब आत्मश्रेय का सच्चा पथ भूल जाता है। यदि सद्बुद्धि का उपयोग जीव को नहीं रहा तो पथ भूलता ही है। सद्बुद्धि विकसित करे।

दिनांक 25.01.2017

राहगीर चल रहा है, चलते-चलते इतना काल व्यतीत हो गया फिर भी चलना बन्द नहीं हुआ। दौड़ लगी है, होड़ लगी है फिर भी मंजिल नहीं आई। राहगीर का

लक्ष्य क्या ? बिना लक्ष्य चल रहा, बिना लक्ष्य दौड़ लगाये जा रहा है, बस इसी कारण से असंख्य भव कर लिये और न मालूम कितने भव और करना बाकी है ? ज्ञानी गुरु भगवन्त अपने लिये जीवन के मार्ग दर्शक हैं, अन्तरात्मा से गुरु आज्ञा मानकर सन्मार्ग के पथिक बनकर लक्ष्य बनाकर चलें अनन्त भवों की भ्रमणा का अन्त होगा।

दिनांक 26.01.2017

समय जन्म का, पुण्यवान भाग्यवंत का, हजारों लाखों जन मानस मुक्त कंठ से गुणगान करते हैं। गुणवान के गुणों का वर्णन होता है, व्यक्ति गुणों से पूजित होता है। शुभ कार्यों से पुजाया जाता है। तन, मन, वचन तीनों का सदुपयोग जिसने किया और जो कर रहे हैं वे ही पुणायनुबन्धी पुण्य का खजाना लेकर आये और जन जीवन के हितावह में सम्पूर्ण समय प्रसरित करते हैं। इसीलिये सारा संसार उन पुण्यवन्त का गुणवान करता है।

दिनांक 27.01.2017

चक्कर आते हैं, मानसिक कमजोरी, शुगर की घट-बढ़त, टेन्शन, सिर पर बोझ ज्यादा होने से आते हैं। सर्व चिन्ता छोड़कर स्व का ध्यान रखने वाला टेंशन मुक्त होता है, उसे चक्कर नहीं आता। गुरुवाणी को श्रवण नहीं करना है बल्कि जीवन में उतारना है, जिसने जीवन में उतार लिया वही मुक्त आत्मा सर्व टेंशन एवं चक्कर से दूर रहता है।

दिनांक 28.01.2017

एक का अंत हो जाय और एक ही का शरण स्वीकार कर, उसी के अनुसार जीवन यापन करने वाला निश्चय से संसार सागर को सहज में पारकर सकता है। एक है ईर्ष्या जिसे जड़मूल से जीवन के हर श्वांस से निष्कासन करने वाला और एक वीतराग मार्गानुसारी जीवन बनाने वाला आत्मोन्नति निश्चय से कर सकता है। (क्रमशः) ■■■

रजत रश्मियाँ

* **2100 - 00/-** त्रिस्तुतिक श्रीसंघ जावरा के श्री रामचन्द्रजी, श्री राधेश्यामजी सुराणा (श्री संघ के कोषाध्यक्ष लगातार 20 वर्ष से) के पूज्य पिताश्री एवं पुण्य सम्राट के विशेष कृपा पात्र राजेशजी (ज्योतिष एवं वास्तु विशेषज्ञ, मंदसौर), पुखराजजी सुराणा के दादाजी वरिष्ठ धर्म निष्ठ सुश्रावक श्री बाबुलालजी सुराणा की स्मृति में शाश्वत धर्म को सप्रेम भेंट। धन्यवाद।

– व्यवस्थापक

बेहतर शाकाहारी भोजन

(जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा.)

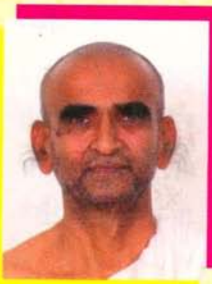

जीवित रहने के लिये भोजन मनुष्य के लिए अनिवार्य है। मनुष्य दैनिक भोजन करेगा तो ही जीवित रह सकता है। आदिकाल में मनुष्य वनों, गुफाओं, पर्वतों आदि पर रहता था तथा कंदमूल वगैरह खाकर अपना गुजारा करता था, फिर वह धीरे-धीरे कहते हैं कि जंगली जानवरों को मारने लगा तथा उनको मारकर खाने लगा। धीरे-धीरे जिस तरह सभ्यता का विकास होने लगा वैसे-वैसे मनुष्य के खानपान तथा रहनसहन के तरीकों में भी परिवर्तन होने लगा।

मनुष्य खेती तथा बागबानी करके अनाज, फल, सब्जियाँ आदि अपनी पसंद तथा जरूरत की चीजें पैदा करके पेट भरने लगा। भारत ऋषियों, संतों, महंतों आदि का देश है जहाँ पर हिन्दू धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म आदि में शाकाहारी भोजन खाने पर ही अधिक बल दिया जाता है। परन्तु यह कहने में भी कोई संकोच नहीं है कि कुछ लोग रोज तो नहीं पर कभी-कभी मांसाहारी भोजन का तथाकथित आनंद उठाते हैं, लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि शाकाहारी भोजन मांसाहारी भोजन से हर लिहाज से अच्छा है। शाकाहारी भोजन जैसे गेहूँ, चावल, फल आदि पैदा करने में किसी प्रकार की हिंसा की जरूरत नहीं होती जबकि मांसाहारी भोजन करते समय पशु-पक्षी आदि को मौत के घाट उतारना अनिवार्य है। किसी जीव की हत्या करके पेट भरा जाये, इसमें कौन-सी इंन्सानियत है।

शाकाहारी भोजन पचाने में कोई कठिनाई नहीं होती है, जबकि मांसाहारी भोजन पचाने में काफी कठिनाई होती है। मांस, मछली के छोटे-छोटे टुकड़े आमतौर पर मसूड़ों में रुक जाते हैं, जिससे दांत जल्दी खराब हो जाते हैं व कोल्स्ट्रोल की मात्रा बढ़ जाती है, जिससे हृदय रोग होने का खतरा बहुत अधिक बढ़ जाता है। शरीर में अनेक प्रकारों की बिमारियाँ पैदा होने की सम्भावना बहुत अधिक बढ़ जाती हैं।

जो लोग मांसाहारी भोजन के साथ शराब का सेवन करते हैं उनके लिये तो मांसाहारी भोजन और भी खतरनाक होता है, उन्हें ब्लड प्रेशर, उत्तेजना, टेंशन आदि अनेक रोग लग जाते हैं।

दूसरी ओर शाकाहारी भोजन में कई प्रकार के विटामिन, लौह तत्व आदि होते हैं जो शरीर में शक्ति, स्फूर्ति तथा ऊर्जा प्रदान करता है। मांसाहारी भोजन से शरीर के नाश के अलावा और कुछ भी प्राप्त नहीं होता है।

शाकाहारी भोजन जैसे गेहूँ, चावल, फल, सब्जियाँ, दूध आदि को पैदा करने की लागत बहुत कम होती है तथा विषाक्त मांसाहारी भोजन जैसे पशु, पक्षी, मछलियाँ आदि पैदा करना बहुत महंगा पड़ता है। भारत जैसे देश में शाकाहारी भोजन हर दृष्टि से भी बेहतर है। शाकाहारी भोजन सात्विक है जो साधु संतों, ऋषियों, मुनियों आदि के द्वारा प्रयोग किया जाता है जो कि धर्म, अहिंसा, प्रेम, प्यार, सहनशीलता आदि के संदेश होते हैं। जबकि मांसाहारी भोजन तो क्रोध, हिंसा, असंतोष, घृणा आदि को बढ़ावा देता है। श्रीराम, श्रीकृष्ण, महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, महात्मा गांधी आदि शाकाहारी महापुरुष थे। जिन्होंने विश्व में शांति, अंहिसा , प्रेम आदि का संदेश दिया।

अगर संसार की विभिन्न आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याओं को हल किया जाता है तो शाकाहारी भोजन को आधार बनाकर ही किया जा सकता है अन्यथा नहीं।

■■■

ओमजी का देहावसान

राणापुर । पुण्य सम्राट श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी मा.सा. के अनन्य भक्त श्री ओमप्रकाश सालेचा का लम्बी बीमारी के कारण निधन हो गया। पंकज, अनिल के पिताजी, जय प्रकाश के बड़े भाई एवं आजे स 50 वर्ष पूर्व मुनिराज श्री जयंतविजय 'मधुकर' की निश्रा में लक्षमनी तीर्थ के पैदल संघ के लाभार्थी कांतिलालजी सालेचा के पुत्र ओमप्रकाश सालेचा अत्यंत धार्मिक एवं सरल व्यक्तित्व थे। जब-जब नगर में आचार्यश्री एवं मुनिराजों का प्रवेश हुआ। बाई ओम ने अपनी और से लाभ लेने में कोताही नहीं रखी। श्री ओमप्रकाश के निधन से समाज और परिषद ने एक निष्ठावान सदस्य को दिया है जिसकी कमी राणापुर को खलती रहेगी। होटल व्यवसाय के साथ पत्रकारिता में लंबे अरसे से रुचि रखने वाले ओम भारतीय जनता पार्टी के सक्रिय सदस्य थे। श्री सालेचा के निधन पर दिलीप सकलेचा, चन्द्रसेन कटारिया, सुरेश समीर, रमेश नाहर, सोहनलाल सेठ, सज्जनलाल कटारिया, अनिल सेठ, विनय जैन, पत्रकार डॉ.बी.डी. काबरा, निर्मल पांड्या, गणेश पोरवाल, कमलेश नाहर, ललित सालेचा आदि ने भावांजलि अर्पित की।

– शाश्वत धर्म की ओर से श्रद्धाजंलि

महाराजा श्रेणिक

(मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा.)

अभयकुमार श्रेणिक से अनुमति प्राप्त करके अनेक सेवकों के साथ वैशाली की ओर चल पड़ा। एक वणिक के रूप में सजकर वह वैशाली आया। महाराज चेटक के राजमहल के ठीक सामने ही एक बड़ा सा भवन था अभय ने उसे बहुत अधिक धन देकर वह भवन किराये पर ले लिया उस भवन में प्रसाधन-सामग्री की एक बड़ी दुकान उसने लगाई। देश-विदेश की सुन्दर-सुन्दर वस्तुएँ, कलाकृतियाँ और स्त्री के लिए उपयोगी सभी सामान लाकर उस दुकान को भव्य रूप से सजा दिया। सजावट इस प्रकार की कि हर कोई को, दुकान देखते ही सामान लेने का मन हो जाता है। कुछ ही दिनों में पूरे वैशाली के प्रत्येक घर में यह चर्चा हो रही थी कि मगध का एक बहुत बड़ा व्यापारी देश-विदेश की सुन्दर-सुन्दर वस्तुएँ, कलाकृतियाँ लेकर आया है, और बिना अधिक मुनाफा लिए सस्ते भावों में बेच रहा है तथा व्यापारी का व्यवहार भी बड़ा ही मधुर है।

इस प्रकार अभयकुमार की यह चर्चा धीरे-धीरे महाराज चेटक के महल तक पहुंची। महलों की दासियाँ आने लगीं। वह अभय के कुशल व्यवहार से बहुत आकर्षित हुई, तथा जब भी उन्हें किसी वस्तु की जरूरत होती वह सीधी दौड़कर वहीं आतीं और ले जातीं।

एक दिन अभयकुमार ने अपनी दुकान के ठीक मध्य में महाराज श्रेणिक का एक भव्य सुन्दर चित्र टाँग दिया। दासियों ने जब वह चित्र देखा तो उन्होंने अभय से पूछा- 'सेठजी ! यह किसी देवता का चित्र है।' अभय ने हँसकर कहा- देवता क्यों ? क्या मनुष्य ऐसा सुन्दर नहीं हो सकता ? दासियों ने कहा नहीं ! यह तो कोई अलौकिक सौन्दर्य है। इसका मुख मण्डल कितना भव्य है। कितनी सुन्दर लावण्य कांति छलक रही है। इतना सुन्दर आकर्षण है, ऐसा तो हमने आज तक नहीं देखा ! यह तो किसी देवता का चित्र हैं ?'

अभय ने कहा यह देवताओं के प्रिय, यशस्वी, वर्चस्वी, महानवीर, बुद्धिमान, मगध के सम्राट महाराजा श्रेणिक हैं। हमारे स्वामी हैं। ऐसा नीतिमान्, धार्मिक, बुद्धिनिधान पुरुष आज भरतक्षेत्र में मिलना मुश्किल है। अभय के मुख से महाराजा श्रेणिक की कीर्ति, रूप-शोभा का अद्वितीय वर्णन सुनकर दासियाँ मुग्ध हो गईं। उन्होंने महल में आकर सुज्येष्ठा और चेलणा से उस चित्र की बात कही- 'ऐसा भव्य मनोहर धार्मिक कांतिवीर पुरुष हमने आज तक नहीं देखा, उसकी आँखों में जैसे अमृत बरस रहा हैं। उसकी भुजाएँ तो शौर्य वीर की तरह है ऐसा शूरवीर, कांतियुक्त वीर एवं सौन्दर्य का ऐसा दुर्लभ संगम शायद ही कहीं देखने को मिले।'

श्रेणिक के सुन्दर चित्र का वर्णन सुनकर सुज्येष्ठा का हृदय भी चंचल हो गया, उसने दासियों से कहा अगर ऐसा सुन्दर चित्र है तो लाओ, हम भी उसे देखें।

(क्रमशः) ■■■

चंदन का तिलक

* जिनमंदिरजी में प्रवेश करते समय चन्दन का तिलक लगाया जाता है। * पुरुष लंबे आकार का तिलक लगाते है तथा स्त्रियां गोल आकार का तिलक लगाती है। * जहाँ तक संभव हो तिलक के लिए भी चन्दन स्वयं ही घिसना चाहिए। * तिलक अर्धपद्मासन मुद्रा में लगाना चाहिए क्योंकि विभिन्न मुद्राओं से भिन्न-भिन्न ऊर्जाओं का संचार होता है।* तिलक लगाने का अर्थ यही है की जिनमंदिर में प्रवेश करने से पूर्व हम तीर्थंकर परमात्मा की आज्ञा को शिरोधार्य करते हैं। * चन्दन का स्वभाव शीतल है। तिलक लगाने से मस्तक द्वारा सम्पूर्ण शरीर में शीतलता का संचार होता है। * लंबे तिलक की परिकल्पना उत्तमता के आधार से बादार के आकार से की गयी है, मंदिर के शिखर की भांति की गयी है तथा बाण की भांति की गयी है जिसका एकमात्र लक्ष्य उर्धव गति-मोक्ष की प्राप्ति है। * शाम को तिलक हटा देने की परिपाटी है क्योंकि चंदन से सर्प आकर्षित होते हैं तथा संध्या के समय किसी की मृत्यु हो उसमें भी तिलक लगाकर जाना अविनय माना गया है। * पहले के समय में तिलक सम्यक श्रावकत्व का चिन्ह था। अजैन व्यक्ति भी परिचित थे की जिसने चन्दन का तिलक लगाया है, वह व्यक्ति ईमानदार जैन श्रावक है। * प्राण जाए, किन्तु तिलक नहीं मिटने दूंगा, इसी समर्पण भाव से वर्षों पूर्व कपर्दी मंत्री ने राजसभा में अपने प्राणों की आहूति दे डाली थी।

प्रश्नोत्तरी

स्मरणवर्जन याने क्या ?

उत्तरदाता
स्व. जैनाचार्य श्रीमद् विजय
जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रश्नकर्ता
जैनाचार्य श्रीमद् विजय
नित्यसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्र. साधु किसे कहते हैं ?

उ. पंच महाव्रतों को पालने वाले एवं भगवान् की आज्ञानुसार चलने वालों को साधु मुनिराज कहते हैं।

प्र. अरिहन्त भगवान् के कितने गुण होते हैं ?

उ. अरिहन्त भगवान् के बारह गुण होते है, वे ये हैं 1. केवल ज्ञान, 2. केवल दर्शन 3. क्षायिक समकित 4. यथाख्याल चरित्र 5. अवेदित्व 6. अतीन्द्रियत्व 7. अनन्त सुख 8. दान लब्धि 9. लाभ लब्धि 10. आत्मिक भोगलब्धि 11. आत्मिक उपभोगलब्धि 12. वीर्य लब्धि।

प्र. दर्शन निषेध किसे कहते हैं ?

उ. राग, प्रेम भरी दृष्टि से अंग प्रत्यंगों को न देखना।

प्र. श्रवण निषेध किसे कहते हैं ?

उ. स्त्री पुरुषों के सांयोगिक विकारोत्पादक शब्दों का श्रवण नहीं करना। दीवाल एवं पर्दा आदि के अनन्तर से भी जहाँ ऐसे शब्द सुनाई दें, वहाँ नहीं ठहरना।

प्र. स्मरणवर्जन किसे कहते हैं ?

उ. पूर्ण अवस्था में की हुई काम क्रीड़ा का स्मरण नहीं करना।

प्र. सरस आहार त्याग किसे कहते हैं ?

उ. विकार उत्पन्न करने वाले सरस भोजन का त्याग करना।

प्र. अति आहार निषेध किसे कहते हैं ?

उ. साधारण आहार भी मात्रा से अधिक न लेना। ■■■

सुख की प्राप्ति

(कुसुम जैन, संपादिका- 'णाणसायर')

जीवन क्या है ? जीवन एक यात्रा है । जीवन अनादि काल से,
चार गतियों की विभिन्न चौरासी लाख योनियों में भटक रहा है ।
जीवन के इस भ्रमण का मुख्य कारण मोह, राग, द्वेष का होना,
तथा 'स्व' और 'पर' का भेद-विज्ञान नहीं होना है ।

इस संसार में वस्तुतः स्व-आत्मा के अतिरिक्त,
तिल मात्र भी अपना नहीं है। भेद विज्ञान के द्वारा ही ।
ज्ञानीजन अपनी आत्म-सम्पदा को ग्रहण करते हैं और
राग-द्वेष आदि तथा पुद्गल पर पदार्थों को त्याग देते हैं ।

वस्तुतः प्रत्येक आत्मा में भगवान बनने की सामर्थ्य है।
मगर हम अपनी सामर्थ्य को नहीं पहचान पा रहे हैं, इसी कारण दुःखी हैं।

श्रीमद् राजचन्द्रजी की कितनी मार्मिक पंक्तियाँ हैं -
मैं कौन हूँ, आया कहाँ से और मेरा रूप क्या ?
सम्बन्ध दुःखमय कौन है, स्वीकृत करूँ परिहार क्या ?
इसका विचार विवेक पूर्वक, शान्त होकर कीजिए ।
तो सर्व आत्मिक ज्ञान के सिद्धान्त का रस पीजिए।

मेरा धर्म अर्थात् मेरा मूल स्वभाव क्या है ? आत्मा का
मूल स्वभाव ज्ञानानन्द-ज्ञाता-दृष्य है। हमें समता परिणाम
ही धारण करने होंगे। कषाय आत्मा का स्वभाव ही नहीं है ।

हमें कोई उद्वेलित भी करे तो भी हमें अपने मूल शांत स्वभाव में ही लौटना चाहिए।

वस्तुतः पूर्व में किए सत्- कर्मों की वजह से ही मनुष्य
पर्याय मिलती है। हम परम सौभाग्यशाली जीव हैं।
मानव जीवन की सार्थकता इसी में ही है कि हम अपने
पुरुषार्थ द्वारा विवेक को जागृत करें । आचरण में अहिंसा
चिन्तन में अनेकान्त, वाणी में स्याद्वाद और समाज में
अपरिग्रहवाद ये चार सूत्र हैं, जीवन की सार्थकता के ।

आत्मा सुख स्वरूपी है। सुख बाहर से नहीं लाना पड़ता और
न ही संयोग से मिलता है। सुख-स्वरूपी आत्मा का
लक्ष्य करेंगे तो पर्याय में सुख की प्राप्ति होगी ही ।

छेद

एक लड़के को बहुत गुस्सा आता था। एक दिन उसके पिता ने उसे कीलों से भरा एक बैग दिया और कहा कि जब भी उसे गुस्सा आये, वह चारदीवारी में पीछे की तरफ एक कील जरुर ठोक दे । पहले दिन उस लड़के ने 37 कीलें दीवार में गाड़ दीं।

अगले हफ्ते तक वह अपने गुस्से पर काबू करना सीख चुका था। गड़ने वाली कीलों का कम्र कम हो गया। उसने दीवार में गड़ी कीलों को देखकर सोचा, अपने गुस्से को रोकने का यह सबसे आसान तरीका है। धीरे-धीरे उस लड़के ने अपने गुस्से पर पूरी तक काबू पा लिया। जब उसने अपने पिता को यह बताया तो उन्होंने उसे सलाह दी कि अब वह हर दिन दीवार से एक कील बाहर निकाले।

जब उसने सारी कीलें निकाल लीं तो वह अपने पिता के पास पहुंचा। उन्होंने लड़के का हाथ पकड़ा और उसे उस दीवार के पास ले गये और बोले तुमने बहुत अच्छा काम किया है बेटे । लेकिन उस दीवार के छेदों की तरफ देखो । अब यह दीवार पहले जैसी कभी नहीं हो सकती। इसी तरह से जब तुम गुस्से में कुछ कहते हो तो घाव भी किसी के हृदय में इसी तरह लगता है। तुम कितनी बार भी माफी मांग लो, निशान हमेशा रहता है। गुस्से में कही बात का कोई हर्जा नहीं होता, इसलिए गुस्से पर काबू रखिये ।

गतांक के आगे

धर्म का मूल क्या है ?

संशोधक– मुनि श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.

थोड़ी ही देर प्रतीक्षा के पश्चात् जितशत्रु आदि छहों राजा अपनी विशाल चतुरंगिनी सेना के साथ युद्ध सीमा पर पहुँचे, वहाँ महाराज कुम्भ की सेना भी युद्ध के लिए तैयार थी। उन छहों राजाओं ने आते ही छहों राज्यों की सम्मिलित सैन्य शक्ति के साथ महाराजा कुम्भ की सेना पर एक साथ आक्रमण कर दिया। छहों राज्यों की सम्मिलित विशाल सैन्य शक्ति के सामने महाराजा कुम्भ की सेना अधिक देर तक डटी नहीं रह सकी। जितशत्रु आदि छहों राजाओं तथा उनकी पराक्रमी सेना ने मिलकर राजा कुम्भ के अनेक योद्धाओं को मौत के घाट उतार दिया। बहुत से योद्धा घायल अवस्था में हो गये धीरे-धीरे महाराज कुम्भ की सेना की संख्या निरंतर कम होती जा रही थी, जितशत्रु आदि छहों राजाओं ने मिलकर महाराजा कुम्भ के रथ का छत्र, पताका, राजचिन्हों आदि को पृथ्वी पर गिरा दिया। छहों राजाओं ने मिलकर महाराज कुम्भ को घेर लिया इस तरह महाराज कुम्भ के प्राण संकट में पड़ गये। छहों राजाओं की सैन्य शक्ति ने मिलकर महाराज कुम्भ को छिन्न-भिन्न कर दिया। इस प्रकार अपनी सेना को हारते देखकर महाराज कुम्भ निरुत्साही हो गये। उन्होंने अच्छी तरह जान लिया कि मेरी पराजय हो गई है। अतः उनने शीघ्र ही त्वरित वेग से मिथिला की ओर प्रस्थान किया तथा मिथिला में प्रवेश करते ही सभी प्रवेश द्वारों को तत्काल बंद करवाये, शत्रु के आवागमन के सभी मार्गों को अवरूद्ध करके वे मिथिला नगर की रक्षा का प्रबन्ध करने में व्यस्त हो गये। महाराज कुम्भ के मिथिला में प्रवेश कर लेने के पश्चात् जितशत्रु आदि छहों राजाओं ने भी अपनी सेना के साथ मिथिला की

ओर बढ़े तथा मिथिला पहुँचते ही उन्होंने पूरी मिथिला नगरी को चारों ओर घेर लिया। छः राज्यों की सम्मिलित विशाल सेना से उन्होंने मिथिला को इस तरह घेरा कि महाराज कुम्भ मित्र राजाओं की सहायता प्राप्त करने के लिये दूत भेजना तो दूर कोई एक व्यक्ति भी नगर के अंदर तथा नगर से बाहर नहीं जा सकता था।

इस प्रकार कड़े घेरे से अवरुद्ध देख महाराज कुम्भ अपने महल के मध्य में उपस्थान शाला में राजसिंहासन पर बैठकर, उन छहों शत्रु-राजाओं को परास्त करने की टोह में लग गये, उन्होंने अपने मंत्रियों के साथ बैठकर बहुत विचार विमर्श किया परन्तु शत्रु को परास्त करने का एक भी उपाय उनके सामने नहीं आया। राजा कुम्भ बहुत परेशान हो गये, वह चिन्तामग्न हो गये, उन्हें शत्रु से बचने का कोई भी रास्ता नहीं मिल रहा था, महाराजा कुम्भ बड़े हतोत्साहित हुए और वह अन्तर ध्यान करने लगे। क्रमशः

आत्म प्रेरणा

चाबी वाली घड़ी को निरन्तर गतिशील रखने के लिये चाबी भरने की जरूरत होती है। चाबी भरना भूले कि घड़ी रुकी। ठीक ऐसा ही जीवन है। इसमें प्रतिक्षण सत्प्रेरणा की चाबी भरनी होती है। प्रेरित करना भूले कि जीवन भार बना।

- एक पिता पुत्र को व्यापार में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है।
- एक अध्यापक छात्र को अध्ययन में छलांग लगाने की सीख देता है।
- एक गुरु शिष्य को आत्म-अनुभव करने के लिये दिशा निर्देश देता है। पर इन सभी के बीच स्वयं को स्वयं के द्वारा प्रेरित करने का समय कहाँ है ?
- दिमाग में चिन्ताओं के हजारों टन के भार को उठाकर आदमी पद, पैसा और प्रतिष्ठा की उधार मांगता है पर पूरे जीवन में संभवतः एक क्षण भी ऐसा नहीं आता, जब वह दो पल थमकर शान्त भाव से, मधुर पलों में अपने आपसे बात करता हो, अच्छाई को उत्प्रेरित करता हो, जिन्दगी को संजीदगी और स्वाद से जोड़ता हो। इसलिये दो पल रुको। बत्ती का ईशारा देखो। ट्रॉफिक चेक करो। रुके मन को गति, बिगड़े मनको मति और चंचल मन को धति दो।

  - गति जीवन को गतिशील रखेगी।
  - मति सही दिशा निर्देशन करेगी।
  - धृति असफलता में धीरज देगी।

शांतिलाल रामानी
(संयोजक)

प्रशमसेन विजयजी
म.सा.

विराट् व्यक्तित्व

(प्रस्तोता – मुनिराज श्री प्रशमसेनविजयजी म.)

गुरुदेवश्री की जन्म कुंडली

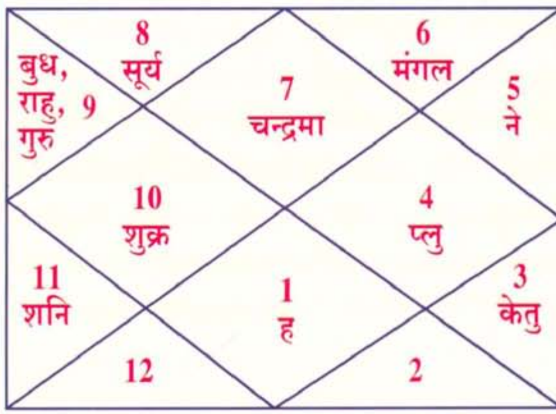

।। अथ जन्माड्गचक्रम ।।

प.पू. गच्छाधिपति आचार्य भगवंत का मधुर मुस्कान वाला शीतल, शान्त मुख मण्डल दर्शन करते ही मन को आनंदित करने वाला है। वंदन करने के लिए देश के कोने-कोने से एवं विदेश से समय-समय पर विभिन्न प्रसंगों एवं नियमित रूप से दर्शन करने के लिए श्रावकों की अपार भीड़ जुटती है। आपश्री का व्याख्यान अमृत वर्षा के समान लगता है। अवश्य ही इसके पीछे आचार्य भगवंत की अध्यात्म शक्ति का प्रभाव है। योग्य शिष्यरत्न, साधु-साध्वी वृन्द सहित आपश्री ने जहाँ-जहाँ वर्षा वास (चातुर्मास) किया है वहां श्रावक-श्राविकाओं एवं अन्य सभी समुदाय जाति के लोगों को व्याख्यान उपदेश देकर संस्कारों का बीजारोपण किया है।

फलस्वरूप अनेकों स्थान पर पूजा-अर्चना, तप , आराधना, उपासना के सफल आयोजन हुए है, एवं जिनालय निर्माण, जीर्णोद्धार, तीर्थ, धर्मशालाएँ, विहार

गुरुदेवश्री की दीक्षा कुंडली

।। दीक्षा समय का लग्नाड्मय।।

धाम गौशाला इत्यादि का निर्माण हुआ है और अनवरत सफल संचालन हो रहा है।

गच्छाधिपति आचार्य भगवंत के जीवन के कुछ महत्वपूर्ण प्रसंगों की ज्योतिषीय गणनानुसार ग्रह स्थिति, जिज्ञासु सज्जनों के पठन-मनन एवं विद्वद्जनों के संशोधन एवं जानकारी हेतु प्रस्तुत है।

श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ त्रिस्तुतिक जैन समुदाय के आचार्यश्री जयंतसेनसूरिजी 'मधुकर' की जन्मकुन्डली, दीक्षा कुंडली और आचार्य पद की कुंडली के ग्रहयोग देखने के बाद यह प्रकट होता है कि इस कुंडली के योग कोई साधारण मनुष्य के नहीं किन्तु महापुरुष योगपुरुष के ग्रहयोग हैं। जन्मकुंडली में ग्रहयोग तुला लग्न उदित हुआ है। लग्नेश शुक्र केन्द्र में सुखभुवन में मित्र राशिगत पड़ा है इस योग का फल ''गर्ग जातक में निम्नरूप से बताया है।

लग्नेशस्तुर्यगतो जनप्रिय जीवितं कुरुते ।
लब्धियुत बहुमित्रं गुरोर्बहुभक्तिभाजनं कुरुते ।।

इस योग के कारण जातक अति लोकप्रिय, दीर्घायु हर प्रकार की लब्धि व गुरुभक्ति परायण और सब शास्त्रों का ज्ञाता होता है।

वालाच शिल्पशीलाढयो विनीतो गीततत्पर ।
काव्य शास्त्र विनोदी च धार्मिकों लग्नेश भृगौ ।।

लग्नेश शुक्र मित्रक्षेत्री केन्द्र में होने से उत्तम सुंदर, मिष्ट मधुरवाणी कला शिल्पशास्त्रों के ज्ञाता, शीलवान, काव्यशास्त्र, धर्मशास्त्र ज्योतिषशास्त्र के ज्ञाता और समाज सुधारक

यशस्वी विजयी होता है आप की जन्मकुंडली और दीक्षाकुंडली का मालिक शुक्र है और जन्मकुंडली, दीक्षाकुंडली और आचार्य पदवी तीनों कुंडली में भार्गव शुक्र-शनि के घर में मकर राशि के केन्द्र त्रिकोण में पड़ा है। शुक्र तीनों कुंडली में रहने से सारे भारत में आपकी यशगाथा अविचल चलती रहेगी और महापुरुषों की सूचि में आपका नाम अमर रहेगा। आपका शिष्य समुदाय बहुत विशाल होगा।

पापकर्मी योग-आपकी जन्मकुण्डली में नेत्र द्वितीय स्थान में मंगल के घर में सूर्य और मंगल व्यय में होने से दीक्षा और आचार्य पदवी की कुंडली के दूसरे स्थान में केतु और राहु होने से नेत्रपीड़ा या नेत्रज्योति की क्षीणताकारक है। आपकी कुण्डली में क्षेत्र सूर्य-मंगल के घर में और दीक्षा आचार्यपदवी की कुंडली में शनि क्षेत्र में स्थिर होने से मनोबल आत्मबल उत्तम रहेगा। पूर्ण प्रभाव शक्ति आकर्षण, मधुरमृदुवाणी से लोगों का जीवन परिवर्तन होगा।

पाप ग्रहों के धनस्थान में रहने से धननाशयोग याने संन्यास प्रवज्जया योग उत्तम बना है जिससे हाथ में धन का योग नहीं है किन्तु आपकी जीभ पर लक्ष्मी और सरस्वती साथ में निवास करेगी। गृहयोग प्रभाव से एक वचन बोलने से करोड़ों की सम्पत्ति एकत्र हो सकती है, आपकी कुंडली में लग्न में चन्द्र दूसरे स्थान में सूर्य और तीसरे स्थान में गुरु होने से पूर्ण मनोबल, आत्मबल और ज्ञानबल इन तीनों महाशक्तिओं का संचार दिन प्रतिदिन बढ़ता ही रहेगा।

गुदगुदी

* बेहोश पड़े एक मरीज को देखकर डॉक्टर ने कहा- यह तो मर गया। यह सुनते ही मरीज होश में आ गया ओर बोला- नहीं, मैं तो जिंदा हूँ। इस पर नर्स ने उसे डपटते हुए कहा- बकवास बंद करो, डॉक्टर साहब को झूठा बताते हो।

**

* बस में भीड़ के कारण एक आदमी धक्के खा रहा था। वह कभी किसी के धक्के से आगे चला जाता और कभी पीछे। जब वह उतरने लगा तो कंडक्टर बोला- टिकट तो ले लो। वह बोला- टिकट किस खुशी में लूं। मैं तो सारा रस्ता पैदल ही पार करके आ रहा हूँ।

सम्पादकीय

जैन धर्म का आधार

सुप्रसिद्ध चिन्तक तथा दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् से किसी ने प्रश्न किया कि- 'महावीर की मूलधारा कहाँ से प्रारम्भ होती है ? जैन धर्म का मूल आधार क्या है ? डॉ. राधाकृष्णन ने उत्तर दिया कि- 'महावीर की मूलधारा अन्दर से प्रारम्भ होती है। आत्मा जैन धर्म का मूल आधार है ।' वास्तविकता यही है आत्मा तथा आत्मा की मुक्ति (मोक्ष) पर जैन धर्म ने आचरण के अगणित प्रयोग कर निष्कर्ष प्रकट किया कि तुम स्वयं भगवान हो, तुम भगवान बनो । लोग उनसे पूछा करते थे कि सबसे श्रेष्ठ धर्म क्या है ? तीर्थंकर महावीर ने फरमाया- 'अहिंसा, संयम तथा तप रूप धर्म। ये तीनों तत्व धर्म के प्राण हैं।' जैन आगमों में स्पष्ट प्रतिपादन किया गया है कि- 'धर्म उत्कृष्ट मंगल है तथा यह अहिंसा, संयम, तप रूपी है। देवता भी उनको नमन करते हैं जिनमें ऐसा धर्म समाया हुआ है। ऐसा धर्म आत्मा का निर्मलीकरण/शुद्धिकरण करता है तथा उसे उत्थान की दिशा में आरूढ़ करता है। आत्मा में जिनका विश्वास नहीं है, वे धर्म के मार्ग पर नहीं हैं। व्यक्ति को आत्मा को दूषित करने वाले स्थानों से दूर रहकर सर्वाधिक चिन्ता अपनी आत्मा की करना चाहिये। आत्मा ही उसकी मित्र है तथा यही उसकी शत्रु है। संवर एवं निर्जरा की अनुगामी आत्मा को मित्र की मान्यता देना चाहिए तथा आश्रव व पाप से लिप्त व परिपूर्ण आत्मा को दुश्मन की स्थिति तय की जानी सर्वथा उपयुक्त है।

जैन धर्म का दूसरा नाम आत्म विज्ञान किया जा सकता है। तीर्थंकरों ने आत्मदर्शन के माध्यम से ही अपनी अवधारणाओं को परिपुष्ट किया । उनने साधक के लिये आत्मा की खोज का मार्ग दर्शित किया। सभी प्राणियों की अपनी-अपनी आत्मा है, आत्माओं का पृथक्कीकरण जैन तत्वज्ञान की विशेषता है। जैन धर्म में स्पष्ट

उद्घोषणा है कि एक आत्मा दूसरी आत्मा का न सुधार कर सकती है, न उसे विकृति की ओर ले जा सकती है। आत्मा के साथ दबदबेदार कर्म है, आत्मा कर्म का बंध करती है, वह कर्म की भोक्ता है। बंधे हुए कर्म के उदय में आने पर कर्म उसके फल का भोग करती है तथा कर्म फल भोग में यदि अपने पुरुषार्थ का योग नहीं करती है तो वे कर्म फल देकर झड़ जाते हैं। ऐसा नहीं होने पर पुराने कर्म के उदय व फल भोग की प्रक्रिया में नये कर्म का उपार्जन भी हो जाता है। अनादिकाल से आत्मा तथा कर्म का यही सम्बन्ध चल रहा है। इसी का नाम संसार है। जैन धर्म ने आत्मा के संसार में परिभ्रमण तथा संसार से मुक्ति की जो व्याख्या की है, निश्चित रूप से वह अद्वितीय है। इसीलिए इसका नामांकन 'आत्मा विज्ञान' से भी किया जाता है।

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी केवल जैनों के ही नहीं थे या उनने आत्मकल्याण का मार्ग केवल अपने अनुयायियों के लिये ही सुरक्षित नहीं किया। उनकी करुणा, दया तथा अहिंसा का क्षेत्र प्राणी मात्र के लिये है। सूक्ष्म से सूक्ष्म प्राणी को भी अपने प्राण प्रिय हैं, वह सुखी होना चाहता है, तीर्थंकर देवों ने प्राणियों को सच्चे सुख की प्राप्ति का मार्ग ही दिखलाया एवं न केवल ऐसे मार्ग का प्रतिपादन किया बल्कि सच्चे सुख की परिभाषा भी दी। उनके अनुसार सच्चा सुख वही जो फल के रूप में सुख ही देता है, जिसकी अंतिम आगामी परिणति सुख है तथा जो सुख परम्परक है। हम जिसे सुख मान बैठे हैं, वह सच्चा सुख नहीं है क्योंकि उसकी परिणति दुःख रूप है तथा वह दुःख का परम्परक है। वर्तमान में हमारी सुख की धारणा भ्रमपूर्ण है। उसे सच्चा सुख कैसे मानेंगे जो दुःखमयी संसार का संसरण अपने परिणाम में प्रदान करता है। सच्चा सुख तो वही है जिसकी अनुभूति सिद्ध आत्मा सिद्धशिला पर बिराजमान होकर करती है।

जैनधर्म को वैज्ञानिक धर्म कहा जा सकता है। विद्वानों के अनुसार जैन धर्म तथा विज्ञान को परस्पर विरोधी स्थापित नहीं करता है। वह एक को

जीवन के शिवत्व का तथा दूसरे को सत्य का प्रतीक स्थापित करता है। उसने धर्म का कार्य आत्मा की खोज इंगित किया है। आत्मा की खोज से तात्पर्य है आत्मा के शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति। मोक्ष जैन धर्म का प्रिय शब्द है। उसने इस तत्व को सिद्ध अवस्था या मुक्त अवस्था के नामों से सम्बोधित किया है। जैन धर्म में अंध विश्वास अथवा अंधरूढ़ियों का कोई स्थान नहीं है। श्रेणिक ने तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी से पूछा कि- भन्ते ! साधक का आचरण या क्रिया कलाप कैसा हो ? वह कैसे चले ? कैसे खड़ा हो ? कैसे बैठे ? कैसे सोचे ? कैसे बोले ? कैसे भोजन करे ? इस सभी क्रियाओं को करते समय पाप का बंध तो है, फिर व्यक्ति कैसे रहे ? किस प्रकार क्रिया कलाप करे कि उसे पाप का बंध नहीं हो। तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी ने उत्तर दिया कि वह अपनी समस्त क्रियाएँ विवेक के साथ करे, जागृत रहकर, होंश को बराबर बनाये रखते हुए करेगा तो उसे पाप का बंध नहीं होगा। मूर्च्छा ही पाप है। संसार के समस्त पाप मूर्च्छा तथा अविवेक की देन हैं।

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के अवतरण के युग में जातिवाद उग्र रूप में प्रचलित था । वर्ण भेद के कारण मानव -मानव में फर्क की रेखाएँ खींची हुई थीं। तथाकथित क्षुद्र वर्ग शोषण का शिकार था, उसे धर्म करने का अधिकार भी नहीं था। श्री महावीर स्वामी ने हरिकेशबल जैसे क्षुद्र व्यक्ति को अपने धर्मसंघ में दीक्षित किया तथा उसे आत्म कल्याण के मार्ग पर आरूढ़ होने का अवसर दिया। इस तथा ऐसे अनेक उदाहरणों के द्वारा भगवान श्री महावीर स्वामी ने इस सिद्धान्त को सत्यापित किया कि- 'मनुष्य जन्म से नहीं, कर्म से महान्' होता है। प्रभु ने 1141 व्यक्तियों की हत्या करने वाले अर्जुनमाली जैसे को अपने धर्मसंघ में सम्मिलित किया एवं साधना में इतना उन्नत किया कि छह मास में उसकी आत्मा का कल्याण हो गया।

यही है श्री महावीर स्वामी का अनुपम चिन्तन ।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

सम्पादक

■■■

अध्यक्षीय पाती

हार्दिक अभिनंदन

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ

आज से 2546 वर्ष पूर्व पावापुरी नगरी में परमोपकारी प्रभु श्री महावीर देव ने अपनी अन्तिम देशना प्रदान करते हुए आत्मा को परमशुद्ध सिद्ध स्थिति की ओर अग्रसर किया था एवं अर्द्धरात्रि को पौद्‌गलिक शरीर से आत्मा को मुक्त कर लिया था। उनके इस मोक्ष कल्याणक को ही दीपावली के रूप में मनाये जाने की तब से परम्परा है। वह अमावस्या की रात्रि थी, घनघोर अंधकार छाया हुआ था। इस रात्रि को तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी का सिद्धशिला की ओर आरोहण ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूपी प्रकार का निर्गमन माना गया अतएव इस कारण व्याप्त तमस को दूर करने के लिये ज्योति लौ से विश्व को ज्योतिर्मय करने का प्रयास किया गया। दीपावली प्रकाश का पर्व है, अंधकार दूर किये जाने का त्यौहार है। वर्णिक वर्ग के लिये इसे सर्वाधिक महत्व का प्रसंग माना जाता है।

इस पर्व पर वे अपने नये बहीखातों का शुभारंभ भी करते हैं। दीपावली के दिवस चहुँ ओर प्रसन्नता, खुशी आनन्द से दिशाओं को परिपूर्ण कर देते हैं। परिवारों में उल्लास का वातावरण बन जाता है। हम सभी का भी कर्त्तव्य है कि हम एक-दूसरे के प्रति मंगल एवं शुभ आदान प्रदान कर सभी के जीवन आलोकमय हो, ऐसी प्रार्थना करें।

दीपावली का त्यौहार तीर्थंकर देव श्री महावीर स्वामी के मोक्ष के अनूठे आख्यान से ही जुड़ा हुआ है ही उनके प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामी के केवल ज्ञान कल्याण की प्राप्ति को भी उद्‌घोषित करता है। तीर्थंकर श्री महावीर देव ने अपने प्रथम एवं परमप्रिय शिष्य श्री गौतमस्वामी को अपने निर्वाण कल्याण की बेला से पूर्व आज्ञा दी थी कि वे निकट ग्राम पहुंचकर देवशर्मा

को प्रतिबोध दें। श्री गौत्मस्वामी आज्ञा पालन हेतु चले गए। इधर श्री वर्द्धमान महावीर देव का निर्वाण हो गया। प्रातः पावापुरी लौटते समय जब उनको ऐसा आभास हुआ तो वे बिलख उठे लेकिन शीघ्र ही एकत्व चिंतन से आत्म जागृति ने उन्हें विवेक दिया कि इस नश्वर संसार में कौन-किसका है ? कर्म को नष्ट कर केवल ज्ञान पाया। इस प्रकार के उदाहरण जैन धर्म या जिनवाणी या श्री महावीर वाणी की ही अतिवि शिष्टता है।

हमारा जीवन भी आत्ममार्ग के लिये प्रेरणा ग्रहण करे। आप सभी का तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक उत्सव पर हार्दिक अभिनन्दन। ■■■

जिनेन्द्र प्रार्थना

जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए ।
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से, अपना मौन खोलिए ।।
सुर-असुर जिनेन्द्र की महिमा को नहीं गा सके ।
और गौतम स्वामी न महिमा को पार पा सके ।।
जय जिनेन्द्र बोलकर जिनेन्द्र शक्ति तौलिये ।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए ।।
जय जिनेन्द्र ही एक मात्र हमारा मंत्र हो ।
जय जिनेन्द्र बोलने को हर मनुष्य स्वतंत्र हो ।।
जय जिनेन्द्र बोल-बोल खुद जिनेन्द्र हो लिए ।।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए ।।
पाप छोड़ धर्म छोड़ ये जिनेन्द्र देशना ।
अष्ट कर्म को मरोड़ ये जिनेन्द्र देशना ।।
जाग, जाग, जग चेतन बहुकाल सो लिये ।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए ।।
हे जिनेन्द्र ज्ञान दो, मोक्ष का वरदान दो ।
कर रहे प्रार्थना, प्रार्थना पर ध्यान दो ।।
जय जिनेन्द्र बोलकर हृदय के द्वार खोलिए ।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए ।।
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से अपना मौन खोलिए ।

अध्यक्षीय संदेश

हमारा समर्पण किसके प्रति हो ?

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष

मानव जीवन की सार्थकता आत्मकल्याण की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करना है। आत्मा याने देह से भिन्न हमारा अपना अस्तित्व। जो आत्मा और शरीर में भिन्नता नहीं कर पाते हैं उनके लिए जीवन केवल भटकाव है। यह भटकाव आत्मा की ओर दृष्टि किए जाने पर ही दूर हो सकता है। भेद विज्ञान इसी पर बल देता है। हम अपने शरीर उससे सम्बद्ध इन्द्रियों, अंग प्रत्यंगों आदि की सर्वाधिक चिंता करते हैं। जबकी ये पुद्गल हैं, तथा नाशवान हैं। जो नाशवान है उसके प्रति हम पूरे मनोयोग से समर्पित रहते हैं यही हमारा भ्रम है। हमारा वास्तविक उत्थान आत्मा के कल्याण में है। हमारी अपनी आत्मा ही है। वह अजर-अमर, अविनाशी तत्व है और कभी भी मिटने वाला नहीं है।

अतएव हमें जैन दर्शन के मूल सिद्धांत का पालन करते हुए आत्म कल्याण की दिशा में अग्रसर होना चाहिए। तीर्थंकर देवों, अनंत ज्ञानियों तथा ध्यानियों ने अपने जीवन को साधनाकाल में परिणित करते हुए मुक्ति पथ को आलोकित किया है। यह हम पर उनका महान उपकार है। हमें इस उपकार को अंगीकार करते हुए आत्मार्थी बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

जैन दर्शन की यही विशेषता है कि उसने अपनी अवधारणाएँ आत्म कल्याण पर केन्द्रित की हैं। आत्म कल्याण के अतिरिक्त हमारा कोई लक्ष्य नहीं होना चाहिए। आत्मा के अतिरिक्त हमारे जीवन में अन्य किसी वस्तु का महत्व होना ही जीवन को व्यर्थ करना है। मानव भव ही वह मुकाम है जहाँ से मुक्ति या मोक्ष या सिद्धावस्था को प्रशस्त किया जा सकता है। यह सही है कि वर्तमान पंचम काल में तीर्थंकर भगवन्त के समान हमारा कोई मार्गदर्शक नहीं और न ही

भरतक्षेत्र की इस भूमि से मोक्ष की ओर पहुँचना संभव है। फिर भी हमें आत्म कल्याण को प्रथम प्राथमिकता बनाकर पराक्रम करना चाहिए।

वर्तमान में भी महाविदेह क्षेत्र में बीस तीर्थंकर सदैव विचरण करते रहते हैं तथा उनके धर्मोपदेश उनके समवसरण में उपस्थित जीवों का आत्मकल्याण करते रहते हैं। हम भी पुरुषार्थ कर महाविदेह क्षेत्र में जन्म ले सकते हैं, तथा मोक्ष की ओर निर्णायक प्राप्ति के लिए बढ़ सकते हैं।

श्री महावीर स्वामीजी के निर्वाण कल्याणक दिवस ने हमें यही प्रेरणा दी है। इस त्यौहार पर सांसारिक भव-भ्रमण की व्यक्तिगत स्थिति से उभरकर हम जीवन की तात्विक उपलब्धि की ओर कदम बढ़ाते हैं। हमें न तो पद प्रतिष्ठा तथा सुख-सुविधाओं का लोभ होना चाहिए नहीं अभावों, अपमानों या शारीरिक दुःखों का भय होना चाहिए। आत्मकल्याण के लिए आवश्यक है कि हमारा सम्पूर्ण समर्पण अपने आपके प्रति हो, अपनी आत्मा के प्रति हो, हम अपनी आत्मा को कषाय तथा आश्रव से दूर रखते हुए संवर तथा निर्जरा को ग्रहण करें जिससे हमारी आत्मा परमशुद्धता की स्थिति तक पहुँच सके। ■■■

शांतिनाथ चक्रवर्ती

राजा मेघरथ के भव में बहुत दान-पुण्य-सुकृत किया जीवदया भी उन्होंने तन, मन, धन से की। कबूतर जो शरण में आया, उसकी रक्षा के लिए अपना शरीर भी अर्पित कर दिया, वे ही मेघरथ जिन्होंने सात सौ पुत्रों और चार हजार राजाओं के सात दृढरथ तीर्थंकर के समीप दीक्षा ग्रहण कर वीस स्थानक की आराधना करके तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन किया। वहाँ से सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पन्न हुए।

सर्वार्थसिद्ध विमान की आयु को पूर्ण कर हस्तिनापुर के विश्वसेन राजा की अचिरा रानी से उत्पन्न हुए, तीर्थंकर तथा चक्रवर्ती के रूप में विख्यात हुए। महामारी का शमन किया, इसीलिए उनका नाम 'शान्तिनाथ' प्रसिद्ध हुआ।

चक्रवर्ती पद का उपभोग किया। अन्त में अपने पुत्र चक्रायुध को राज्यासीन कर स्वयं बुद्ध तीर्थपति भगवान शान्तिनाथ ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा स्वीकार की। बाद में चक्रायुध ने भी अन्य 35 राजाओं के साथ संयम लिया, वे सभी भगवान शान्तिनाथ के गणधर बने।

अन्त में भगवान शांतिनाथ ने सम्मेतशिखर पर नौ सौ साधुओं के साथ अनशन किया और मुक्ति पायी।

सात प्रकार की शुद्धि

(पुण्य सम्राट शिष्य मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)

श्री जिनेश्वर प्रभु का पूजन सात प्रकार की शुद्धि पूर्वक करना चाहिए।

1. अंग 2. वसन 3. मन 4. भूमिका 5. पूजों पैंकरणसार 6. न्यायद्रव्य 7. विधिशुद्धता शुद्धि सात प्रकार ।

सातें शुद्धि समाचारी, धरी प्रभुनु ध्यान ।
अन्तरना उल्लासथी, करीये नित्य प्रणाम ।।

1. अंग की शुद्धि – शरीर शुद्ध हो सके उतना ही जल लेकर जयणापूर्वक सर्वांग स्नान करके शुद्ध कपड़े से शरीर को साफ करके उनकी (गरम) कामली पहनें । फिर पूजा के वस्त्र पहनकर मन्दिर में जावें। स्नान ऐसी जगह में करना कि जहाँ चींटी आदि जीब और लील फूल वगैरह की उत्पत्ति न होवे और पानी ताप से जल्दी सुख जावे।

2. वसन शुद्धि – वस्त्र की शुद्धि पूजा के लिये पुरुषों को दो श्वेत वस्त्र श्वेत धोती और स्त्रियों को तीन वस्त्र तथा मुखकोश बांधने के लिये एक रूमाल रखना चाहिये। ये वस्त्र शुद्ध होने चाहिये। पूजा के वस्त्र पहिनकर वही- पेशाब किया न हो और अग्नि आदि से जला हुआ, फटा हुआ या सांधा हुआ भी न होना चाहिये। ये कपड़े दूसरे काम में न लेना और दूसरे के पहनें हुए कपड़े भी न वापरना चाहिए। अर्थात् पूजा के लिये अपने घर की सम्मति अनुसार निशले कपड़े रखना उत्तम है। इन कपड़ों को स्नान किये बिना छूना न चाहिए।

2. मन शुद्धि – श्री जिनेश्वर की पूजा के समय मन को स्थिर करके अन्य बात में लक्ष्य न देना और अन्य सब बातें पूजा के समय भूल जानी चाहिए।

3. भूमि शुद्धि – मन्दिर में कचरा बराबर लिया गया न होवे तो स्वयं लेवें या योग्य बन्दोबस्त करें। पूजा के उपकरण रखने की जगह भी शुद्ध रखनी चाहिए।

5. उपकरण शुद्धि – श्री अरिहंत प्रभु की पूजा के उपकरण जैसे की हार, चंदन,

पुष्प, धूप, दीपक, चावल, फल तथा नैवेद्य आदि पवित्र उच्च जाति के और घर से लाए हुए होने चाहिए। पक्षाल करने के कलश, धूपदानी, अंगलुना सिंहासन वगैरह अन्य उपकरण भी स्वच्छ होने चाहिए।

6. द्रव्य शुद्धि – श्री वीतराग प्रभु की पूजा आदि शुभ कार्य में जो द्रव्य खर्चा जाता है वह न्याय नीति से उपार्जित किया हुआ होना चाहिए।

7. विधि शुद्धता– स्नान करके जिन मन्दिर जाते समय जब मन्दिर का कोट या शिखर देखा जाय तब नमो जिणाणं कहना ओर जल से पैर की शुद्धि करके मन्दिर के हृदय में प्रवेश करना और शास्त्रोक्त दशत्रिक, पाँच अभिगम और उक्त सात प्रकार की शुद्धि पूर्वक श्री जिनेश्वर प्रभु की भक्ति करनी चाहिए प्रभुजी की पूजा यदि शास्त्रतोक्त विधि से करने में आवे तो भावना की वृद्धि होती है और शुभ भावना की वृद्धि भर का नाश करने वाली है। कहा है कि दान से दरिद्रता का नाश होता है शिक सदाचार से दुर्गति का नाश होता है और भावना है तो भव संसार का नाश करने वाली है।

पाँच सौ

* 500 वर्ष पूर्व हुए जंगमयुगप्रधान धर्ममूर्तिसूरिजी के पास अनेक विद्याएँ थी।
* 500 धातुप्रतिमाओं छ'री पालक संघ के मार्ग में आते गाँवों में अंचलगच्छ समाज ने दी थी।
* 500 मुनिवरों के साथ पालकाचार्यजीने कोंकण देश में धर्मप्रभावना की थी।
* 500 मुनियों के साथ पू. वैकुंठसूरिजी ने तैलंगदेश में शासन प्रभावना की थी।
* 500 कहानियाँ मेनापक्षीने त्रैलोक्य सुन्दरी राजकन्या को सुनाई थी।
* 500 ग्रंथों का सर्जन एक हजार वर्ष पूर्व कल्पनानंद सूरिजी ने किया था।
* 500 सुवर्ण मोहर की जुंआ खेलते हारने वाला कुन्देद्र बाद में त्यागी बना था।
* 500 धनुष प्रमाणवाली 108 जिन प्रतिमा जंबुवृक्ष की मखिपीठिका पर है।
* 500 अश्वों को लेकर रात्रि के दौरान विमलमंत्री ने पाटण छोड़ा था।
* 500 पंक्ति में सुवर्ण – रजत के बर्तन रखकर आमूसंघवीने संघ की भक्ति की।
* 500 धनुष प्रमाण देहमान महाविदेह क्षेत्र के 20 विहरमान तीर्थंकरों के हैं।
* 500 चोर एक साथ चोरी करने धनकुबेर जंबूकुमार के भवन पर गये थे।

सम्यक्त्व लक्षणों की व्याख्या का दस्तावेज

(शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर)

श्रीमद् विजय पुण्य सम्राट आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा. की निश्रा में संवत् 2039 में विजयवाड़ा से सम्मेतशिखरजी तीर्थ का एक छःरि पालित संघ निकला। प्रभु के दर्शन कर भाव विभोरावस्था में पूज्यश्री ने 'राजगृही मंडन मुनिसुव्रत जिन स्तवन' की रचना की। इस स्तवन से प्रेरणा पाकर स्तवन की छहों गाथाओं का प्रभावपूर्ण विवेचन पूज्य साध्वीश्री रूचिदर्शनाश्रीजी द्वारा पुस्तक 'मार्ग भक्ति का मंजिल मुक्ति की' प्रकाशित कर किया।

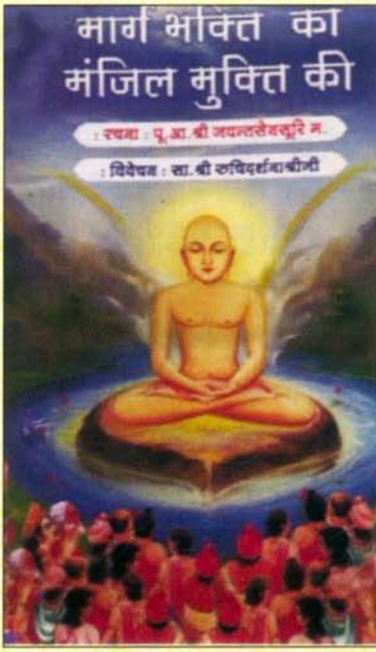

पुस्तक का अध्ययन और सम्यक्त्व के लक्षणों की जानकारी पुस्तक में प्रस्तुत सामग्री से होने की पुष्ट जानकारी से रूबरू होकर मैंने पाया कि इस पुस्तक में लेखिका साध्वीश्री रूचिदर्शनाश्रीजी द्वारा 'सम्यक्त्व के लक्षणों की व्याख्या भी स्वमेव हो गई है। जिसका विवरण प्रस्तुत है-

शम-संवेग-निर्वेदाऽनुकम्पाऽऽस्तिक्यलक्षणैः ।
लक्षणैः पञ्चभिः सम्यक् सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते ।।

– योगशास्त्र

शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्तिक्य रूपी पाँच लक्षणों से सम्यक्त्व भलिभाँति पहचाना जा सकता है। विवेचक की पुस्तक में इन लक्षणों की व्याख्या हमारा दिशा दर्शन करने वाला प्रकाश स्तम्भ साबित होगा।

शम- अनन्तानुबंधी कषायों को उदयावस्था में रोकना । **चतुर्थ गाथा** की विवेचना में 'दर्शन शम-दमकारी रे। परमात्मा के बाहयरूप का दर्शन भी कषायों का शमन एवं इन्द्रियों का दमन करने वाला है। क्रोध, मान, माया और लोभ को चांडाल चौकड़ी

कहा गया है। मेघमाली देव, गौशालक, चंडकौशिक नाग ऐसे उदाहरण हैं, जिन्होंने परमात्म दर्शन से अपने तीव्रतम कषाय का त्यागकर सम्यग्दर्शन की प्राप्ति की थी। अतः अल्पकषायी जीवों का परमात्म दर्शन से निश्चित ही आत्मकल्याण होगा।

2. संवेग – मोक्ष की अभिलाषा। जो संवेग से मोक्ष के बिना और किसी वस्तु की प्रार्थना नहीं करता, वही संवेगवान है। **तृतीय गाथा** में 'मोक्ष' को प्रतिपादित करते आपने लिखा है– मोक्ष में अव्याबाध सुख है और पुद्गल का सुख नकली है। मोक्ष में सिद्ध भगवान को पुद्गल का दर्शन है, ज्ञान है, किन्तु वेदन नहीं। आत्मा को मोक्ष से जोड़े वह योग कहा जाता है। द्वात्रिंशद और द्वात्रिंशिका ग्रंथ में वर्णित योग के पाँच भेदों का विशद वर्णन भी प्रस्तुत है। इस गाथा में आत्मा की तीनों अवस्थाएँ भी विवेचित हैं।

3. निर्वेद – संसार से वैराग्य होना निर्वेद है। नरक तिर्यंच, मनुष्य और देवभव में परलोक की साधना किये बिना ममत्व के विष से रहित होकर वेदरहित निर्वेद (वैराग्य) पूर्वक दुःख का वेदन करता रहता है। **षष्टम गाथा** में स्पष्ट कहा है– चक्रवर्ती का स्त्रीरत्न अर्थात मुख्य पटरानी नियमा छट्टीनरक में जाती है, इसका कारण विषय सुख की तीव्र आसक्ति है। परमात्मा के ज्ञान–दर्शन वैराग्य, ऐश्वर्य आदि लोकोत्तर गुणों का एक जीभ तो दूर हजार जीभ वाला भी सम्पूर्ण रूप से वर्णन करने में असमर्थ है (प्रथम गाथा)

4.अनुकंपा – दुःखी जीवों पर दया करने की इच्छा अनुकम्पा है। **पंचम गाथा** की विवेचना में सुनन्दा और रूपसेन के प्रसंग में हाथी भव में रूपसेन ने सूंड से साध्वी सुनन्दा के चरणों में नमन किया एवं बोला– हे भगवती ! आज से तू मेरी धर्म माता है। अंत में तपस्या का रूपसेन (हाथी) आयुष्य पूर्ण कर आठवें देवलोक में देवता रूप में उत्पन्न हुआ और साध्वी सुनन्दा केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष में स्थान प्राप्त कर अमर बनी।

5.आस्तिष्क – जिनेश्वरों ने जो कहा है, वही सत्य है, वही शंका रहित है। ऐसे शुभ परिणामों से युक्त और शंका, आकांक्षा आदि दोषों से रहित हो, वह सम्यक्त्वी माना है। **पंचम गाथा** में प्रस्तुत विवेचना में स्पष्ट लिखा है– आत्मविश्वास के अभिलाषी मुमुक्षु साधक को कल्याणकारी के रूप में इन (मनोवान्छित वस्तुओं देव लौकिक कामनाओं की पूर्ति) पर श्रद्धा रखने से कोई लाभ नहीं है। भौतिक वैभव के प्रतिनिधि देव–देवियों से उत्पेक्षाओं के पूरी होने का तो सवाल ही नहीं। राग–द्वेष से ग्रस्त प्राणी परमात्मा हो नहीं सकता।

वस्तुतः उस लेखन का विशेष महत्व होता है, जो प्रसंगोधारित होकर किसी विषय वस्तु को सरल, सहज भावा-शैली का उपयोग कर दूसरों को असरकारक पथ प्रदर्शन करने वाली हो। यह पुस्तक एक पंथ, दो काज वाली उक्ति चरितार्थ कर रही है। एक तो 'राजगृही मंडन मुनिसुव्रत जिन स्तवन' का प्रभावपूर्ण विवेचन है और दूसरा सम्यक्त्व के लक्षणों की विद्वतापूर्ण व्याख्या है।

निश्चिंततः यह पुस्तक 'सम्यक्त्व के लक्षणों' से पाठकों का ज्ञानवर्धन और पथ प्रदर्शन करने में उपयोगी सिद्ध होगी। साथ ही त्रिस्तुतिक समाज के जैन साहित्य की श्रीवृद्धि में पू. गुरुदेव आचार्य जयन्तसेनसूरिश्वरजी म.सा. के स्तवन ज्ञान, भक्ति और वैराग्य की त्रिवेणी में पवित्र अवगाहन कराने वाली भी होगी। ■■■

स्वाध्याय और सत्संग

यह ध्यान रखने की बात है कि मनुष्य सब कुछ स्वयं ही सोचने और करने नहीं लगता। मौलिकता की मात्रा तो बहुत थोड़ी होती है, अधिकतर तो लोग बाहर से ही प्रभाव ग्रहण करते है। जैसा वे देखते हैं, सुनते हैं, वैसा ही करने लगते हैं। चूंकि बुराइयों की चर्चाएं और घटनाएं बहुत होती रहती हैं, इसलिए लोगों का मन उसी ओर झुक पड़ता है। यदि विचारों का प्रवाह अच्छाई की दिशा में प्रवाहित हो रहा हो, तो लोगों के मन उसकी ओर भी झुके बिना नहीं रह सकते। आज इसी प्रवाह -परिवर्तन की सबसे बडी आवश्यकता है। उत्तम विचारों में शक्ति न हो, सो बात नहीं है, पर वे इतने कम मात्रा में हमसे संबंधित रहते हैं कि उनका थोड़ा-सा ही प्रभाव पड़ता है। यदि अधिक समय तक अधिक गहरे सद्विचारों का संपर्क किसी व्यक्ति को उपलब्ध हो, तो उसकी मनोदशा श्रेष्ठता की दिशा में मुड़े बिना नहीं रह सकती। स्वाध्याय और सत्संग की धर्म ग्रंथों में भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है। उन्हें जीवन का नितांत आवश्यक एवं अनिवार्य धर्म कर्तव्य माना गया है। स्वाध्याय की उपेक्षा करने वाले की भर्त्सना करते हुए शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है- 'जो व्यक्ति जिस दिन स्वाध्याय नहीं करता, उस दिन वह अपने कर्तव्य और वर्ण-धर्म से पतित हो जाता है।' यही बात सत्संग के बारे में भी है। अच्छे व्यक्ति और अच्छे विचारों की तुलना पारस पत्थवर से की गई है, जिसे छूकर लौहे सरीखे कलुषित अंतःकरण भी स्वर्ण जैसे बहुमूल्य बन जाते हैं।

शुभ चिन्तन

(डाह्यालाल जोटा, दाधाल)

प्रसन्नता पुद्दगल माँ नहीं, आत्मा माँ है उस कारण से पुद्गल मां त्याग दृष्टि रखनी चाहिए।

* संसार-आत्मा नो विकार छे।
  मोक्ष आत्मा नी स्वस्थता छे,
* संयम लेने के लिये साहस चाहिए।
* संयम पालने के लिये सत्य चाहिए।
* संयम सफल बनाने के लिए समर्पण चाहिए।
* संसार का सार धर्म है।
* धर्म का सार ज्ञान है।
* ज्ञान का सार संयम है।
* संयम का सार मोक्ष (निर्वाण) है।
* दुःख के भय से मुक्ति नहीं होती है।
* मुक्ति हेतु पाप का भय आवश्यक है।
* संसार सुख की इच्छा करना भी पाप है, फिर भी नवकार से संसार के सुख मिलते हैं, यह कहने में नवकार की महत्ता है, किन्तु संसार सुख के लिये नवकार का उपयोग नहीं करना चाहिए। नवकार में मोक्ष देने की ताकत है। मोक्ष के सिवाय दूसरी याचना यह याचक की कमजोरी है।

जैन शब्दावली

परकषाय के रूप में वेदन क्षपक श्रेणी	-	दूसरे कषाय के रूप में भोगना, वेदन करना मोहनीय कर्म का नाश करते-करते ऊपर चढ़ना।
स्थिति घातादि पाँच कार्य	-	स्थितिघात आदि पाँच कार्य- स्धितिघात रसघात, गुणश्रेणी, गुणसंक्रम, अपूर्वस्थिति-बंध, ये पाँच कार्य।
लघुकर्मी	-	कम कर्मोंवाला जीव।
सूक्ष्म संपराय	-	जिसके बारीक (सूक्ष्म) लोभ बाकी है।
घाती कर्मों का	-	आत्मा के गुणों का नाश करने वाले ही घाती कर्म हैं।
ग्रामानुग्राम	-	एक गाँव से दूसरे गाँव विहार करने वाले प्रभु।
समुद्घात	-	बलपूर्वक कर्मों का जल्दी नाश करना।
प्रक्रिया	-	रीति, पद्धति
कपाट	-	किवाड़ जैसा आकार
मन्थान	-	मधानी जैसा आकार
सर्व लोक व्यापी	-	चौदह राजलोक में संपूर्ण तथा व्याप्त
दंड में से	-	लकड़ी जैसे आकार में से
शरीरस्थ	-	सिर्फ शरीर में ही व्याप्त रहा हुआ।
चमत्कारिक	-	आश्चर्य जनक

ગુર્જર જૈન જ્યોત

(શાશ્વત ધર્મ ગુજરાતી આવૃત્તિ)

સંપાદક : સુરેશ સંઘવી

ફ્લેટ નં.બી-૧૦૩, બોરસલ્લી એપાર્ટમેન્ટ, ત્રીજે માળ,

ખાનપુર જી.પી.ઓ. નજીક, ખાનપુર, અમદાવાદ-૧. મો. : ૯૭૨૪૫૭૧૦૭૯

ભગવાન મહાવીરે શું કહ્યું ?

લેખક : આચાર્ય શ્રી જયંતસેનસૂરિ 'મધુકર'

અનાથ, નાથ નથી બની શકતો

''અપ્પણા અનાહો સન્તી, કહં નાહો ભવિસ્સસિ ।''

(શું પોતે અનાથ છે, તો પછી બીજાનો નાથ કઇ રીતે થઇ શકીશ ?)

કોઈ એમ સમજે કે હું કોઈનો રક્ષક છું - પાલક છું - નાથ છું તો તે તેનો ભ્રમ છે, કારણ કે આ દુનિયામાં કોઇ કોઇનું રક્ષણ કે નાશ કરી શકતો નથી. વ્યક્તિનાં પોતાના પૂર્વે સંચિત કર્મો જ તેનું રક્ષણ કે વિનાશ કરી શકે છે.

વળી જે વ્યક્તિ પોતે જેલની કોટડીમાં બંદી છે તે બીજા બંદીવાનોને છોડાવી શકતો નથી. જે પોતે ભૂખ્યો છે, તે બીજાઓની ભૂખ કઇ રીતે ભાંગી શકે ? જે પોતે કર્મોના બંધનથી જકડાયેલો સંસારમાં ભટકી રહ્યો છે, તે બીજાઓને કેમ કરીને છોડાવી શકે ? જે પોતે અસુરક્ષિત છે, તે બીજાઓનો રક્ષક કેમ કરીને બની શકે ? દરેક સંસારી પ્રાણીઓની પાછળ જન્મ-જરા-મૃત્યુનું ચક્કર લાગેલું જ છે, એટલે તે બીજાઓને આ ચક્કરમાંથી કેવી રીતે બચાવી શકે ?

શુભ અને અશુભ કાર્યોથી લપટાયેલ પ્રત્યેક જીવાત્મા પોતપોતાની આધિ, વ્યાધિ, ઉપાધિથી બંધાયેલ છે. એવી અવસ્થામાં તે બીજાને કેવી રીતે મુક્ત કરી શકે ?

ઠીક જ કહ્યું છે કે, જે કોઇ પોતે અનાથ હોય તે બીજાઓનો નાથ નથી થઇ શકતો.

- ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર, ૨/૧૨

શ્રી સકળ સંઘ - પરિષદ પરિવારને

નૂતન વર્ષાભિનંદન

જીવન વ્યવહારોની સમરસતાના તાણાવાણાથી ગુંથાયેલ હોવા છતાં શ્રી જૈન સંઘોના વિવિધ સ્થળોએ વસવાટ કરતા પૂજ્ય શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પાવનકારી પ્રેરણાથી પ્રેરાઇ શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ મોટી સંખ્યામાં જોડાઇ તપ - આરાધના સંપન્ન કરી રહ્યા છે. તેના પરથી નિશ્ચિતપણે કહી શકાય કે ધર્મ સંસ્કૃતિએ શાસનનો મહિમા અને પ્રભાવ પ્રસ્થાપિત કર્યો છે.

કર્મસત્તાએ કોઇની પણ કસૉટી કરવામાં કસર છોડી નથી તેમ છતાં તેની સામે જિનશાસન અને ધર્મીજનોનો પુરુષાર્થ તેમજ દેવ-ગુરુ, ધર્મ પ્રત્યે રહેલી શ્રદ્ધાએ અપૂર્વ સુખશાતા બક્ષી છે.

ધર્મમય વાતાવરણ શ્રી સંકળ સંઘને નવી સદીના બૌદ્ધિક સર્વોપરિતાના યુગમાં ધર્મ આરાધના દ્વારા આત્મશુદ્ધિનું અનુપમ સોપાન કરવા સાથે શાસન-સમાજ અને ગચ્છ માટે સક્ષમ બનવા અને પુણ્યનું ભાથું બાંધવા પ્રેરણા આપે છે. ભૌતિક વિકાસ આધુનિકતા માટે અનિવાર્ય છે તેમ માનવ સંસ્કૃતિનો વિકાસ પણ અનિવાર્ય છે. આ યુગમાં સ્વસ્થ સંસ્કારી ધર્મીજનો શાસન - સમાજ અને ગચ્છની આધારશીલા છે.

જે દિલના દેવાલયને અજવાળે... અંતરના આકાશને ઉઘાડે... પ્રાણોને પ્રેમથી પલાળે અને ધર્મ આરાધના દ્વારા દેહના દીપને ઉજમાળે એનું નામ દિવાળી... સહુ જીવો સાથે મન જો મળે... વેરની ગાંઠો ગળે અને દિ જો વળે તો જ સાર્થક બને દિવાળી.

દર વર્ષે દીપ સે દીપ જલેનો સંદેશો લઈ આવે છે આ દિવાળીનું પર્વ. સ્વસ્થ સંપન્ન સંસ્કાર સાથે ધર્મ આરાધના દ્વારા દિવ્ય પ્રકાશ આપવાનું આહ્‌વાન કરે છે. નૂતન વર્ષની સુપ્રભાત... માટે જિનેશ્વર પરમાત્માની અસીમકૃપા - દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજયજયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ... વર્તમાન ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા સમસ્ત શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના શુભાશુભ આશિર્વાદ મેળવી સંવત ૨૦૭૬ના કારતક સુદ - ૧ નવા વર્ષની સુપ્રભાતે ગુરૂગૌતમસ્વામીનું સ્મરણ કરી ધર્મ ઉદ્ધમમાં જોડાઈ માનવતાભર્યા જીવન સફરની શરૂઆત કરી આવતા વર્ષની દિવાળીને પણ સફળ બનાવીએ તેવી અંતઃકરણપૂર્વકની શુભેચ્છા સાથે શ્રી સકળ સંઘ અને યુવક-મહિલા, વહુ, તરૂણ, બાલિકા સમસ્ત પરિષદ પરિવારને નૂતન વર્ષાભિનંદન.

લિ. શાશ્વત ધર્મ - ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર

સુરેશ સંઘવી

પિપલોદા નગરે પંચ મંગલ મહાશ્રુત સ્કંદાધિ મહા મંગલકારી ઉપધાન તપના આરાધકોનો મોક્ષમાળા પરિધાન કાર્યક્રમ સંપન્ન

પિપલોદા નગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પાવનકારી નિશ્રામાં શ્રી નવકાર મહામંત્રની આરાધના, પર્વાધિરાજ પર્યુષણ પર્વની ઉજવણી, ઉપધાનતપ તેમજ વિવિધ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોના પુલકિત અવસરની ઉજવણીના આનંદથી શ્રી પિપલોદાનગરની ધન્યધરા હરખાઈ ઉઠી હતી.

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર અને પ્રથમ શિષ્યરત્ન ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., સેવાભાવી ડો. મુનિરાજ શ્રી સિદ્ધરત્નવિજયજી મ.સા., રાજધાની એક્સપ્રેસ મુનિરાજશ્રી વિધ્ધવતરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી પ્રશમસેનરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી તારકરત્નવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી નિર્ભયરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદની પ્રભાવશક્તિ કેટલી બુલંદ છે તેનો અનુપમ પરિચય પિપલોદાનગર ખાતેના ઐતિહાસિક, યશસ્વીઅને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ દ્વારા સકળ સંઘે જોયો છે અને અનુભવ્યો છે.

આ ચાતુર્માસ દરમ્યાન પંચ મંગલ મહાશ્રુત સ્કંદાધિ મહામંગલકારી ઉપધાન તપની આરાધના કરાવવા ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજયનિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.એ શ્રી પિપલોદા જૈન સંઘને પ્રેરણા કરી હતી. અને તે અંગેની તૈયારીઓ આદરી દેવાઈ હતી. આરાધના કરાવવાનો લાભ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના અલગ-અલગ ભાગ્યશાળી પરિવારોએ લીધો હતો.

સંવત ૨૦૭૫ના ભાદરવા સુદ ૯ ને શનિવારના રોજથી આસો વદ ૧૦ ને બુધવાર તા. ૨૩-૧૦-૨૦૧૯ના રોજ સુધી પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંદાધિ ઉપધાન તપની આરાધનાનું આયોજન કરાયું હતું.

પિપલોદા નગરે ઉપધાન તપના અંતિમ ચરણે એટલે કે આસો સુદ - ૯ ને મંગળવાર તા. ૨૨-૧૦-૧૯ના રોજ તપસ્વીઓના ભવ્ય વરઘોડાનું આયોજન કરાયું હતું અને આસો વદ ૧૦ ને બુધવાર તા. ૨૩-૧૦-૧૯ના રોજ ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની નિશ્રામાં અંદાજિત ૬૪ ઉપધાન તપના આરાધકોએ મોક્ષમાળા પરિધાન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી. આ કાર્યક્રમ વેળાએ શ્રી પિપલોદા જૈન સંઘમાં આભને આંબતો ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો હતો. ઉપધાન તપના કુલ ૧૦૨ આરાધકોએ ૪૭ દિવસની આ કઠોર તપશ્ચર્યા કરી કર્મની નિર્જરા કરી હતી.

ધાનેરાનગરે ચાતુર્માસ બિરાજમાન આચાર્યશ્રી સપરિવારના દર્શન-વંદનાર્થે શ્રી સંઘો અને ગુરૂભક્તોનું આવા-ગમન પુરજોશમાં

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર અને કૃપાસિન્ધુ યોગીરાજ સંયમવયઃસ્થવીર શ્રી શાંતિવિજયજી મ.સા.ના સુશિષ્યરત્ન ભાંડવપુર તીર્થોધારક, સૂરિમંત્ર આરાધક આચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા., તપસ્વીરત્ન મુનિરાજશ્રી અશોકવિજયજી મ.સા., કાર્યદક્ષ મુનિરાજશ્રી આનંદવિજયજી મ.સા., મુનિરાજશ્રી જિનરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ શ્રમણ તેમજ પૂજ્ય વિદુષી સાધ્વીજીશ્રી સૂર્યકિરણાશ્રીજી મ.સા આદિ ઠાણા ધાનેરાનગરે જપ-તપ સાથે ઐતિહાસિક, યશસ્વી અને અવિસ્મરણીય ચાતુર્માસ સંપન્ન કરવા જઈ રહ્યા છે.

ધાનેરાનગરમાં પ્રતિરોજ આચાર્યશ્રી વિવિધ વિષયો પર તેમની મર્મસ્પર્શીવાણીથી પ્રવચન દ્વારા જિનવાણીનું શ્રવણ કરાવી રહ્યા છે. શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ તથા શ્રી રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી ગુરૂમંદિર ધાનેરા દ્વારા આયોજિત ચાતુર્માસમાં પર્યુષણ પર્વ બાદ આચાર્યશ્રી અને શ્રમણ-શ્રમણીવૃંદના દર્શન-વંદનાર્થે રોજેરોજ શ્રી સંઘો અને ગુરૂભક્તોનું આવા-ગમન પુરજોશમાં થઈ રહ્યું છે. આ ક્રમમાં તા. ૨૨-૯-૨૦૧૯ના રોજ શ્રી થરાદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના અધ્યક્ષશ્રી વાઘજીભાઈ વોરાના નેતૃત્વ હેઠળ અમદાવાદથી ૮૦ જેટલા યાત્રિકો બસ દ્વારા ધાનેરાનગરે આચાર્યશ્રી સપરિવારના દર્શન-વંદનાર્થે પહોંચ્યા હતા. અધ્યક્ષશ્રી સહિત સમસ્ત યાત્રિકોએ પૂજ્ય આચાર્ય સપરિવારના દર્શન-વંદન સુખશાતા પૂછી સાંવત્સરીક ક્ષમાપના કરી હતી. શ્રી વાઘજીભાઈ વોરાએ ધાનેરાનગરે ચાલી રહેલ ઐતિહાસિક ચાતુર્માસ આયોજન માટે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ ધાનેરાને અભિનંદન પાઠવ્યા હતા અને આચાર્યશ્રીને ગુરૂસપ્તમીની ઉજવણીમાં અમદાવાદ નિશ્રા પ્રદાન કરવા વિનંતી કરી હતી. જ્યારે શ્રી શાંતિદૂત જૈનોદય ટ્રસ્ટના અધ્યક્ષ શ્રી જવેરીલાલજી ઓસવાલ, શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય રાજેન્દ્રસૂરિ સ્મારક જૈન સંઘ - ઉદયપુર કાયાતીર્થ અધ્યક્ષશ્રી લાલચંદજી છાજેડ અને શ્રી રાજેન્દ્ર - શાંતિ જૈનોદય ટ્રસ્ટ તથા સૂરિરાજેન્દ્ર જયંતસેન ગુરૂકુલમના અધ્યક્ષશ્રી મહેન્દ્રજી શાહ વિગેરે સંઘો અને ટ્રસ્ટોએ ગુરૂસપ્તમી મોટેરા ખાતે ઉજવવા વિનંતી કરી હતી.

ગચ્છાધિપતિશ્રીએ દીક્ષાનું મુહૂર્ત અને ડીસા ખાતે પ્રતિષ્ઠાનું મુહૂર્ત પ્રદાન કર્યું

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.એ સંવત ૨૦૭૬ના માગશર સુદ ૨ ને ગુરૂવાર તા. ૨૮-૧૧-૨૦૧૯ના રોજ અલિરાજપુર જિલ્લાના ભાભરાનગરે (મ.પ્ર.) ચાંદનીબેનને દીક્ષા અંગિકાર કરવા મુહૂર્ત પ્રદાન કર્યું હતું. જ્યારે પુણ્ય સમ્રાટની પ્રેરણાથી (પુણ્ય સમ્રાટ દ્વારા અંતિમ ભૂમિપૂજન) દોશી પરિવાર દ્વારા નિર્મિત વિહારધામ ડીસામાં પ્રતિષ્ઠાનું મુહૂર્ત પિપલોદામાં ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.એ શ્રી શંખેશ્વર દર્શન વિહારધામ ડીસામાં નિર્માણ પામેલ સહસ્રફણા શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથ જિનાલયની પ્રતિષ્ઠાનું સંવત ૨૦૭૬ના મહાવદ-૫ ને ગુરુવાર તા. ૧૩-૨-૨૦૨૦ શુભ મુહૂર્ત પ્રદાન કર્યું હતું. લાભાર્થીરમીલાબેન બાબુલાલ મણિલાલ દોશી પરિવારે (બી.એમ.શાહ) ગચ્છાધિપતિ સપરિવારના દર્શન-વંદન કરી આશીર્વાદ મેળવ્યા હતા.

પરિષદ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષની કલમે...

આદરણીય ગુરૂભક્ત સાદર જય જિનેન્દ્ર

અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ પરિવારના સદસ્યોનું પિપલોદામાં પુણ્ય સમ્રાટના શિષ્ય રત્ન ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ ઠાણાની નિશ્રામાં સંપન્ન થવા વાળા પરિષદના સંયુક્ત રાષ્ટ્રીય અધિવેશનમાં અધિકથી અધિક સંખ્યામાં પધારવા આપ સહુને નિમંત્રણ આપી રહ્યો છું. સમગ્ર પરિષદ શાખા દરેક રાજ્યમાંથી વધુથી વધુ સંખ્યામાં પિપલોદા અધિવેશનમાં પધારે સહુને આગ્રહ પણ છે કે આવવાની સૂચના પહેલેથી અવશ્ય કરે. કેમ કે તમને કોઈપણ પ્રકારની અસુવિધા ના રહે. ૯ નવેમ્બર ૨૦૧૯ના રોજ નવયુવક પરિષદ, મહિલા, બહુ, બાલિકા અને તરૂણ પરિષદનું અધિવેશન રહેશે. ૧૦ નવેમ્બરના રોજ માત્ર નવયુવક પરિષદનું સમાપન થશે. નવયુવક પરિષદની તમામ શાખાનો પ્રથમ દિવસે ૯ નવેમ્બર રાત્રે ૭ થી ૧૦ કલાક દરમ્યાન ''અપનો સે અપની બાત'' કાર્યક્રમ રાખવામાં આવેલ છે.

આપનો રમેશ ધરૂ (રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ)

સ્વ. મુનિરાજ શ્રી વિનીતરત્ન વિજયજી મ.સા.ની પરિષદ પરિવારને અંતિમ પ્રેરણા

અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ તપસ્વીરત્ન શ્રી રમેશભાઇ ધરૂ અને રાષ્ટ્રીય મહામંત્રી તપસ્વીરત્ન શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલના નેતૃત્વમાં દર વર્ષે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પુણ્ય સમ્રાટ સમુદાયના સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતો જે રાજ્યોમાં કે નગરમાં ચાતુર્માસ અર્થે બિરાજમાન હોય ત્યાં પરિષદ પરિવારના પદાધિકારીઓ દર્શન-વંદન અને પરિષદ શાખાની મુલાકાત માટે ભારતભરનો પ્રવાસ કરે છે. આ વર્ષના પ્રવાસ દરમ્યાન અમરનગર - જોધપુર (રાજ.) ખાતે ચાતુર્માસ બિરાજમાન વરિષ્ઠ મુનિરાજશ્રી વીરરત્ન વિજયજી મ.સા. અને મુનિરાજશ્રી વિનીતરત્નવિજયજી મ.સા.ના દર્શન-વંદન કરી પરિષદ પદાધિકારીઓએ સુખશાતા પૂછી હતી. સ્વ. મુનિરાજશ્રીનું સ્વાસ્થ્ય તે વખતે પણ સ્વચ્છ ન હતુ. મુનિરાજશ્રીએ કરૂણાભાવથી કહ્યું હતું કે, રમેશજી આપ અને આપનો પરિષદ પરિવાર સેવા ઘણા સમર્પણ ભાવથી કરી રહ્યો છે. તમારા નેતૃત્વમાં પરિષદનો વિકાસ તીવ્ર ગતિથી થઇ રહ્યો છે. મારી એક ભાવના છે કે આપણા સમુદાયમાં શારીરિક પ્રતિકૂળતા અને વૃદ્ધાવસ્થાના કારણે જેમને વિહાર કરવો સંભવ નથી એવા વૃદ્ધ બિમાર સાધુ-સાધ્વીજીના સ્થિરવાસ અને ચિકિત્સા સુવિધા માટે શ્રી સંઘ-સમાજ, પરિષદ કોઇક સ્થાનો પર વ્યવસ્થા કરે જ્યાં તેમને રહેવાની, ગોચરીની અને સ્વાસ્થ્યની વ્યવસ્થા સુલભ હોય. મુનિરાજશ્રીએ તેમના અંતિમ સમયમાં વૃદ્ધાવસ્થાની વેદનાને સમભાવથી સહન કરતા કરૂણાભાવથી અન્ય વૃદ્ધ અને શારીરિક કારણોથી સ્થિરવાસ વાળા સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની ચિંતા કરવા સાથે પરિષદને અમૂલ્ય માર્ગદર્શન અને પ્રેરણા આપી હતી. શ્રમણ-શ્રમણી સેવાની મુનિરાજશ્રીની ભાવના પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિને જણાવી પૂજ્ય ગચ્છાધિપતિએ આશીર્વાદ આપતા કહ્યું કે, નજીકના સમયમાં આ વ્યવસ્થા સંપન્ન થશે. ગુરૂગચ્છના કોઇપણ સાધુ-સાધ્વીજીને સ્વાસ્થ્ય સુવિધાનો અભાવ ન હોય તેની વ્યવસ્થા સંઘ પરિષદ દ્વારા કરાવવાની યોજના બનાવવામાં આવી છે. દિવંગત મુનિરાજશ્રી અમને આ કાર્ય માટે આશિષ પ્રદાન કરે.

શ્રી રમેશ ધરૂ (રાષ્ટ્રીય પરિષદ પ્રમુખ)
અને પરિષદ પરિવાર.

શ્રી નાગેશ્વર પાર્શ્વનાથ પ્રભુની તળેટી શ્રી આલોટનગરે ચાતુર્માસ દરમ્યાન તપ-જપ-આરાધનાની હેલી

શ્રી સૌધર્મ બૃહતપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન શ્વે. શ્રી સંઘ તથા શ્રી રાજેન્દ્ર ચાતુર્માસ સમિતિ, આલોટના તત્વાધાનમાં પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મદિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક શ્રીમદ્વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની આજ્ઞાનુવર્તીની ગુરૂણીજી માલવમણી વયોવૃદ્ધ સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ની પ્રશિષ્યા અને સાધ્વીજીશ્રી કલ્પલત્તાશ્રીજી મ.સા.ની સુશિષ્યા સરળ સ્વભાવી, મૃદુભાષી, તપસ્વી રત્ના સાધ્વીજી શ્રી વિદ્વદગુણાશ્રીજી મ.સા. અને સેવાભાવી તપસ્વીરત્ના સાધ્વીજીશ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા.શ્રી નાગેશ્વર પાર્શ્વનાથ પ્રભુની તળેટી શ્રી આલોટનગરે ચાતુર્માસ સાનંદ સંપન્ન કરવા જઈ રહ્યા છે. જગદંબા સ્વરૂપ બંને સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ આલોટનગરે તપ-જપ-આરાધનાની હેલી વરસી રહી છે.

પ્રતિદિવસ સુત્રાધિકારમાં શ્રાદ્ધ વિધિ ગ્રંથ અને ભાવનાધિકારમાં ભીમસેન ચરિત્રનું શ્રવણ પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતો દ્વારા કરાઈ રહ્યું છે. રોજ સવારે ભક્તામ્બર સ્તોત, ગુરૂગુણ ઈક્કીસા અને ગુરૂગુણાનુવાદ સાથે સાંકળી આયંબિલ, સાંકળી અઠમ નિરંતર ચાલી રહ્યા છે. દર ગુરૂવારે મહિલા જ્ઞાન શિબિર, દર રવિવારે બાળકોની જ્ઞાન શિબિરનું આયોજન કરાઈ રહ્યું છે. પૂજ્ય સાધ્વીજી મ.સા.ની પ્રેરણાથી શ્રી આલોટ નગરમાં મહામૃત્યુંજય તપ, સિદ્ધિતપ, માસક્ષમણ, ૧૭-૯-૮-૫-૪-૭ અઠમ-છઠ. આયંબિલ તપની તપશ્ચર્યા સાથે દીપક એકાસણા, ભગવાનશ્રી નેમિનાથ જન્મકલ્યાણક એકાસણા, સામુહિક આયંબિલ, નવકાર આરાધના વગેરે તપ-જપ-આરાધનાના સંપન્ન થઈ હતી. મોટી સંખ્યામાં જોડાયેલ તપસ્વીઓના તપ અનુમોદનાર્થે તા. ૧૮-૯-૨૦૧૯ના રોજથી તા. ૨૨-૯-૨૦૧૯ના રોજ દરમ્યાન પંચાન્હિકા મહોત્સવનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. પંચાન્હિકા મહોત્સવ દરમ્યાન પ્રતિરોજ વિધિકારકો દ્વારા પૂજનો ભણાવાયા હતા. સંગીતકારો દ્વારા પ્રભુભક્તિ, પ્રભુજીને અંગરચના વિગેરે કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

આ મહોત્સવ દરમ્યાન પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની પ્રેરણાથી નવપદ ઓળી અને વર્ધમાન તપનો પાયો પણ રોપાયો હતો. ઉલ્લેખનીય છે કે સેવાભાવી,

તપસ્વીરત્ન સાધ્વીજી શ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા.ને વર્ધમાન તપની ૭૨મી ઓળી ચાલી રહી છે. ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ લગાતાર આયંબિલ કરી રહ્યા છે. સમસ્ત સંઘ તેઓશ્રીની સુખશાતા પૂછી રોજ અનુમોદના કરી પુણ્ય ઉપાર્જન કરે છે.

પર્વાધિરાજ પર્યુષણ પર્વ દરમ્યાન પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના મુખારવિંદથી શ્રી અષાટન્હિકા વ્યાખ્યાન, શ્રી કલ્પસૂત્ર, શ્રી વીરજન્મ વાંચન અને બારસાસૂત્રનું વાંચન કરી શ્રાવક-શ્રાવિકાઓને શ્રવણ કરાવ્યું હતું. સંવત્સરી મહાપર્વની સોનેરી સંધ્યાએ સંવત્સરી પ્રતિક્રમણ કરવા સાથે ચોરાસી લાખ જીવાયોનીથી ક્ષમાયાચના કરી હતી.

પાટણ નગરે પુણ્ય સમ્રાટની ૨૯મી માસિક પુણ્યતિથિની ઉજવણી

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પાટણ દ્વારા મુનિરાજશ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા. આદિ ઠાણાની નિશ્રામાં પાટણનગરે પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ની ૨૯મી માસિક પુણ્યતિથિની ઉજવણી કરાઈ હતી.

આ ઉજવણી પ્રસંગે પંચાસરા પાર્શ્વનાથ જિનાલય પરમાત્માની ભવ્ય અંગ રંચના, ભિક્ષુકોને મિષ્ઠાન સાથે ભોજન, આયંબિલના તપસ્વીઓ અને આયંબિલ ભવનના સેવાર્થીભાઈ-બહેનોનું સંઘપૂજન દ્વારા બહુમાન કરાયું હતું. સમસ્ત કાર્યક્રમનો લાભ રેવતડા નિવાસીશ્રી સુમરીદેવી તગરાજજી હીરાણી પરિવારે લીધો હતો. ત્રિસ્તુતિક જૈન ઉપાશ્રયમાં સાંજે પુણ્ય સમ્રાટની આરતી ઉતારાઈ હતી.

પાટણમાં મુનિરાજશ્રી અને મૌલવીજી વચ્ચે ધર્મ ચર્ચા

ગુજરાતના પાટણનગરમાં પંચાસરા જિનાલય પાસે સ્થિત ત્રિસ્તુતિક જૈન ઉપાશ્રયમાં બિરાજમાન મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્નવિજયજી મ.સા. અને પાટણના મુખાતવાડા સ્થિત અલકુરેશ મસ્જિદના મૌલવી મોલાના ઈદિશનું મિલન ત્રિસ્તુતિક જૈન ઉપાશ્રય ખાતે થયું હતું. બંને વચ્ચે ઘણા સમય સુધી ધર્મ ચર્ચા થઈ હતી. મુનિરાજશ્રીએ કુરાનની આયાતોના વર્ણન કરતાં અહિંસાની વાત જણાવી. પર્યુષણ પર્વના આઠે દિવસ પાટણમાં કતલખાના બંધ રખાવવામાં સહભાગી બનવા માટે મૌલવીજીનો આભાર માન્યો હતો. બંનેના મિલન પ્રસંગ પર બંને ધર્મના લોકો ઉપસ્થિત હતા. પાટણમાં મુનિ ભગવંતોના દર્શન-વંદનાર્થે ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ, બડનગર, રતલામ અને ઉજૈનથી ગુરૂભક્તો પધાર્યા હતા અને સહુએ દર્શન-વંદન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી.

પરમ ગુરૂભક્ત શ્રી અનિલજી રાણાવત

શ્રદ્ધેય શ્રી અનિલજી રાણાવત સરલતા, સરસતા, સજગતા, વિનમ્રતા અને સક્રિયતાની મિશાલ હતા. ગુરૂ આજ્ઞા શિરોધાર્ય એમનો પરિચય હતો. સંઘ, સમાજ અને પરિષદમાં સદૈવ અગ્રણી ભૂમિકામાં રહેતા હતા. ફતેપુરા પ્રતિષ્ઠા આયોજનમાં શાનદાર ભૂમિકા અદા કરી, તીર્થરક્ષા, સંઘ એકતા માટે હંમેશા સક્રિય રહેતા પુણ્ય સમ્રાટની નિશ્રામાં સંપન્ન થતા મુખ્ય આયોજનોમાં લગભગ એમની ઉપસ્થિતિ રહેતી હતી. પુણ્ય સમ્રાટશ્રીએ તેમની સમર્પણતા અને સરળતાને જોઈ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના મહારાષ્ટ્રના પ્રાંતિય સચિવ તરીકે નિમણૂક કરી હતી. ગુરૂદેવના ભરોસાને સાકાર કરવા સાથે ગત વર્ષે રાષ્ટ્રીય પદાધિકારી શ્રી રમેશજી ધરૂ, શ્રી જે. કે. સંઘવી, શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ, શ્રી ભરતભાઈ વોહેરા, પ્રાંતિય અધ્યક્ષ શ્રી મોહનલાલજી ઢાલાવતના મહારાષ્ટ્ર પ્રવાસના સમયે સાંગલી, વાઈ, કર્જન, કરાડ વિગેરે ૬ સ્થાનો પર પરિષદની સ્થાપના કરાવવામાં સક્રિય ભૂમિકા નિભાવી હતી. અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ પરિવારના મહારાષ્ટ્ર રાજ્યના પ્રાંતિય સચિવ શ્રી અનિલજી રાણાવતને ભાવભરી શ્રદ્ધાંજલિ અર્પિત કરે છે.

– શ્રી રમેશ ધરૂ – શ્રી અશોકજી શ્રીશ્રીમાલ અને પરિષદ પરિવાર

વિતરાગ પરમાત્માનો અભિષેક વિશ્વ મંગલ કરે
શ્રી સંઘ કલ્યાણકારી અઢાર અભિષેક

વિશ્વ પૂજ્ય પ્રાતઃ સ્મરણીય દાદા ગુરૂદેવ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. તથા પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના દિવ્ય આશિષ, ધર્મ દિવાકર ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા. - ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્નસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આશિર્વાદથી અરિહંત પરમાત્મા સમગ્ર જીવોનું કલ્યાણ કરવાવાળા છે. આપણા સહુને મોક્ષમાર્ગના પથિક બનાવવા વાળા છે. એવા ત્રિભુવન નાથ દેવાધિદેવ વિતરાગ પરમાત્માના અભિષેક મંગલ સુખ અને શાંતિકારી છે. અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન તરૂણ પરિષદના તત્વાધાનમાં ગત તા. ૭-૧૧-૧૯ના રોજ સંપૂર્ણ માળવાના શ્રી સંઘોમાં ભવ્ય અઢાર અભિષેકનું આયોજન કરવામાં આવેલ છે. સમસ્ત સંઘો અને તરૂણ પરિષદ શાખાઓને વિશેષ આગ્રહ છે કે પોતાના નગરોમાં આ મહામંગલકારી અનુષ્ઠાન અવશ્ય કરે.

સદ્‌ગુરૂ સમર્પણમ્

મારા ગુરૂ મહાન છે...

(ગતાંકથી ચાલું...)

૯૮. ગુરૂના ચરણામૃતનું જ નહીં વચનામૃતનું પણ પાન કરવું જોઇએ.

૯૯. ગુરૂ પ્રત્યે જેને સદ્‌ભાવ છે તે જ આત્મ સાધક હોય છે.

૧૦૦. ગુરૂદર્શન કેવળજ્ઞાન પ્રદાન કરી શકે છે.

૧૦૧. ગુરૂના ચરણ કમળ જ્યાં પડે છે તે ભૂમિ તીર્થ બની જાય છે.

૧૦૨. ગુરૂ વગર અચિત-અનુચિતનો ભેદજ્ઞાન નથી થઇ શકતો.

૧૦૩. ગુરૂ જેનું જતન કરે છે તેનું પતન નથી થતું.

૧૦૪. ગુરૂ કુશળ શિલ્પી છે જે શિષ્યરૂપી પત્થરને મૂર્તિ બનાવી દે છે.

૧૦૫. ગુરૂકુશળ કુંભકાર છે જે શિષ્યરૂપી માટીને ઘટ બનાવી દે છે.

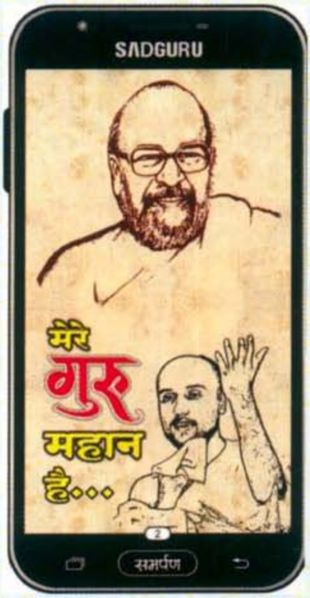

શ્રી સૌધર્મ બૃહદ તપોગચ્છીય ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરત (ચરાદવાળા) નૂતન ટ્રસ્ટી મંડળની રચના

શ્રી નીતિનભાઇ ચુનીલાલ અદાણી
શ્રી દિનેશભાઇ લહેરચંદભાઇ ભણસાળી
શ્રી કનુભાઇ જયંતીલાલ વોહેરા
શ્રી પ્રકાશભાઇ ભોગીલાલ માજની
શ્રી પરેશભાઇ હીરાલાલ દેસાઇ
શ્રી અશ્વિનભાઇ બાબુલાલ વોહેરા
શ્રી શૈલેષભાઇ કાંતિલાલ ભણસાળી
શ્રી અતુલભાઇ સેવંતીલાલ અદાણી
શ્રી ચંપકભાઇ અમરતલાલ ધરૂ
શ્રી પ્રકાશભાઇ રસિકલાલ ગાંધી
શ્રી રમેશભાઇ દેવસીલાલ દોશી
શ્રી શરદભાઇ જિતેન્દ્રભાઇ વોહેરા
શ્રી મહેન્દ્રભાઇ ખુબચંદભાઇ વોહેરા
શ્રી વિનોદભાઇ રાજમલભાઇ મોદી
શ્રી જશવંતભાઇ લહેરચંદભાઇ મોરખીયા
શ્રી ભરતભાઇ વીરચંદભાઇ ભણસાળી
શ્રી પ્રવીણભાઇ માણેકલાલ વોહેરા
શ્રી વિપુલભાઇ રસિકલાલ વોહેરા
શ્રી સુરેશભાઇ હાલચંદભાઇ વોહેરા
શ્રી ચેતનભાઇ લલિતકુમાર બલુ

ચેન્નઈ નગરે કાવ્યધારા કવિ સંમેલન સંપન્ન

સંમેલનમાં છવાઈ ગયા જૈન દર્શન કવિ શ્રી કુલદિપ પ્રિયદર્શી

ચૈન્નઈ નગરમાં જૈનોના ચારેય ફીરકાઓની એક્તાના જાજવલ્યમાન સંગઠનશ્રી જૈન મહાસંઘ દ્વારા કામરાજ મેમોરીયલ હોલમાં સાધર્મિક બંધુઓની સેવા અને સહાયતાર્થે ''કાવ્યધારા કવિ સંમેલન''નું આયોજન કરાયું હતું. સાંજના ચૌવિહાર બાદ કાવ્ય ધારાના સૂત્રધાર ઉદયપુરથી પધારેલ જૈન દર્શન કવિ કુલદીપ પ્રિયદર્શીએ નવકાર મંત્રને વંદન કરી ગીત સંભળાવી કાર્યક્રમની શરૂઆત કરાવી હતી.

જે પ્રાણી જેનું સ્મરણ નિત્ય પ્રતિ કરે છે,
કાળની વાત છોડો મહાકાળ પણ ડરે છે,
નવપદમાં સમાયેલ સકળ સૃષ્ટિનો સાર છે એ મહામંત્ર નવકાર છે.

શ્રી કુલદીપ પ્રિયદર્શીએ ઉક્ત પંક્તિ સંભળાવી ત્યારે સમસ્ત સદન નવકારમય બની ગયું હતું.

ત્યારબાદ કાર્યક્રમના અતિથિઓ અને સંસ્થાના સદસ્યોએ દીપ પ્રજ્વલન કરવા સાથે કાર્યક્રમના મુખ્ય લાભાર્થી નોખા નિવાસી શ્રી દીપચંદજી (પપ્પુશા) રાહુલજી લુણીયા, દુન્દલાનિવાસી શ્રી સૂરજકુમાર ધોકા, ઉમ્મેદાબાદ નિવાસી શ્રીમતી સૂરજદેવી લુકચંદજી ભંસાલી, માંડવલા નિવાસી શ્રીમતી બદામીદેવી માંગીલાલજી ધોડા, શ્રી એમ.જી બોહરા, આનંદપુર નિવાસી શ્રી પન્નાલાલ વૈભવકુમારજી સંઘવી, સિયાણા નિવાસી શ્રી બાબુલાલજી બી. મહેતા. ઓટવાલા નિવાસીશ્રી સુરેશજી તિલોકચંદજી કાગરેચા, સાયલા નિવાસીશ્રી ભંવરલાલજી ભારતાજી ફોલામુથા, જોધપુર નિવાસી શ્રી કનકરાજજી હંજારીમલજી ભંડારી, બાલી નિવાસી શ્રી પુખરાજજી ભરતકુમારજી જૈન, સાન્ડેરાવ નિવાસી શ્રીમતી શારદાદેવી મનોહરલાલજી જૈન, ઉમ્મેદાબાદ (ગોલ) નિવાસીશ્રી રાજેશજી ધોકા, શ્રી ટીકમચંદજી ભીમાજી તલાવત, નાગોર નિવાસી શ્રી મોહનલાલજી સુનિલકુમારજી કાલા, સાયલા નિવાસી સંઘવી શ્રી સુખરાજજી સમરથમલજી ફોલામુથા, શ્રી એમ. કે. જૈન, શ્રી માંગીલાલજી દેશરલા, શ્રી પારસજી ચૌધરી અને શ્રી કાંતિલાલ ભંડારી વિગેરેનું મહાસંઘ દ્વારા તિલક, માળા, શાલ અને પ્રતિ ચિન્હ પ્રદાન કરી બહુમાન કરાયું હતું.

કાવ્યાધારાના કાર્યક્રમની શરૂઆત શ્રી કુલદીપ પ્રિયદર્શીએ મહાવીર, ગુરૂવંદનાથી કરાવી હતી. મા વીણાપાણી (શ્રી સરસ્વતી દેવીની વંદના આગરાથી

પધારેલ કવિયિત્રી યોગિતા ચૌહાણે મધુર કંઠથી કરી ત્યારે સમસ્ત સદન તાળીઓના ગડગડાટથી ગુંજી ઉઠ્યું હતું. ત્યાર પછી મુન્ના બેટરીએ હાસ્ય કવિતાઓ દ્વારા શ્રોતાજનોને હસાવી લોટપોટ કરી દીધા હતા. કવિ અશોક ચારણએ ધારા ૩૭૦ પર પોતાનો કાવ્યપાઠ પોતાની ચર્ચિત રચના તિરંગા સુનાતે હુએ ઔરત ક્યા હૈ ? રચનાનો પાઠ કરી સૌને મંત્રમુગ્ધ કરી દીધા હતા. અને શ્રોતાજનોએ વંદે માતરમ્‌ના નારા લગાવી સ્વાગત કર્યુ હતું. હાસ્ય કવિ લટુરી લટ્ટે નાની-નાની કવિતાઓ દ્વારા સહુને પેટ પકડીને હસાવ્યા હતા. કાવ્યધારાનું કાવ્યમયી સંચાલન કરી રહેલ શ્રી કુલદીપ પ્રિયદર્શીએ કાવ્યપાઠ કરવા સાથે સુખ-દુઃખ અને દરેક સંકટમાં જે માતાએ સાથ આપ્યો એબાળકે નાથ બનતાં જ એમને જ અનાથ કરી દીધા. જેને પોતાનું દુધ પીવરાવ્યું એના નસીબમાં રોટલાનો ટુકડો નથી. નજર કરો સમસ્ત સૃષ્ટિ પર મા થી કોઈ મોટું નથી. આ રચના સંભળાવતા કવિ સંમેલનમાં શ્રી કુલદીપ પ્રિયદર્શી ચારેબાજુથી છવાઈ ગયા હતા.

શ્રી જૈન મહાસંઘ દ્વારા બધા જ કવિઓને પ્રતિક ચિન્હ પ્રદાન કરી બહુમાન કરાયું હતું અને સંસ્થા તરફથી સુરેશ કામરેચાએ સહુ લાભાર્થીઓ, અતિથિઓ, કવિઓ અને આ કાર્યક્રમને સફળતા અપાવવા માટે આભાર વ્યક્ત કર્યો હતો. શ્રી એમ.જી. બોહરાએ સૂત્રધાર શ્રી કુલદીપ પ્રિયદર્શીને સફળ આયોજન કરવા માટે વિશેષરૂપથી વધાઈ આપી હતી. બીજા દિવસે નગરમાં કવિ સંમેલનની ચર્ચા મુખ્યરૂપથી થઈ હતી.

ભાવભીની શ્રદ્ધાંજલિ

થરાદ નિવાસી મુંબઈ સ્થિત સ્વ. હીરાલાલ હાલચંદભાઈ વોરાના ધર્મપત્નિ તથા અ.ભા.શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદના રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષશ્રી રમેશભાઈ ધરૂના બહેન **રસીલાબેન વોરા**નું તા. ૧૮-૧૦-૨૦૧૯ના રોજ મુંબઈ ખાતે દુઃખદ અવસાન થયેલ છે. જે સદ્‌ગત આત્માને પરમકૃપાળુ પરમાત્મા ચિર શાંતિ અર્પે એજ અભ્યર્થના સહ...

રસીલાબેન વોરાને

શાશ્વત ધર્મ - ગુર્જર જૈન જ્યોત પરિવાર અંતઃકરણપૂર્વક ભાવભીની શ્રદ્ધાંજલિ અર્પે છે.

ઉત્સવલાલથી મુનિરાજશ્રી તારકરત્નવિજયજી મ.સા.

આદિનાથ કે સંયમ માર્ગ સે તુમ એક નયા ઈતિહાસ યે રચના,
રાજેન્દ્ર - જયંત કે માર્ગ સે લોગોં કો તુમ રાહ દેના (૧)
ધીસી-સમરથ કે હો ઉત્સવ બાગ મેં જન્મ હુઆ તુમ્હારા,
કુંવાર સુદી ૩, ૧૪ અક્ટુમ્બર જન્મદિન તુમ્હારા હૈ (૨)
શાદી કરકે તુમને ઉત્સવ સંસાર સમુન્દર-સા મનાયા,
રાજુલ જૈસી રાજુલ કો નેમ બનકર સાથે હૈ લાયા (૩)
રાજુલ ને આકર ઉત્સવ કો જીવન કો દી થી નઈ ધારા,
ઉત્સવ કો રાજુલ સે મીલા હૈ આશિષ - પ્રિતેશ કા ઉપહારા (૪)
ગુરૂ ચરણો મેં આશિષ દેકર ઉત્સવ તુમને કીયા કમાલ,
આશિષ ને અજિતસેન બનકર મચાઇ ધર્મ મેં નઈ ધમાલ (૫)
ચૌહાનવંશ કે તુમ હો ઉત્સવ ધર્મ માર્ગ પર સદા ચલે રહો,
જીવનોત્સકી રાહ ચલે હો યહ અહોભાગ્ય હમારા હૈ (૬)
૨૯ જુન સન ૧૨ મેં ધન્ય હુઆ જીવન તુમ્હારા ગુરૂ જયંત કૃપા પાને પર
સાયલા સંઘને મનાયા ઉત્સવ ઉત્સવ કે તારકરત્ન બનને પર (૭)
સંયમ કી રાહ પકડેં આજ જયંત પથ પર આગે બઢો,
સારા સંઘ સાથ હોગા, તારક તુમ્હારા જન્મોત્સવ મનાને પર (૮)

તપસ્વીરત્ન મુનિરાજશ્રી તારકરત્ન વિજયજી મ.સા.

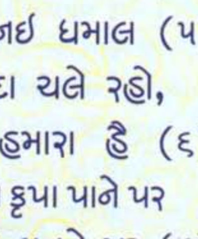

સંસારી નામ : શ્રી ઉત્સવલાલજી, જન્મ સ્થળ : બાગ (મ.પ્ર.)
જન્મ તારીખ : ૧૪-૧૦-૧૯૫૬, માતા-પિતા : ધીસીબાઇ - સમરથમલ
સંસારી શ્રાવિકા : રાજુલાદેવી, દીક્ષા સ્થળ : સાયલા (રાજ.),
દીક્ષા તિથિ : સંવત ૨૦૬૮ અષાઢ સુદ ૧૦ તા. ૨૯-૬-૨૦૧૨
દીક્ષા દાતા : પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્યદેવ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.

પૂજ્ય મુનિરાજશ્રી વિનીતરત્ન વિજયજી મ.સા.નું અમરનગર - જોધપુર ખાતે દેવલોક ગમન

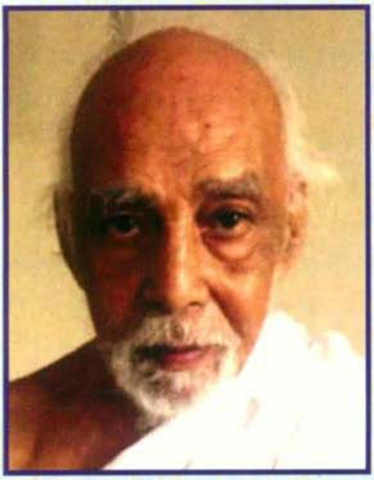

પુણ્ય સમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના પટ્ટધર ધર્મ દિવાકર, ગચ્છાધિપતિ શ્રીમદ્‌વિજય નિત્યસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., ભાંડવપુર તીર્થોદ્ધારક આચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયરત્ન સૂરિશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાનુવર્તીઅને પુણ્ય સમ્રાટના શિષ્યરત્ન વયોવૃદ્ધ તપસ્વીરત્ન મુનિરાજશ્રી વિનીતરત્નવિજયજી મ.સા.એ તા. ૩-૧૦-૨૦૧૯ના રોજ અમરનગર - જોધપુર (રાજ.)ના શ્રી સંભવનાથ રાજેન્દ્ર જૈન શ્વે. મંદિરના ઉપાશ્રય ખાતે નવકાર મહામંત્રના જાપ કરવા સાથે સમાધિપૂર્વક દેવલોક ગમન કરી ગયા હતા. સ્વર્ગસ્થ મુનિરાજ ભગવંતના અંતિમ દર્શન માટે ભક્તોની ભીડ જામી હતી. અને સહુએ દર્શન-વંદન કર્યા હતા. તા. ૪-૧૦-૨૦૧૯ના રોજ બપોરે સ્વર્ગસ્થ મુનિરાજશ્રી વિનીતરત્ન વિજયજી મ.સા.ની અંતિમયાત્રા (પાલકી) તારા જૈન ભવન, અમરનગર, જોધપુર ખાતેથી બેન્ડવાજાની સુરાવલીઓ વચ્ચે નીકળી ઓસવાલ સ્વર્ગાશ્રમ સિવાંચીગેટ પહોંચી હતી. ત્યાં લાભાર્થીપરિવાર દ્વારા સન્માનપૂર્વક અગ્નિસંસ્કાર કરાયા હતા. સ્વર્ગસ્થ મુનિરાજશ્રી વર્તમાનમાં વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી વીરરત્નવિજયજી મ.સા.ની નિશ્રામાં જોધપુર ખાતે ચાતુર્માસ બિરજમાન હતા. સ્વર્ગસ્થ મુનિરાજશ્રીનો જન્મ રાજસ્થાનના સિયાણાનગરે થયો હતો. સંવત ૨૦૪૮ના પોષ સુદ ૬ તા. ૨૮-૧-૨૦૦૨ના રોજ પુણ્યસમ્રાટ આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેનસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના શિષ્યરૂપે તેમના વરદ્‌હસ્તે સિયાણા ખાતે દીક્ષા ગ્રહણ કરી હતી. દીક્ષા પછી વરિષ્ઠ મુનિરાજશ્રી વીરરત્નવિજયજી મ.સા.ની નિશ્રામાં રહી નિરંતર તપ-જપ સાથે સંયમજીવનનું પાલન કરી રહ્યા હતા.

કલિકુંડતીર્થોદ્ધારક આચાર્યશ્રી રાજેન્દ્રસૂરીશ્વરજી મહારાજની નિશ્રામાં સમેતશિખર તીર્થના બે છ'રી પાલિત સંઘ આવ્યા હતા અને એ સમયે જ એમણે નૂતન કલિકુંડ તીર્થધામ નિર્માણનું કાર્ય પણ સંપૂર્ણ કર્યું હતું. પરમાત્માની ઉપાસના કરવાની સાથોસાથ એમની દૃષ્ટિ પરમાત્માથી વિખૂટા પડી ગયેલા સરાક પર પડી. એમને આ જાતિનો ભરપૂર પ્રેમ મળ્યો. એમના સન્માન અને અગાધ આદર સાંપડ્યા. આ પ્રજામાં ઊંડે ઊંડે પડેલા જૈનત્વના સંસ્કાર આચાર્યશ્રી પામી ગયા અને આથી એમણે જોયું કે જૈન ધર્મની મુખ્ય ધારાથી જરા દૂર ગયેલા આ સરાક ભાઈઓમાં ધર્મસંસ્કારના બીજ તો પડેલા જ છે, એનું સંવર્ધન કરવાની જરૂર છે. આમાંથી એક પ્રચંડ અભિયાનનું આયોજન થયું.

પૂ. આચાર્ય શ્રી રાજશેખરસૂરીશ્વરજી મ.સા.ના શુભાશિષથી પરમ પૂજ્ય આ.વિ. શ્રી રાજપરમસૂરીશ્વરજી મ.સા.એ ઝારખંડના એ દુર્ગમ પ્રદેશોમાં જઈને પોતાના ગુરૂદેવની અંતિમ ભાવના પૂર્ણ કરવા માટે ભગીરથ પ્રયાસ શરૂ કર્યા. આ શ્રી રાજરત્નસૂરિજી અને આ. શ્રી રાજહંસસૂરિનો સાથ મળ્યો, તો જૈન સમાજના ગૌરવશિખર સમાશ્રી કુમારપાળ વી. શાહ અને કલ્પેશ શાહનો સથવારો સાંપડ્યો. આને પરિણામે ગુજરાત, રાજસ્થાનના જૈન સમુદાયથી દૂર-દૂર અજાણ્યા પ્રદેશમાં જૈન ધર્મના સંસ્કારોનું વાતાવરણ ગુંજી ઊઠ્યું.

જરા દૃષ્ટિપાત કરીએ પહેલાં આ સરાક જાતિ પર. ભગવાન મહાવીરની ભૂમિ એવા બિહાર, બંગાળ, ઝારખંડ અને પૂર્વ ભારતનાં રાજ્યોમાં વસતી સરાક જાતિને જૈન સમાજ ભૂલી ગયો હતો. આ સરાક જાતિના લોકો આદિવાસી પ્રજા તરીકે ઓળખાતા હતા. પરંતુ એમણે એમના અહિંસાના સંસ્કારો જાળવી રાખ્યા હતા. આજથી એકસો વર્ષ પહેલાં પૂર્વ ભારતની તીર્થભૂમિઓ પર યાત્રાએ આવતા જૈન સમાજના શ્રાવકોને એ કલ્પના પણ આવતી નહોતી કે એમના જ ધર્મબંધુઓ આસપાસના ઘોર જંગલોમાં કપરી અવસ્થામાં કઠિન જીવન ગાળી રહ્યા છે.

બિહાર, બંગાળ, ઝારખંડ, અરૂણાચલ પ્રદેશ, આસામ અને ઉત્તરપ્રદેશના રાજ્યોમાં આ જાતિમાં ૩૫ લાખથી વધુ લોકો વસે છે. નોંધપાત્ર વાત ગણો તો અને પારાવાર અફસોસની વાત કહો તો આ સરાક જાતિ ''શ્રાવક જાતિ'' છે અને આ સરાક ભાઈઓ એ ભગવાન મહાવીર સ્વામીના આ શ્રાવકો છે એવું

સંશોધન કોઈ જૈન ઈતિહાસકાર કે ભારતીય વિદ્વાને નહીં, કિંતુ એક અંગ્રેજ ઈતિહાસવેત્તાએ કર્યુ હતું.

સરાક જાતિ અંગે કાર્ય કરવાનો પ્રારંભ ક્ષુલ્લક ગણેશપ્રસાદ વર્ણીઅને શ્રી શિતલપ્રસાદજીના શ્રદ્ધેય પૂ. મુનિ મંગલવિજયજીએ કર્યો. એ પછી આચાર્ય નમિસાગરજી મહારાજે આ ભૂમિ પર વિચરણ કર્યું અને એમની ઈચ્છા હતી કે સરાક બંધુઓને પ્રેમપૂર્વક સ્વીકારવામાં આવે અને ધીરે ધીરે બેલચંપાના અહિંસા નિકેતન દ્વારા ''સરાક જૈન સમિતિ''ના માધ્યમથી આ કાર્યનો પ્રારંભ થયો. પૂ. પ્રભાકરવિજયજી મહારાજે પણ કાર્ય કર્યું.

આ કાર્યમાં એક નવો વેગ આવ્યો સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયના પરમ તપસ્વી શ્રી જગજીવનજી મહારાજ અને પરમ દાર્શનિક પૂ. શ્રી જયંતમુનિજી મહારાજથી. તેઓએ ઝારખંડમાં સ્થિર થઈને ધૂણી ધખાવીને માત્ર સરાક જાતિ જ નહીં, પણ સમગ્ર આદિવાસી જાતિના ઉત્કર્ષનું પ્રચંડ કાર્ય કર્યુ. ઈ.સ. ૧૯૫૦ની આસપાસ એમણે વીસ તીર્થંકરોની પરમ પાવન નિર્વાણ ભૂમિ પર વિહાર કરીને એક નવો ઈતિહાસ રચ્યો. કોલકાતાના હર્ષદ દોશી નામના સેવા પરાયણ લેખકે ''સાધુતાનું શિખર અને માનવતાની મહેંક'' નામના ગ્રંથમાં એ મહાન પુરુષાર્થને શબ્દબદ્ધ કર્યો છે.

એ જ રીતે કલિકુંડ તીર્થોદ્ધારક, પ્રભાવક પૂજ્ય આચાર્યશ્રી રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મહારાજે શ્રી સમેતશિખર મહાતીર્થ પર યોજાયેલા પતિષ્ઠા મહોત્સવ બાદ પોતાના મહાત્માઓને સરાક ક્ષેત્રમાં વિચરણ કરવાનો આદેશ આપ્યો અને એકેએક ગામમાં જઈને ધર્મોપદેશ દ્વારા જાગૃતિ લાવવાનો પ્રયાસ કર્યો. જિનાલયોનો જિર્ણોદ્ધાર, વિધવા બહેનોને સહાય, વસ્ત્રદાન, ગૃહઉદ્યોગ, ધાર્મિક શિબિર, ગ્રામ શિબિર, પાઠશાળાનું નિર્માણ, યુવાનોને ધાર્મિક વિધિની તાલીમ, સમગ્ર ગામનું સમુહ ભોજન જેવાં પ્રયત્નો કર્યા. ગુરૂદેવના દીક્ષા દિવસની સ્મૃતિ નિમિત્તે સરાક ગામોમાં વીસ હજાર જેટલી નોટબુકોનું વિતરણ કરવામાં આવ્યું. પર્યુષણની આરાધના કરવામાં આવી.

એક એંસી વર્ષના વૃદ્ધા સ્વપ્નની ઉછામણી લેવા માટે જીવનભરની કમાણીરૂપ પંદર રૂપિયા લઈને આવ્યા હતા. પરંતુ એમને ચડાવો ન મળતા ઘેર જઈને બીજા પંદર રૂપિયા લઈ આવ્યા. એમાં ઉછામણી પ્રાપ્ત ન થતાં એમની આંખોમાંથી આંસુ ઉમટી આવ્યા. એ પછી ઉછામણીની બોલી તો મોટી થઈ. પરંતુ રાજ્ય પરિવારના કાર્યકર્તાઓએ પંદર રૂપિયા જ લઈને ગરીબ વૃદ્ધાને એનો લાભ આપ્યો, ત્યારે વૃદ્ધાને એમ લાગ્યું કે એમનું જીવન ધન્ય થઈ ગયું.

આ સરાક જાતિની એક વિશેષતા એ છે કે તેઓના ગોત્ર ચોવીસ તીર્થંકરોનાં નામ પર મળે છે. આવી ભૂમિ પર વસતા સરાક ભાઈઓ ઋષભદેવ, ધર્મદેવ, શાંતિદેવ, અનંતદેવ, ગૌતમ જેવાં ગોત્ર ધરાવે છે. આગોત્ર જ એમના મૂળનું સૂચન કરે છે. પશ્ચિમ બંગાળના ધનબાદ જિલ્લાની જ વાત કરીએ તો ૧૯૭૦ની આસપાસ આ જિલ્લાના ૮૯ ગામોમાં સરાક લોકો વસતા હતા અને અહીં ધર્મદેવ ગોત્ર, આદિદેવ ગોત્ર, ગૌતમ ગોત્ર ધરાવનારા સરાક લોકો રહેતા હતા. એમાં એકલા પુરાના વેડો, ગદ્દી વેડો, બગીચા વેડો ગામમાં ત્રણ હજાર સરાકના ચારસોને પચાસ ઘર હતા. આ ઉપરાંત આ જ બે જિલ્લામાં ધાગાબંધ ગામના એકસો ઘરોમાં ૬૪૫ સરાક, પુરલિયા જિલ્લાના વોહરા ગામમાં ૫૩૫, ઝાપડા ગામમાં ૫૨૬ અને નુદણા, સિનેડા, વેલુર ગામમાં ૪૫૦ જેટલાં સરાક લોકો વસતા હતા. ક્યાંક ગુજરાતી ગોત્ર, અગ્રવાલ ગોત્ર કે ખંડેલ ગોત્ર ધરાવતા સરાક જાતિના લોકો પણ મળે છે.

ભાષાશાસ્ત્રીઓનો એવો મત છે કે "સરાક સંસ્કૃતના શ્રાવક" તથા પ્રાકૃતના સાવગ શબ્દનું અપભ્રંશ છે. જેનો અર્થ થાય છે શ્રદ્ધાનું પાત્ર. વિચાર કરનાર તથા આચરણશીલ પણ આ ઈતિહાસવિદો અને ભારતીય તથા વિદેશી વિદ્વાનો એવો વિચાર કરે છે કે "શ્રાવક" શબ્દનો પ્રયોગ પ્રાચીન કાળથી જ જૈન ધર્માવલંબીઓ માટે કરવામાં આવે છે. બીજા શબ્દોમાં "સરાક" અથવા "શ્રાવક" તીર્થંકર પાર્શ્વનાથ અથવા મહાવીરના બતાવેલા સિદ્ધાંતો પર વિશ્વાસ કરવાવાળા લોકો છે.

"સરાક" જાતિનું મૂળ નિવાસ દક્ષિણ બિહારની સીમા, ઝારખંડ, બંગાળ અને ઓરિસાના મુખ્ય વન્ય વિસ્તારોમાં રહ્યું છે. તેથી એમને પણ લોકો અન્ય જનજાતિઓની જેમ આદિવાસી કહીને સંબોધિત કરે છે. સરાક લોકોની પ્રધાનતા ઉપરના રાજ્યોનાં સિંહભૂમિ, રાંચી દુમકા, વીરભૂમ, ધનબાદ (પાન્ડ્ર દેશ) સંથાલ, પરગના, બાંકુરા, વર્ધમાન, પુરુલિયા, મેદિનીપુર, કટક, પુરી, ગંજામ, મયુરગંજ, ખુર્દા તથા બિહારના સંપૂર્ણ દક્ષિણી સીમા ક્ષેત્રોમાં આજે પણ જોવા મળે છે. આમાંના કેટલાંય ક્ષેત્રોમાં સરાક લોકોને સેરાબ, સેરાબગ જેવાં નામોથી પણ સંબોધિત કરવામાં આવે છે. સરાક પ્રજા, એનો ઈતિહાસ, એની સંસ્કૃતિ અને એની પ્રણાલિઓ વિશે જરા ઊંડો અભ્યાસ કરીએ તો જૈન ઈતિહાસનો એક સુવર્ણ અધ્યાય પુનઃ પ્રાપ્ત થાય છે જે વિશે હવે પછી જોઈશું. (ક્રમશઃ)

- કુમારપાળ દેસાઈ

(સાભાર - ગુજરાત સમાચાર)

પીપલોદા નગરની ધન્ય ધરા પર શ્રી પંચમંગલ મહાશ્રુત સ્કંધ મહામંગલકારી શ્રી ઉપધાન તપ આરાધના સંપન્ન

મહા મંગલકારી શ્રી ઉપધાન તપારાધનાના લાભાર્થી પરિવારો તા. ૮-૧૦-૧૨-૧૪-૧૬ સપ્ટેમ્બર એ રીતે પ્રથમ, દ્વિતીય, તૃતિય, ચતુર્થ, પંચમ આ પાંચેય નિવિનો લાભ થરાદ નિવાસી શ્રીમતિ બબીબેન રાજમલભાઈ બાદરમલભાઈ વોરા પરિવાર, તા. ૧૮ સપ્ટેમ્બર છઠ્ઠી નિવિનો લાભ થરાદ નિવાસી ચંપાબેન કાંતિલાલ ભણશાળી, પુત્રવધુ પુષ્પાબેન યશવંતભાઈ ભણશાલી, પુત્ર ચિ. અમિત, સુપુત્રી આશીની સ્મૃતિમાં ભણશાલી મણીલાલ જીતમલભાઈ પરિવાર, તા. ૨૦ સપ્ટેમ્બર સાતમી નિવિનો લાભ થરાદ નિવાસી શ્રીમતી કાન્તાબેન બાબુલાલ લલ્લુભાઈ વોરા પરિવાર નડિયાદ, તા. ૨૨ સપ્ટેમ્બર આઠમી નિવિનો લાભ થરાદ નિવાસી શ્રીમતી શાંતાબેન શાંતિલાલ મણીલાલ વોહેરા પરિવાર નડિયાદ, તા. ૨૪ સપ્ટેમ્બર નવમી નિવિનો લાભ થરાદ નિવાસી ભણસાળી શાંતિલાલ ઓખાલાલ પરિવાર અમદાવાદ - સુરતતા. ૨૬ સપ્ટેમ્બર દસમી નિવિનો લાભ વાસણા નિવાસી શ્રીમતી સુંદરબેન અમુલખભાઈ કકલદાસભાઈ ધરૂ પરિવાર તા. ૨૮ સપ્ટેમ્બર અગિયારમી નિવિનો લાભ ગુડાબાલોતાન (રાજ.) નિવાસી શા. માંગીલાલજી, અંબાલાલજી, ઈન્દરમલજી, અરવિંદ, ભરત, અભિષેક, રાજરત્ન, સિદ્ધાંત બેટા - પૌતા - શા. મુનિલાલજી સરૂપજી રામાણી સહ પરિવાર, ચેન્નઈ-સિમોગા, તા. 30 સપ્ટેમ્બર બારમી નિવિનો લાભ ઉજ્જૈન (મ.પ્ર.) નિવાસી માતુશ્રી શ્રીમતી રતનબાઈ મહેતાની સ્મૃતિમાં શેઠ સીતારામજી ભંવરલાલજી સમસ્ત મહેતા પરિવાર

તા. ૨ ઓક્ટોબર તેરમી નિવિનો લાભ બડનગર (મ.પ્ર.) નિવાસી શા. તારાચંદજી શંકરલાલજી, પુત્ર હીરાલાલજી, મુકેશજી, રાજેશજી દંગવાડા પરિવાર, તા. ૪ ઓક્ટોબર ચૌદમી નિવિનો લાભ થરાદ નિવાસી શ્રીમતી બબીબેન અમૃતલાલ વીરચંદભાઈ વોહેરા, શ્રી હિંમતભાઈ, શ્રીમતી કંચનબેન, પુત્ર-પુત્રવધુ, રાજુભાઈ - ચેતનાબેન, વિરેનભાઈ - રશ્મિબેન, રીકિનભાઈ - કેનાબેન, પૌત્ર : ઋત્વિક, હસીલ, મિશ્વ, તત્વ, દિયાન, રિયાન, સરગમ સહપરિવાર અમદાવાદ તા. ૬ ઓક્ટોબર પંદરમી નિવિનો લાભ જેતડા (ગુજ.) નિવાસી શ્રીમતી જાસુદબેન મફતલાલ વીરચંદભાઈ

વોહેરા પરિવાર, ભરતકુમાર - રમીલાબેન, પુત્ર-પુત્રવધુ - રીંકિ - કીંજલ, પૌત્ર : આકાશ, પ્રકાશભાઈ - અલકાબેન, પુત્ર હર્ષિલ, પુત્રી ઉજાલી સહપરિવાર આલાપ - અમદાવાદ તા. ૮ ઓક્ટોબર સોળમી નિવિનો લાભ લેંડગાંવ નિવાસી શ્રીમતી ચાંદબાઈ ચાંદમલજી તાંતેડ શ્રી ઝકમલાલજી, મનોહરલાલજી, પ્રકાશ, સુનિલ, મોહિત, જૈનમ, શંખેશ, કવિશ, કુ. ઉર્વશી, કુ. ચેતના, કુ. સંસ્કૃતિ તાંતેડ પરિવાર ધાર (મ.પ્ર.) તા. ૧૦ ઓક્ટોબર સતરમી નિવિનો લાભ સ્વ. શ્રીમતી થુરીબાઈ ઉફરીયા જાવરાવાળાની સ્મૃતિમાં છાજેડ પરિવાર તા. ૧૨ ઓક્ટોબર અઢારમી નિવિનો લાભ પરમ ગુરૂભક્ત પરિવાર બડનગર અને ગુરૂભક્ત પરિવાર. તા. ૧૪ ઓક્ટોબર ઓગણીસમી નિવિનો લાભ રેવતડા (રાજ.) નિવાસી શા. મુનિલાલજી મંગલચંદજી હિરાણી પરિવાર, ચેન્નઈ ૧૬ ઓક્ટોબર વીસમી નિવિનો લાભ દુધવા નિવાસી શ્રીમતી કાન્તાબેન ચંદુલાલ મફતલાલ વોહેરા પરિવાર, થરાદ ૧૮ ઓક્ટોબર એકવીસમી નિવિનો લાભ સંઘવી બાલીબાઈ સાગરમલજી, પુત્ર નગીનલાલ, મનોહરલાલ, અશોકકુમાર, પૌત્ર - મનીષ, અમિત, અંકિત. પ્રપૌત્ર : અંકુર, અંશુલ, પર્વ, દર્શ, અવ્ય, આયુ સમસ્ય છાડેજ પરિવાર (પારા-જાબુઆ) (મ.પ્ર.) તા. ૨૦ ઓક્ટોબર બાવીસમી નિવિનો લાભ થરાદ નિવાસી વોરા મથુરીબેન ચિમનલાલ ત્રિભોવનદાસ પરિવાર, પુત્ર - મહેન્દ્રભાઈ, પુત્રવધુ : સરોજબેન, પૌત્ર : તેજસ, પારસ, શ્રેયાંશ, પૌત્રવધુ - મીકી, સપના, નિધિ, પ્રપૌત્ર- પ્રથમ, દેવમ, જય, પ્રપૌત્રી - ઈશા, પિયા, આર્યા સમસ્ત પરિવાર લીલામણી ગ્રુપ - અમદાવાદ તા. ૨૨ ઓક્ટોબર ત્રેવીસમી નિવિનો લાભ સ્વ. ચંદાદેવી રાજમલજી દુગ્ગડની સ્મૃતિમાં શ્રીમતી સંકુતલા - કાંતિલાલ, સુનિતા - રાજકમલજી, રીતિક - જયણા દુગ્ગડ પરિવાર (રતલામ મ.પ્ર.) શ્રીમતી ભારતી કમલેશજી ઓસ્તવાલ, ભીલવાડા સહપરિવાર, શ્રીમતી શોભા, શ્રીપાલજી સિસોદીયા નિમ્હાહેડા સહપરિવાર. ૨૪ ઓક્ટોબર ઉપધાન તપ આરાધના પારણાનો લાભ નેનાવા નિવાસી સ્વ. શણગારીબેન ચુનીલાલ છાજેડ, સુપુત્ર - સ્વ. જીવરાજજી તિલોકચંદજી કાંતિલાલ છાજેડ પરિવાર અને સ્વ. રમણલાલજી, સ્વ. અંબાલાલજી, ધર્મપત્નિ સ્વ. શ્રીમતી મફીબેન બુરડ પરિવાર (વાઘાસણવાળા) નેનાવા મેટલ અંબુજા ગ્રુપ.

(प्रासङ्गिकम्)

चातुर्मास-क्या पाया ? कितना पाया ?

(पुण्यसम्राट् गुरुदेव श्री के शिष्य मुनि श्री निपुणरत्नविजयजी म.सा.)

श्री उत्तराध्ययन सूत्र..... अध्ययन 10 वाँ....द्रुम पत्रक.... 37 गाथा में 36 बार लिखा है – समयं गोयम ! मा पमायए...

बहुत ही अर्थ गम्भीर एवं अनुप्रेक्षीय है यह वीरवचन ...

* प्रमादो ही मृत्यु (उपनिषद्)
* धम्मस्स सारमुबलब्भ करे पमायं ? (पुक्खरवर सूत्र)
* चिंतामणिं पातयति प्रमादात् (सिन्दूर प्रकरण)
* मानुष्य प्राप्य कः प्रमादो मे (प्रशमरति प्रकरण)
* धर्म न कुरूषे मुर्ख ! प्रमादस्थ वशंवद (योगसार)
* खणमवि मा काहिसि पमायं (उपदेशमाला)

इन सारे शास्त्र वचनों का भी यही संदेश है कि एक क्षण भी प्रमाद नही करना चाहिये प्रमाद अर्थात् मात्र आलस करना ही नहीं है। प्रमाद के पांच प्रकार हैं।

मद, विषय, कषाय, निद्रा एवं विकथा। इसे विस्तृत रूप से समझने जैसा है। लेकिन इस लेख में विस्तार नहीं हो सकता। उसके लिये नया लेख ही लिखना पड़ेगा।

इस लेख में तो हमें चिन्तन यह करना है कि परमात्मा ने एक समय का भी प्रमाद न करने को कहा है। एक समय का माप क्या है? आंखों की एक पलक में असंख्य समय बित जाते हैं, तो एक समय कितना सूक्ष्म होगा। असंख्य समय बराबर 1 सेकन्ड, फिर 1 मिनिट, फिर 1 घंटा, 1 दिन, 1 सप्ताह, 1 पक्ष, 1 माह, 1 वर्ष, सम्पूर्ण जीवन ..... कितना समय पूर्ण हो जाता है। जीव मात्र के पास समय समान है, लेकिन उपयोग समान नहीं है। कोई एक-एक पल का सदुपयोग कर रहा है, तो कोई सारा समय प्रमाद में बिता रहा है। मूल्यवान समय और अनमोल मानव जन्म का संयोग हो, और प्रमाद करना मूर्खता के अलावा क्या हो सकता है। जन्म मानव का और काम पशुओं के करना बुद्धिमानी नहीं हो सकती है। पशु भी अपना कर्त्तव्य अपनी पूरी निष्ठा से

निभाते हैं। उनके जीवन में भी ऐसे गुण हैं, जो मनुष्य के लिए आदर्श हैं।

इस लेख का विषय है क्या पाया ? कितना पाया ? चातुर्मास में ..... परमात्मा की आज्ञानुसार हजारों श्रमण-श्रमणी भगवंत नवकल्प में से एक ऐसे चातुर्मास कल्प का पालन करते हुए योग्य स्थान में श्री संघ की आज्ञा लेकर 4 माह स्थिरता करते हैं और धर्माराधना में लीन बनते हैं। चातुर्मास में वर्षा के कारण असंख्य जीवों की उत्पत्ति होने से संयम विराधना न हो, तद हेतु एक ही स्थान में रहने की परमात्मा की आज्ञा है। श्रमण-श्रमणी भगवंत चारों माह स्व साधना का लक्ष्य बनाकर चातुर्मासिक स्थिरता करते हैं।

प्रत्येक वर्ष नये नये संघों में चातुर्मास करना। संघ के लिए श्रमण भी नये और श्रमण के लिये संघ भी नया। लेकिन फिर भी हर चातुर्मास में श्रमण-श्रमणी पूर्ण उत्साह के साथ, स्व साधना के साथ श्रीसंघ में धर्म का उद्यम हो, धर्म की निष्ठा बड़े, धर्म की प्रभावना हो, एकमात्र यही लक्ष्य रखकर, अपनी आचारों की मर्यादा में रहकर, देव गुरु के अनुशासन पालन करते हुए, पूर्ण विवेक पूर्वक, भक्ति पूर्वक, प्रसन्नता पूर्वक, समता पूर्वक, धर्माराधना का उपदेश प्रेरणा देते हैं। जिनवाणी का नित्य श्रवण करवाकर सभी को संसार की असारता, भोगों की भयंकरता, कर्मों की विचित्रता, सम्पत्ति की नश्वरता, देह की क्षणभंगुरता, रागादि भावों की विषमता, दानादि धर्मों की विशेषता, आत्मा की शाश्वतता, मोक्ष की उपादेयता, आदि सम्यग् बोध करवाते हैं। नित नये अनुष्ठानों के द्वारा बाल जीवों को धर्मानुरागी एवं धर्म के प्रति आकर्षित करते हैं, उत्तम आत्माओं को पाप भीरूता, भवनिर्वेद, विषय वैराग्य का रसपान करवाते हैं, सब कुछ करते हैं। लेकिन निर्लेप रहकर मात्र साक्षी भाव से ..... अद्‌भूत है परमात्मा का शासन !! अद्‌भूत है श्रमण धर्म !!...... श्रमण कुछ भी न कहे तो भी बहुत कुछ सिखने जैसा है, उनके आचारों से, विचारों से, व्यवहार और समता युक्त जीवन शैली से ....

हर चातुर्मास हमारे लिये नया होता है, चातुर्मासार्थ पधारे श्रमण-श्रमणी भी नये..... सभी से कुछ नयी शिक्षा-संस्कार और दृष्टि प्राप्त होती है। लेकिन कब ? जब हम तैयार हों, तत्पर हों, समर्पित हों, अप्रमत्त हों..... बाकी तो जैसे थे.... वैसे.... मानव जन्म की सार्थकता इसी में है कि हम कुछ परिवर्तित हों ..... चातुर्मास हमारे लिये U turn होना चाहिये, लेकिन मात्र और मात्र अध्यात्म प्राप्ति के लिए ही। अनन्त काल के कुसंस्कारों को तोड़ने का कार्य ही मानव जन्म में करना है,

उसमें चातुर्मास उत्तम समय है । भारतवर्ष में ऐसे कई संघ है जहाँ वर्षों से कोई चातुर्मास नहीं हुआ, ऐसे भी संघ हैं जहाँ कई वर्षों के बाद चातुर्मास होता है, और ऐसे भी संघ है जहाँ हर वर्ष चातुर्मास होता है ।

बात यही है, हमारे लिए चातुर्मास कैसा रहा । मात्र चार माह का उमंग फिर वही राह, वही कदम, वही मुकाम....कैसे होगा जीवन सफल ? व्यापारी की नजर सिर्फ Turn over पर नहीं Profit पर भी होती है । चातुर्मास में तपस्या की लेकिन रसनेन्द्रिय का नियंत्रण हुआ ? सामायिक की लेकिन समता का विकास हुआ ? प्रवचन श्रवण किया लेकिन राग द्वेष कम हुए ? देखते ही देखते चातुर्मास पूर्ण होने आया । हमने क्या पाया ? वो तो हमें ही सोचना चाहिए । चातुर्मास पूर्ण होता है और जिनाज्ञा का पालन करते हुए ममत्व रहित ऐसे श्रमण-श्रमणी विहार करेंगे ..... थोड़े दिन सब सूना-सूना लगेगा । चातुर्मास की अनेक अविस्मरणीय यादें आती रहेगी, आंखों में आंसू की धारा बहती रहेगी । निस्पृह श्रमण एवं उदार संघों का संयोग हमेशा के लिए यादगार बन जायेगा । श्रमणों के हृदय में संघ एवं संघों के दिल में श्रमण बस जायेंगे ।

एक समय था जब सभी के मुख पर एक ही बात थी, पूज्य गुरु भगवंत आयेंगे, धर्म की गंगा बहायेंगे, हम उसमें डूब जायेंगे, प्रवचन सुनेंगे, तपस्या करेंगे, ऐसे-ऐसे कई सपने संजाये थे । आज सब कुछ बित गया, बस ! बिते पलों की याद आती रहेगी । जो हुआ परिवर्तन, वहीं चातुर्मास की उपलब्धि रहेगी।

पुण्य सम्राट् गुरुदेव श्री ने रतलाम चातुर्मास की पूर्णता प्रसंग पर अपने प्रवचन में सुन्दर बात कही थी.... **चातुर्मास अच्छा रहा, चातुर्मास सुन्दर रहा, चातुर्मास में बहुत आनंद आया.....** ये शब्द चातुर्मास की सफलता के सूचक हैं । **पूज्य गुरुदेव श्री की प्रसन्नता से बड़ी कोई उपलब्धि नहीं है** हमारी श्रद्धा, समर्पण और निष्ठा से ही हम सफल हो पायेंगे धर्म की राह पर ..... यही धर्म मोक्ष प्राप्ति का पुष्ट आलंबन है । चातुर्मास में प्राप्त शुभ भावों को जीवंत रखें । धर्माराधना की निरंतरता बनायें रखें । जो पाया है उसे बढ़ाते रहें । फिर अगले चातुर्मास के लिए तैयार रहें ।

■■■

त्रिस्तुतिक परम्परा में

श्री शत्रुंजय महातीर्थ छःरी पालक संघ यात्रा

(पुण्यसम्राट् ज्ञानाञ्जनम् पर्व–पाटण)

निर्मल निश्रा : प्रातः स्मरणीय गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

* थराद से सिद्धाचल महातीर्थ
* कड़ोद से सिद्धाचल महातीर्थ

निर्मल निश्रा : साहित्य विशारद श्रीमद्विजय भूपेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

* रतलाम से सिद्धाचल महातीर्थ
* शत्रुंजय से गिरनार महातीर्थ

निर्मल निश्रा : व्याख्यान वाचस्पति श्रीमद्विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

* राणापुर से सिद्धाचल महातीर्थ
* शत्रुंजय से गिरनार महातीर्थ

निर्मल निश्रा : व्याख्यान वाचस्पति श्रीमद्विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा.

* राजगढ़ से सिद्धाचल महातीर्थ
* बाग से सिद्धाचल महातीर्थ
* आहोर से सिद्धाचल महातीर्थ
* अहमदाबाद से सिद्धाचल महातीर्थ
* थराद से सिद्धाचल महातीर्थ
* शत्रुंजय से गिरनार महातीर्थ
* पारा से सिद्धाचल महातीर्थ
* पारा से सिद्धाचल महातीर्थ
* सायला से सिद्धाचल महातीर्थ
* वल्लभीपुर से सिद्धाचल महातीर्थ
* अयोध्यापुरम से सिद्धाचल महातीर्थ

उपलब्ध जानकारी के आधार पर संक्षिप्त में सूचि आपके सम्मुख प्रस्तुत हैं ।

कुमकुम सने पगलिये

प्रवचनों की गंगा में किया हजारों नें स्नान

पिपलौदा। गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर चल रहे पावनीय चातुर्मास महोत्सव में उपधान तप आराधक नित्य धार्मिक क्रियाएँ कर कठोर तपस्या में लीन रहे वहीं प्रतिदिन दूरदराज क्षेत्र से ग्रामीणजन व श्रीसंघ पहुँचकर प्रवचन का श्रवण कर दर्शन लाभ लेते रहे। मुनिराज तारकरत्नविजयजी म.सा. द्वारा आत्म भावना प्रार्थना करवाई। मुनिराज श्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा., मुनिराज प्रशमसेन विजयजी म.सा., मुनिराज श्री निर्भयरत्न विजयजी म.सा., साध्वी श्री भाग्यकलाश्री जी म.सा. आदि ठाणा उपस्थित थे। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम प्रचार सचिव प्रफुल जैन ने बताया कि आराधकों व लाभार्थियों का श्रीसंघ अध्यक्ष बाबूलाल धींग परिवार द्वारा बहुमान किया गया संचालन चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन ने किया।

गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि जिस प्रकार ठंडा हथौड़ा गर्म लोहे को तोड़कर इच्छानुकूल आकार में परिवर्तित्त कर देता है। इसी प्रकार शांत प्रकृति का जीव गर्म प्रकृति वाले जीव को प्रसंग आने पर सुधार सकता है व जीवन में शांत रहना लाभदायक व रोष रखना हानिकारक है इसी प्रकार पालक अपने बच्चों को धार्मिक पाठशाला, गुरुकुल एवं उपाश्रय में भेजकर संस्कारवान बना सकते हैं। मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने उत्तराध्यन सूत्र के बारे में बताया की जिस प्रकार बंद दुकान में रखे माल के बारे में दुकान खुलने पर ही पता चलता है उसी प्रकार मानव जब बोलना शुरू करता है उससे ही उसके सज्जन व दुर्जन होने का ज्ञात हो जाता है वाणी दिल को जीत भी लेती है व वाणी से आघात भी होता है अतः मानव को हमेशा संयमित वाणी का प्रयोग करना चाहिए।

मुनिराज श्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने विक्रम चरित्र के बारे में बताया कि अग्नि बैताल द्वारा विक्रम को सौ वर्ष की आयु बताकर कहा कि किसी भी प्रकार से मृत्यु नहीं हो सकती है तब विक्रम व अग्नि बेताल आमने-सामने हो गए और अग्नि बेताल ने विक्रम की आज्ञा में रहने का स्वीकार कर राज दरबार में उपस्थित रहकर विक्रम के आदेशों का पालन करने का निर्णय किया। मुनिराज तारकरत्न

विजयजी म.सा. द्वारा आत्म भावना प्रार्थना करवाई गई।

गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि उत्कृष्ट परंपरा एवं दिव्य विरासत का नाम है जैन धर्म।

जीव मात्र का कल्याण, मोक्ष रूपी अनंत सुख व आत्मा को पवित्र और पावन बनाने के साथ ही कुदरत के नियमों को तोड़े बगैर प्रकृति से प्रत्येक जीव से, समन्वय बनाकर जीने की राह दिखाता है यह धर्म जो अनादिकाल से चला आ रहा है व अनंतकाल तक चलता रहेगा अहिंसा, करुणा व मैत्री भाव की जो व्याख्या जैन धर्म में की गई है वह अन्यत्र दुर्लभ है साथ ही बताया कि प्रत्येक संयोग के साथ वियोग लगा हुआ है परन्तु प्रत्येक वियोग के तिलक पर विरह रूपी कोयले की राख या चमकी लगी हुई नहीं होती देव, गुरु धर्म की भक्ति में झूमते रहने से प्रभु के वियोग में उन्हें स्मृति में लाकर विरह की व्यथा का अनुभव करने से जीवन में चमत्कार सर्जित हो सकता है।

गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि मानव को यह नहीं समझना चाहिए कि वह भोगों का उपभोग कर रहा है क्योंकि भोगों ने मानव का उपभोग किया है जिससे मानव तपस्या करने में पीछे हट जाता है ऐसी ही तप आराधना महोत्सव पंच मंगल महाश्रुत स्कन्ध (उपधान तप) में भाग ले रहे आराधकों को तप, जप, आत्मिक साधना, संयम, विनय, विवेक, स्वाध्याय, कायोत्सर्ग, इंद्रियों का दमन, कसायों का समन, अणुव्रतों की संपदा, ज्ञान, ध्यान, मुनि जीवन के साथ ही गुरु वाणी सुनकर प्रमाद से परिहार करना होता है। उपधान तप को करने वाले भवि जीव श्रद्धावंत अनुक्रम से अजरामर स्थान मोक्ष को प्राप्त करने का अधिकार होता है।

गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि सज्जन का संग मानव व दुर्जन का संग दानव बनता है सज्जन पारसमणिजी की तरह व दुर्जन लोहे के समान होते हैं सज्जन ज्ञानी व सरल व्यक्तित्व के साथ ही उनका हृदय आर्द्र और स्निग्ध रहता है उनकी वाणी में हमेशा सत्यता रहती है जैसे श्रीफल ऊपर से कठोर व अंदर से मुलायम होता है उसी प्रकार दुर्जन का हृदय पत्थर जैसा रहता है जो ऊपर से मुलायम और अंदर से क्लिस्ट बेर की भांति होता है अतः मानव को सहज व सरल रहना चाहिए। प्रवचन के दौरान मुनिराज डॉ. सिद्धरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि जो जीव तप करता है वह कर्म श्रय कर उत्तम पद को प्राप्त करता है जैसे अमृत मिलने पर मृत्यु का डर समाप्त हो जाता है वैसे ही हमारे जीवन में तप रूपी अमृत आने पर जीवन अमर हो जाता है। दूध को तपाने से मलाई, अन्न को तपाने से स्वादिष्ट भोजन, सोने को तपाने से आभूषण बन जाता है

पिपलौदा में क्षण-क्षण बना धर्ममय

सेवा में श्री चेतन्यजी काश्यप

सेवा में श्री पारसजी जैन

सेवा में श्री वाघजीभाई वोरा

सेवा में श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा

सेवा में पैदल संघ

अपूर्व जनसमुदाय प्रतिदिन

पिपलौदा में पू. गच्छाधिपतीश्री के चातुर्मास की धूम

मासक्षमण तपस्वी नटवरसिंहजी राठौर

पुस्तक भेंट

माता-पिता वंदना तथा स्वामीवात्सल्य के लाभार्थी शिवपुरी गोस्वामी

कवि सम्मेलन

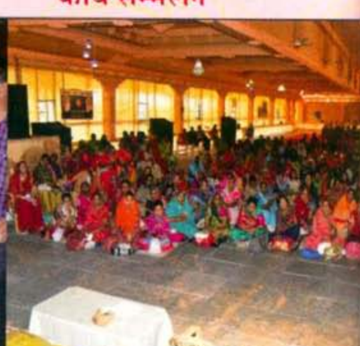

श्री नवपद ओली आराधना

पिपलौदा में धर्म आराधना की बिगुल बज रही है

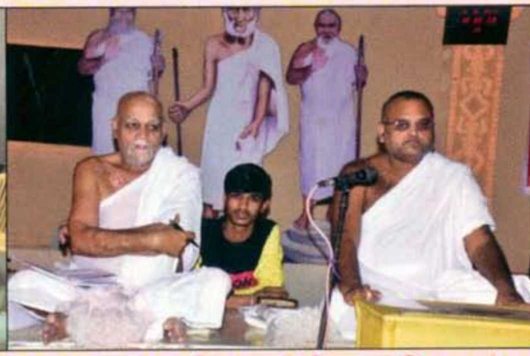

प्रवचन गच्छाधिपति सा.

प्रवचन मुनिराज श्री सिद्धरत्नविजयजी

प्रवचन मुनिश्री विद्वद्रत्नविजयजी म.

धर्म प्रभावना

आरती

बहुमान

राष्ट्रीय परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की संयम वन्दना यात्रा

महिला परिषद की म.प्र. इकाई

नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारी

राणापुर

पाटण

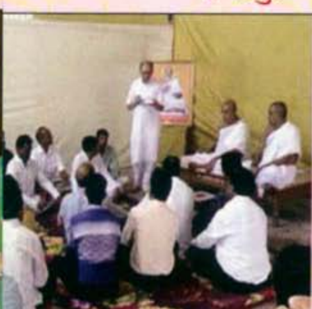

पिपलौदा

बैंगलौर

हुबली

वैसे ही शरीर को तप की अग्नि द्वारा तपाने से हमारे कर्म रूपी मैल खिरने लगते है। परमात्मा महावीर जानते थे कि उन्हें उसी भव में मोक्ष जाना है फिर भी घाती कर्मों का क्षय करने के लिए दीक्षा लेकर एकमात्र तप धर्म का ही सहारा लिया साढ़े बारह वर्ष तक भूमि पर बैठे नहीं, सोये नहीं, तप की साधना तभी फलीभूत हुयी और सभी घाती कर्मों का क्षय कर केवल ज्ञान को प्राप्त किया साथ ही बताया कि कर्म के आगे किसी की नहीं चलती व उसे सब यहीं भुगतना पड़ता है जो जैसा करता है वैसा ही फल प्राप्त होता है इसलिए मानव को अच्छे कर्म करना चाहिए।

प्रवचन के दौरान मुनिराज डॉ. सिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि ज्ञान पद में 51 गुण होते हैं जिसको सभी क्रियाओं में करना होता है व इसका वर्णन सफेद होता है ज्ञानावर्णीय कर्म का श्रय करने के लिए ज्ञान पद ही 'नाणस्स' पद की माला गिनने व तप आराधना करने से ज्ञान की वृद्धि होती है आत्मा का मौलिक गुण ज्ञान है ज्ञान आत्मा के लिए कितना आवश्यक है उसका स्पष्टीकरण आगमों में यह कहकर किया है 'पढमं नाणो तओ दया' अर्थात प्रथम ज्ञान और बाद में अहिंसा, व्रत, नियम आदि। ज्ञान के बिना अहिंसा का स्वरूप समझ न आने से आत्मा हिंसा को भी अहिंसा धर्म मान सकती है जैसे यज्ञ में बलि देना। ज्ञान ही आत्मा को कृत्या कृत्य का ज्ञान करवाता है। जैनागमों में धर्म को सूक्ष्म बुद्धि से करने का विधान किया है। स्थूल बुद्धि से किया जाने वाला धर्म अधर्म के खाते में चला जाता है। महावीर परमात्मा की आज्ञा को स्वीकार कर ज्ञान एवं ज्ञानी को अशातना से जितना बचा जा सके उतना बचकर आराधक भाव को अखण्डित रखना यही ज्ञान-ज्ञानी की आराधना है ज्ञान से ही पद मिलता है और पद से पावर व पैसा आगे बढ़ने के लिए कुछ अलग करने की ललक होनी चाहिए अर्थात् दृढ़ इच्छाशक्ति होनी चाहिए।

मुनिराज डॉ. सिद्धरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि जिनशासन में चरित्र बिन मुक्ति नहीं यह सिद्धांत सर्वोपरि है। इस सिद्धांत की सिद्धि स्वयं तीर्थंकर परमात्मा चारित्र ग्रहण कर कहते हैं हमारे सौलहवें, सतरवें, अठारहवें तीर्थंकर चक्रवर्ती थे वे जानते भी थे कि इसी भव में अवश्य ही मोक्ष होने वाला है फिर भी छः खण्ड की ऋद्धि को त्याग कर चारित्र ग्रहण किया वे यह भी जानते थे कि चारित्र ग्रहण किये बिना मुक्ति नहीं है केवल ज्ञान छद्मस्थ अवस्था में भी हो सकता है पर वन्दनीय तभी हो सकते हैं जब वे चारित्र ग्रहण करें सम्यग दर्शन और ज्ञान गुण में रमणता ही चारित्र है, उस रमणता से लेश्या शुद्ध होती है इन तीनों की प्राप्ति ही केवल ज्ञान और निर्वाण प्राप्त

करवाती है सम्यग चारित्र के 70 गुण होते हैं सम्यग चारित्र का वर्ण श्वेत (सफेद) है। श्वेत रंग शुद्धता की पहचान है, निस्वार्थी होने की पहचान है और ब्रह्मांडिय चेतना का प्रतीक है सम्यग चारित्र का पालन भी शुद्धता की पहचान है और जीव वह सब कर पाते हैं सही निर्णय ले पाते हैं जिसका सूचक श्वेत शुक्ल रंग है इसीलिए रत्नत्रयी की तीसरी पहचान सम्यग चारित्र को भी श्वेत रंग से पहचाना जाता है।

मुनिराज विद्वदरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि मिलजुलकर नम्रता के साथ रहने वाले जीव को हमेशा सम्मान प्राप्त होता है व मन में बुरे भाव रखने वाले जीव को संसार में कहीं कोई स्थान नहीं मिलता जीवन में कम खाना, गम खाना व नम जाना इन तीन बातों को जिसने अनुसरण कर लिया उसे कोई नुकसान नहीं होता व वह मानव महामानव बन जाता है कम खाने से बीमारियों से छुटकारा, गम खाने से जीवन खुशहाल व नम जाने वाले को मिलता है सम्मान।

मुनिराज श्री विद्वदरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि अनंतकाल से आत्मा परमात्मा दृष्टि को जानते हुए भी वर्तमान की स्थिति परिस्थिति में भटकाकर आगे बढ़ने से गति, प्रगति, उन्नति, सदगती में पहुँचने में सहायक होती है जिस प्रकार बिजली का बटन दबाते ही बल्ब, पंखा व आधुनिक साधन चालू व बंद हो जाते हैं किन्तु पंखा चार पाँच चक्कर लगाने के बाद ही बंद होता है उसी प्रकार मानव भी संसार में चक्कर लगाते हुए भटक रहा है साथ ही बताया कि उपधान तप आराधक अपनी तप आराधना में दो उपवास के बीच एक एकासना करते हैं इन्होंने अपनी जीभ पर विजय प्राप्त कर ली है साथ ही धार्मिक क्रिया जप, खमाशमणा के साथ दोनों समय प्रतिक्रमण के लिए प्रातः 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक अपनी धार्मिक क्रियाओं में व्यस्त रहते हैं जो खूब अनुमोदनीय है। मुनिराज श्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि आत्मा को सही मार्ग बताने वाले गुरु ही होते हैं माँ संस्कार और संस्कृति का ज्ञान देती है और गुरु आराधना व साधना के बारे में बताते हैं जो गुरु की आज्ञा पालन करने की बजाय उनके बारे में निंदा करने लगता है उसके कर्मों में अशुभ कर्मों का बंध हो जाता है इसलिए गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए अपनी संस्कृति और संस्कार को कभी नहीं भूलना चाहिए।

गच्छाधिपति श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा मुमुक्षु चाँदनी बेन को दीक्षा का मुहूर्त प्रदान किया गया, चांदनी बेन की दीक्षा 28 नवम्बर 2019 को अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद की भूमि भाभरा नगर जिला अलिराजपुर, मध्यप्रदेश में होगी।

भाभरा श्रीसंघ सचिव वीरेन्द्र बोहरा ने

भाभरा नगर में 24 से 29 नवम्बर तक आयोजित सभी आयोजन में पधारने का अनुरोध किया है। 24 नवम्बर को पुण्य सम्राट का जन्मोत्सव मनाया जावेगा व गच्छाधिपति श्री व साधु - साध्वी भगवंत का भव्य मंगल प्रवेश होगा यहाँ पाँच दिवसीय सुविधिनाथ जिनालय व गुरु मंदिर की प्रतिष्ठा का आयोजन भी होगा। मुमुक्षु बहन का श्रीसंघ व महिला परिषद व उपधान आराधक मंडल द्वारा बहुमान किया गया साथ ही श्री शंखेश्वर दर्शन विहार धाम डीसा, गुजरात में बने शस्त्र फणा श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिरजी का प्रतिष्ठा का शुभ मुहूर्त 13 फरवरी 2020 का प्रदान किया लाभार्थी रमीला बेन, बाबूलाल मणीलाल दोसी परिवार बी.एम.शाह डीसा परिवार ने सामूहिक रूप से गच्छाधिपति श्री आदि ठाणा के दर्शन वन्दन कर मुहूर्त प्राप्त किया व सभी श्री संघ से प्रतिष्ठा में पधारने की विनती की।

उज्जैन– श्री राजेन्द्रसूरी शोध संस्थान के अध्यक्ष व ट्रस्टीगण पिपलौदा पहुंचे व गच्छाधिपती नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन वंदन कर उज्जैन में स्कूल प्रारम्भ करने हेतु चर्चा करते हुए बिल्डिंग का नक्शा दिखाकर संस्थान सम्बन्धित जानकारियाँ दी।

शोध संस्थान के अध्यक्ष व नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पूर्व ऊर्जा मंत्री पारसजी जैन (विधायक) ने कहा कि पुण्य सम्राट श्रीमद् विजय जयंत सेन सूरीश्वरजी म.सा. ने साधु संत की शिक्षा के साथ ही आमजन के व्यवहारिक शिक्षा के प्रोत्साहन के लिए कार्य करते हुए यह शोध संस्थान बनाया और वर्तमान में यहाँ बीएड व डीएड कॉलेज संचालित हैं। ट्रस्टी सुनील गिरिया, राजबहादुर मेहता, अभय सेठिया, राजेश वनवट, तरुण परिषद पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष रजत मेहता, कपिल सकलेचा व धीरज चोरडिया उपस्थित थे।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद शाखा-जूनी कसेरा बाखल, इंदौर द्वारा संस्था के मुख्य उद्देश्य 'मानव सेवा प्रभु सेवा' को मूर्त रूप देते हुए संस्था अध्यक्ष श्रीमती पूनम विलासजी जैन के सहयोग से उनकी सुपुत्री कु. महिमा जैन के जन्मदिन के उपलक्ष में लक्ष्मी नगर में संचालित हो रहे 'राजशान्ति आशियाना' वृद्धाश्रम में भोजन वितरित किया गया।

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद की प्रांतीय व राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने दर्शन वंदन कर गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. व साधु-साध्री भगवंत का आशीर्वाद लिया। साथ ही 9 नवम्बर को पिपलौदा में आयोजित महिला परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन को लेकर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर स्थानीय परिषद के साथ बैठक आयोजित की। बैठक में राष्ट्रीय

अध्यक्ष अंगूरबाला सेठिया, उपाध्यक्ष गुणबाला बेन, कोषाध्यक्ष पारसमणी बेन, सह कोषाध्यक्ष सरोज कांसवा, प्रचार मंत्री शशि लुणावत, म.प्र. प्रांतीय अध्यक्ष पुष्पा भंडारी, महामंत्री हेमा हिंगड़, उपाध्यक्ष रानी लोढ़ा सभी पदाधिकारियों का स्थानीय महिला परिषद अध्यक्ष मंजू बोहरा, अलका भंडारी, सुनीता मोगरा, सधा नांदेचा, मंजू बाबेल, बेबी सुराणा ने किया।

पुण्य सम्राट द्वारा रचित मुनिराज तारक रत्न विजयजी म.सा. द्वारा संकलित चौवीसी जिन वंदना पुस्तक का विमोचन पुण्य सम्राट की 29 वीं मासिक पुण्य तिथि व मुनिराज विद्वदरत्नविजयजी म.सा. के संयम जीवन के 30 वर्ष पूर्ण होने पर स्व. मेघराज एवं सुगंधदेवी तलेसरा की स्मृति में जैन तीर्थ 68 जिनालय के संस्थापक एवं ट्रस्टी बाबूलाल जैन, उत्तमचन्द्र मोटेरा मद्रास, मुकेश भाई झाबुआ आदि ट्रस्टियों ने किया व गच्छाधिपति श्री का आशीर्वाद लिया।

पिपलौदा नगर व आसपास क्षेत्र के इतिहास को संजोकर बनी ऐतिहासिक पिपलौदा पुस्तक गच्छाधिपति श्री को नगर के इतिहासकार बाबूलाल पाठक द्वारा भेंट कर आशीर्वाद लिया गया। श्रीसंघ व परिषद परिवार द्वारा श्री पाठक को अभिनन्दन पत्र व शाल श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया गया।

मुनिराज को दी श्रद्धांजलि– राजस्थान के जोधपुर नगर में चातुर्मास हेतु विराजित मुनिराज विनीत रत्नविजयजी म.सा. का देवलोक हो जाने पर त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ पिपलौदा द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मुनिराज विनीतरत्न विजयजी म.सा. त्रिस्तुतिक जैन संघ के रत्न थे आपने दीक्षा के पूर्व भी शासन की सेवा के रूप में लंबे समय तक सियाणा जैन पेढ़ी का सफल संचालन किया और संयम जीवन ग्रहण करने के बाद तप–त्याग और निरन्तर प्रति पल नवकार का जाप कर अपने जीवन को धन्य किया है उनके देवलोक गमन से साधु समुदाय में बहुत बड़ी कमी हुई है।

मासक्षमण तपस्वी नटवरसिंह राठौर ने 31 उपवास की कठोर तपस्या पूर्ण की जिसके निमित्त श्रीसंघ द्वारा उनके निवास से भव्य वरघोड़ा निकाला गया वरघोड़े में तपस्वी श्री राठौर का जगह–जगह बहुमान किया गया। वरघोड़ा मुख्य मार्ग से होते हुए दादावाड़ी पहुंचा जहाँ सभी ने चल रहे प्रवचन का श्रवण किया गच्छाधिपति श्री ने श्री राठौर को पुण्य सम्राट की प्रतिमा व मोती की माला भेंटकर आशीर्वाद लिया प्रवचन के पश्चात तपस्वी का पारणा करवाया गया।

श्रीसंघ के महामंत्री व शाश्वत धर्म संपादक सुरेन्द्र लोढ़ा मंदसौर, श्रीसंघ अध्यक्ष मन्दसौर गजेंद्र हिंगड़, कमलेश

कावड़िया कुशलगढ़ श्रीसंघ, संजय पीपाड़ा दसई श्री संघ, पोपटलाल जैन वाई महाराष्ट्र श्रीसंघ, संदीप व मयूर तलेसरा सारंगी श्रीसंघ, यशवंत बोड़ाना इंदौर श्रीसंघ, श्री काबियाजी मनासा श्रीसंघ के साथ ही कुक्षी, अलीराजपुर, दलौदा, जावरा, रतलाम, सैलाना आदि श्रीसंघों ने पूज्य गच्छाधिपति श्री व मुनिमण्डल का आशीर्वाद लेकर सभी से क्षमा याचना कर अपने विचार रखते हुए पिपलौदा श्रीसंघ द्वारा की गई व्यवस्थाओं की प्रशंसा की।

श्रीसंघ द्वारा बहुमान किया गया गच्छाधिपति श्री ने किया लोच- पूज्य गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने स्वयं अपने हाथों से लोच किया जो करीब 34 वर्षों से स्वयं अपने हाथों से लोच कर रहे हैं जो निरंतर जारी है।

पिपलौदा चातुर्मास के अंतर्गत 100 से अधिक श्रीसंघों ने पधारकर गच्छाधिपतिश्री, मुनिराजगण तथा साध्वीजी महाराज सा. को वंदन किया। जिनमें प्रमुख निम्नांकित नगर सम्मिलित हैं- अहमदाबाद, धार, सारंगी, उज्जैन, सियाणा, मेघनगर, इंदौर, राजगढ़, परतुबू, जावरा, रतलाम, करवड़, बदनावर, डीसा, नागदा, रेवतड़ा, नैनावा, मद्रास, निम्बाहेड़ा, आलोट, भाटपचलाना, पेटलावद, कुशलगढ़, बड़नगर, मंदसौर, नीमच, सूरत, मुम्बई, बाग, थराद आदि

महापर्व पर्युषण के पांचवे दिन अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद द्वारा आयोजित अखिल भारतीय विराट कवि सम्मेलन में नामचीन हास्य कवियों व गीत-गजलकारों ने ओजस्वी प्रस्तुतियों से उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध किया। साथ ही 31 उपवास की तपस्या पर दीपेश जैन जावरा, 11 उपवास पर सौरभ बौहरा धामनोद व श्रीसंघ धानेरा का भी बहुमान किया गया।

पूर्व ऊर्जा मंत्री व वर्तमान उज्जैन विधायक पारस जैन व जावरा पिपलौदा क्षेत्र विधायक डॉ. राजेन्द्र पाण्डेय ने गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. व साधु-साध्वी भगवंत का आशीर्वाद लिया व वार्षिक क्षमायाचना की साथ ही नगर में चल रही उपधान तप आराधना के सभी आराधकों से सुखसाता पूछी। इस अवसर पर श्रीसंघ उपाध्यक्ष नरेन्द्र जैन, भाजपा नगर अध्यक्ष मुकेश मोगरा, सुरेश बोहरा, भेरूलाल सरपंच, महेश बोहरा, प्रवीणसिंह, मनमोहनसिंह राणा आदि उपस्थित थे।

जावरा में चातुर्मास हेतु विराजित साध्वी श्री अमितदृष्टाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में कोलन परिवार द्वारा निकाले गये पैदल संघ में श्रीसंघ जावरा के करीब तीन सौ श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया व करीब 18 किमी पैदल मार्ग से दादावाड़ी पिपलौदा पहुँचे, जहाँ जिन मंदिर के दर्शनकर गच्छाधिपति श्री तथा साधु-

साध्वी भगवंत का आशीर्वाद प्राप्त किया।

पिपलौदा – त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के परार्मशदाता व रतलाम विधायक चेतन्य काश्यप, नवयुवक परिषद राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री सुशील छाजेड़, राष्ट्रीय सहमंत्री राजकमल दुग्गड़ व निर्मलजी लूणिया ने क्षमायाचना करते हुए सभी से सुखसाता पूछी व श्रीसंघ द्वारा सभी का बहुमान किया गया।

■■■

रामेश्वरम् में जिनालय व गुरु मंदिरों का शिलान्यास

रामेश्वरम् – श्री सुमतिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक ट्रस्ट मयमपुली रामेश्वरम् के तत्वाधान में श्री सुमतिनाथ भगवान एवं गुरुदेव राजेन्द्रसूरी आदि गुरु मंदिरों का शिलान्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। ट्रस्ट के चेयरमेन बगदावरमल हरण ने बताया कि गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद एवं आचार्य देव श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के मार्गदर्शन में दक्षिण के अंतिम छोर रामेश्वरम् तीर्थ पर भव्य जैन मंदिर बनाने का निश्चय हुआ। गुरुभगवन्तों के मार्गदर्शन से शिलान्यास कार्यक्रम की शुरुआत विधिकारक मनोजकुमार बाबूमल हरण द्वारा स्नात्र महोत्सव से की गई जिसमें जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीपक, अक्षत, नैवेद्य, फल आदि से अष्टप्रकारी पूजा की गई।

पश्चात् श्री सुमतिनाथ भगवान, गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी, श्री जिनकुशल सूरीश्वरजी, श्री आर्य रक्षित सूरीश्वरजी, श्री शाँतिसूरीश्वरजी, श्री विद्याचन्द्र सूरीश्वरजी, श्री जयंत सेन सूरीश्वरजी छः गुरु मंदिरों की निर्माणधीन मंदिर स्थल के विशाल भूखण्ड पर जयकारों व विधि-विधान से मंत्रोच्चार के बीच दीप प्रज्ज्वलित कर नन्दाशिला, भद्राशिला, जयशिला, रिक्तशिला सहित 9 आधार शिला एवं गुरु मन्दिरों की छः 6 आधार शिला के पत्थर रखे गए।

मुख्य शिला के लाभार्थी बगदावरमल इंद्रमल हरण नरता, भीनमाल-मदुरैवासी एवं अन्य शिला के लाभार्थी परिवारों द्वारा क्रम से आते गए और शिलाएं रखते गए व पूजा अर्चना की शिलान्यास समारोह के मुख्य अतिथि के. वोरा राघव राव रामनाथपुरम (जिला कलेक्टर) ओमप्रकाश मीणा(एसपी) रामनाथपुरम, रुपेश कुमार मीणा डी.आई.जी. रामनाथपुरम एवं तमिलनाडु सरकार अल्पसंख्यक आयोग सदस्य यु. सुधीर लोढ़ा चेन्नई सहित रामेश्वरम के विभिन्न विभाग के अधिकारी एवं

जैन समाज के अनेक शहरों से पधारे विभिन्न संघ, ट्रस्ट मंडल के ट्रस्टी व पदाधिकारीगण मौजूद रहे। उन्होंने बताया कि रामेश्वर तीर्थ पर जैन मंदिर व गुरुदेव राजेन्द्रसूरीश्वरजी की गुरु मंदिर करीबन 2022 तक पूरा बनाने का ट्रस्ट मंडल ने संकल्प दोहराया है। शिलान्यास के दौरान मदुरै चैन्नई, बैंगलोर, मुम्बई, तिरुनोलवेलि, नागर कोविल, इरोड़ सहित अन्य शहरों के जैन समुदाय के लोग परिवार सहित हजारों की संख्या में शामिल हुए. ट्रस्ट मंडल की ओर से समारोह मुख्य अतिथियों का शॉल, माला एवं मोमेंटों देकर सम्मानित किया। राजेन्द्र चौपड़ा ने बाहर शहरों से सकल संघ, युवा मंडल सहित समारोह में पधारे सभी श्रावक-श्राविकाओं का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। इस दौरान मीठालाल संखलेचा, जीतमल तलावट, सायरमल भंडारी, शांतिलाल चौपड़ा, जवेरचन्द तलावट, मूलचन्द श्रीश्रीमाल, किशोर बाफना, शाँतिलाल लुंकड सहित ट्रस्ट मंडल के सदस्यगण मौजूद रहे (दिनेश सालेचा, मदुरै)। ■■■

धानेरा में बड़ी धर्म लहर व्याप्त

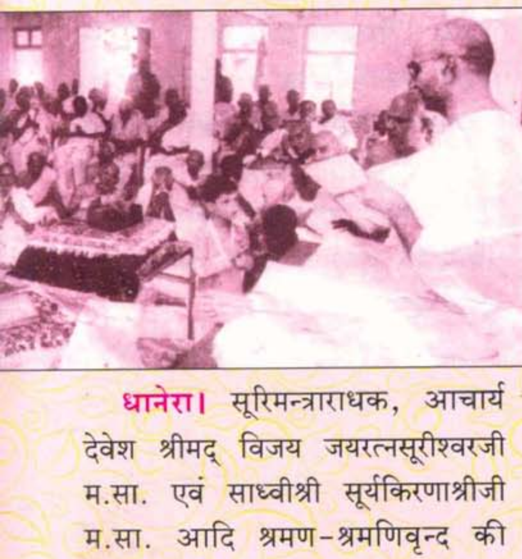

धानेरा। सूरिमन्त्राराधक, आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. एवं साध्वीश्री सूर्यकिरणाश्रीजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द की शुभनिश्रा में विविध चातुर्मासिक आराधनाओं में पर्वाधिराज पर्युषण की आराधना हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई।

कार्यदक्ष मुनिराजश्री आनन्दविजयजी म.सा. ने जानकारी देते हुए बताया कि धानेरा नगर में पर्युषण पर्व पर आचार्य देवश्री की निश्रा में 65 गुरुभक्तों ने चौंसठ प्रहरी पौषध के साथ आराधना की। पर्व के उपलक्ष्य में तपस्वीरत्नों ने अट्ठम

तप, अट्ठाई, उपवास, बियासणा, एकासन, आयम्बिल आदि की तपस्याएँ निर्विघ्न सम्पन्न की।

श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ एवं श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुमन्दिर, धानेरा द्वारा आयोजित पर्युषण पर्व के अन्तिम दिन बारसा सूत्र का वाचन किया गया। आचार्यदेवेशश्री की सद्प्रेरणा से 107 वर्ष पूर्व मुद्रित चर्चाचक्रवर्ती आचार्य श्री धनचन्द्रसूरिजी महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित ग्रन्थ की द्वितीयावृत्ति का लोकार्पण श्री मूलचन्दजी बालगोता, मेंगलवा-दिल्ली, श्री काजूमलजी कोमता-संघवी- भीनमाल, श्री माँगीलालजी सेठ-उम्मेदाबाद-गोल, श्री नेमीचन्दजी गोवाणी चौराऊ, धानेरा श्रीसंघ के अग्रणी वयोवृद्ध श्री गिरधरबाई मेहता, संघ अध्यक्ष श्री सुबोधभाई मेहता, संघ ट्रस्टी श्री कीर्तिभाई, वकील सा. श्री रसिकभाई सवाणी, श्री पोपटभाई सवाणी, सामाजिक कार्यकर्ता श्री महेन्द्रभाई दरबार आदि द्वारा किया गया। इस ग्रन्थ के संयोजक-संशोधक व्याख्यान- वाचस्पति मुनिश्री यतीन्द्रविजयजी महाराज थे। श्री यतीन्द्र वाणी प्रकाशन, मोटेरा-अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित अनुपलब्ध इस ग्रन्थ के मुद्रण का लाभ श्री सौधर्मवृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ एवं श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी गुरु मन्दिर, धानेरा ने लिया। साम्वत्सरिक प्रतिक्रमण कर आचार्य देवेशश्री, साधु- साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं ने परस्पर एक-दूसरे से क्षमायाचना की।

पर्वाधिराज पर्युषण की अष्टदिवसीय आराधना के अन्तर्गत प्रतिदिन पूजन, रात्रि में संगीत की स्वरलहरियों के साथ भक्ति-भावना, प्रतिक्रमण आदि कार्यक्रम हुए। जिनालय में प्रतिदिन प्रभु एवं गुरुदेव की मनमोहक अंगरचना की गई।

पर्युषण पर्व के पश्चात् आचार्य देवेशश्री एवं श्रमण-श्रमणीवृन्द के वन्दनार्थ दर्शनार्थ नित्य श्रीसंघों एवं गुरुभक्तों का आगमन हुआ है। इसी क्रम में दिनांक 7 सितम्बर 2019 को अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरू, राष्ट्रीय महामन्त्री श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, राष्ट्रीय शिक्षामन्त्री श्री भरतभाई, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी श्री ब्रजेशजी बोहरा आदि प्रातः धानेरा पहुँचे।

तीर्थोद्धारक आचार्य श्रीमद् विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. की सेवा में आगामी सन् 2020 का चातुर्मास चैन्नई (तमिलनाडु) में करने हेतु विनती लेकर श्री राजेन्द्रसूरीश्वर जैन ट्रस्ट, चैन्नई से प्रतिनिधि मण्डल संघ अध्यक्ष श्री कान्तिलालजी पीपाजी गाँधी के नेतृत्व में धानेरा पहुँचा।

व्याख्यान में श्री शान्तिलालजी भण्डारी (टाईगर) ने आग्रहपूर्ण चातुर्मास की विनती की। पूज्य आचार्यश्री ने दक्षिण भारत की ओर से विहार करने की भावना व्यक्त करते हुए क्षेत्रकाल भाव देखकर चातुर्मास करने की बात कही। श्रीसंघ की ओर से प्रभावना वितरित की गई।

आचार्यदेवेश श्री के दर्शन-वन्दन एवं क्षमायाचना करने गुरुभक्तों का आगमन धानेरा में प्रतिदिन हुआ। धानेरा संघ साधर्मिक भक्ति का सुन्दर लाभ ले रहा है।

प्रवचन में परिषद परिवार की ओर से उपस्थित आचार्य भगवन्तश्री एवं श्रमण-श्रमणिवृन्द को वन्दन-दर्शन कर साम्वत्सरिक क्षमापना की।

त्रिस्तुतिक जैन संघ धानेरा के प्रमुख श्री सुबोधभाई मेहता, अरविन्दभाई, कीर्तिभाई, पारसमलजी आदि ने माला, शॉल एवं श्रीफल से सभी का बहुमान किया।

वाली- जि. जालोर- (राज.) के श्री माँगीलालजी, मनोहरमलजी एवं मोहनलालजी आदि दर्शनार्थ पधारे। वाली में नूतन निर्मित श्री सम्भवनाथ जैन मन्दिर की प्रतिष्ठा मुहूर्त्त विक्रम सम्वत् 2076, मगसर वदी 6, दिनांक 18-11-2019 का घोषित किया। इसी समय नूतन निर्मित उपाश्रय का भी उद्घाटन किया जायेगा।

रेवतड़ा- जि. जालोर (राज.) से 25 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल दर्शन वन्दन करने धानेरा पधारे। आचार्य भगवन्त के दर्शन वन्दन करके उपस्थित सभी संघ सदस्यों ने जीर्णोद्धारित श्री आदिनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा करने हेतु आग्रह पूर्ण विनती की।

आचार्यदेवेशश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म.सा. ने पिपलौदा में विराजित गच्छाधिपतिश्री को विनती करने हेतु आदेश प्रदान किया। वहाँ प्रतिष्ठा की विनती कर पुनः आकर मिलने हेतु कहा। माँगलिक श्रवण कर सभी ने प्रस्थान किया।

■■■

कपड़े की थैलियाँ वितरित

मंदसौर । पोलीथीन मुक्त भारत के तहत अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद ने कपड़े की एक सौ थैलियां वितरित की। इस दौरान प्रदेश महामंत्री श्रीमती हेमा हींगड़, शाखा अध्यक्ष सुनिता खाबिया, सचिव आभा दुग्गड़, सरोज चपड़ोद, कुसुम लाढ़ा, अर्चना लोढ़ा, माधुरी खाबिया, सीमा बाफना, टीना हिंगड़, अलका चंडावला, गुणमाला मेहता, विनीता जैन आदि उपस्थित थे।

कत्लखाने एवं अंडे की बिक्री आठों दिन बंद रही

पाटण नगर में चातुर्मास हेतु अनेक उपाश्रय में बिराजमान विभिन्न समुदायों के श्रमण-श्रमणी भगवंतों की पावन निश्रा में पर्युषण पर्व की आराधना भव्याति भव्य रूप से पूर्ण हुई। पर्युषण पर्व के आठों दिन नगर में अहिंसा धर्म का पूर्ण पालन हुआ। नगर के खाटकी वार्ड स्थित 42 कत्लखाने एवं बाजार में 60 से अधिक अंडे बिक्री की लारी और 3 नोनवेज की होटल आठों दिन बंद रही। इसके लिए पाटण जैन संघ के नवयुवकों का परिश्रम मुख्य रहा। पर्युषण पर्व के पूर्व पाटण नगर में चातुर्मास हेतु बिराजमान मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजयजी महाराज की पावन निश्रा में पाटण जैन संघ के विभिन्न समुदायों के नवयुवकों की मीटिंग त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में हुई जिसमें मुनिराज श्री के प्रेरक प्रवचन और प्रेरणा से इस कार्य की रूप रेखा तैयार हुई, उसके बाद प्रशासन और नगरपालिका को आवेदन पत्र देकर जैन संघ के नवयुवकों ने सभी कत्लखाने एवं अंडे की लारी और 3 नोनवेज होटल का व्यक्तिगत संपर्क कर हिंसा जनक संपूर्ण कार्य बंद रखने का तय किया गया। इस कार्य में नगरपालिका उपप्रमुख लालेशजी ठक्कर का विशेष सहयोग रहा। जैन संघ के नवयुवकों में निलेषभाई , बंटीभाई, नरेशभाई आदि 25 से अधिक कार्यकर्ता का सहयोग रहा, अविस्मरणीय कार्य करने के लिए मुनिराज श्री चारित्र रत्न विजयजी महाराज आदि ठाणा की पावन निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन उपाश्रय में नगरपालिका प्रमुख एवं उपप्रमुख और इस कार्य में योगदान देने वाले पाटण जैन संघ के नवयुवकों का त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की और से बहुमान किया गया। कत्लखाने एवं अंडे की लॉरी ओर होटल के मालिकों को आठ दिन हिंसा के कार्य बंद रखने के लिए राशन सामग्री वितरण करने के लिए त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से 33000 की राशि भेंट की गई।

* **बेंगलुरू ।** यहाँ कीलारी रोड़ स्थित राजेन्द्र भवन में मंगलवार को साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी आदि ठाणा तीन की निश्रा में अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के तत्वावधान में दियावट निर्देशिका का विमोचन किया गया। श्री सीमंधर स्वामी राजेन्द्रसूरी जैन संघ एवं परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों के कर कमलों से दियावट डायरेक्ट्री का विमोचन हुआ।

* **दाधाल ।** साध्वीश्री महाप्रभाश्रीजी की सुशिष्या श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा-4 की निश्रा में पर्वाधिराज पर्युषण पर

दाधाल नगर में प्रथम दिन प्रातः भक्तामर पाठ अत्यन्त मार्मिक प्रवचन पाँच कर्तव्य पर एवं दोपहर में मातृ-पितृ वंदनावली के अंतर्गत माता-पिता के उपकारों का हृदयद्रावक वर्णन किया एवं अंत में युवक-युवतियों ने माता-पिता को प्रणाम करने का नियम लिया।

द्वितीय दिवस- प्रवचन में वार्षिक ग्यारह कर्त्तव्य बताये एवं दोपहर में संयम भाव यात्रा का भव्य आयोजन हुआ। साध्वीजी ने संयम की महिमा तथा उपकरण के महत्व को समझाया तथा उपकरणों के चढ़ावे नियम से हुए, जिसमें अनेक भावुकों ने नियम ग्रहण किये।

तृतीय दिवस- प्रवचन में पौषध की महिमा समझाई एवं दिन में भव्यातिभव्य गिरनार भाव संवत्सरी के दिन दोपहर में कौन बनेगा अभयकुमार भव्य प्रश्नमंच का आयोजन पर्युषण पर्व में 25-30 अट्ठाई, 67 सिद्धितप एवं समौवसरण तप अट्ठम आदि तपस्याएँ हुई।

पंचम दिवस- दाधाल से तिलोड़ा चैत्यपरिपाटी धूमधाम, बैंड-बाजे, बग्गियाँ, ऊँट, घोड़े आदि के साथ जगडुशाह द्वारा मोदक बाँटते-बाँटते निकाली। दोपहर में धूप में भी श्रद्धालुजन म.सा. के साथ पैदल चले एवं तपस्वी बग्गी आदि में बैठे।

* **सरधाना ।** अभिधान राजेन्द्र कोष के निर्माता विश्व पूज्य श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी की जन्मभूमि भरतपुर नगर से त्रिस्तुतिक जैन श्वे. श्री संघ के सदस्य श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा हेतु सरधाना शहर में विराजित मुनि श्री संयमरत्न विजयजी, मुनि श्री भुवनरत्नविजयजी को आग्रह भरी विनंती की। मुनिद्वय श्री आशीर्वाद प्रदान करते हुए मध्यप्रदेश के पिपलौदा में विराजित गच्छाधिपति आचार्य श्रीमद् विजय नित्यसेनसूरिजी से मुहूर्त लाने हेतु कहा। भरतपुर श्रीसंघ ने सहर्ष प्रतिष्ठा की आज्ञा लाने हेतु मुनिश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। डीसा नगर से 30 गुरु भक्तों एवं राजस्थान के निम्बाहेड़ा से 15 गुरु भक्तों का पदार्पण हुआ। इस मौके पर मदुरै से बगदावरमलजी हरण भी पधारे और रामेश्वरम में श्री सुमतिनाथ जिनालय व गुरु मंदिर के शिलान्यास पत्रिका प्रदान कर आशीर्वाद प्राप्त किया। ■■■

अभी तक 41 लोच

पिपलौदा । गच्छाधिपति श्री की निश्रा में लगातार लोच का क्रम आगे बढ़ रहा है पावनिय चातुर्मास अंतर्गत मुनिराज निर्भयरत्न विजयजी म.सा. द्वारा 41 वाँ लोच किया गया नवयुवक परिषद कोषाध्यक्ष ऋषभ धींग ने लोच करवाया। श्री संघ द्वारा सभी की अनुमोदना की गई लोच का क्रम अभी निरंतर जारी है।

पिपलौदा । हीरक जयंती राष्ट्रीय अधिवेशन को लेकर नवयुवक

परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने पिपलौदा पहुंचकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया व गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. को आमंत्रण भेट कर सम्पूर्ण आयोजन में निश्रा प्रदान करने हेतु विनती की व आशीर्वाद लिया।

साथ ही स्थानीय परिषद की बैठक आयोजित कर आगामी 9 व 10 नवम्बर को आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन की रूपरेखा तैयार की गई । अधिवेशन में देशभर से परिषद परिवार के सदस्य पहुँचेंगे।

राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल द्वारा स्थानीय परिषद को अधिवेशन संबंधी व्यवस्थाओं से अवगत करवाया। 9 नवंबर को नवयुवक परिषद, महिला परिषद, बहु, बालिका परिषद व तरुण परिषद का संयुक्त अधिवेशन होगा व दोपहर में तीन अलग-अलग स्थानों पर तीनों शाखाओं का सत्र होगा । ■■■

धार में लगा तपस्या का ठाठ

धार । साध्वी भगवंत अविचल दृष्टाश्रीजी म.सा. की चातुर्मास स्थिरता धार नगरी में धर्मगंगा बह रही है। साध्वीजी म.सा. की सद्प्रेरणा से श्रीसंघ में तपस्या का ठाठ लगा हुआ है। मासखमण, सिद्धीतप सहित अट्ठाई की तपस्या कर श्रावक-श्राविकाएँ अपने जीवन को धन्य-धन्य कर रहे हैं।

साध्वीजी की पावन निश्रा में तपस्या अनुमोदनार्थ 3 दिवसीय तप महोत्सव का आयोजन किया गया। तपस्वियों का शानदार सामम्या निकला। तप महोत्सव में देशभर के अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने सहभागिता कर तपस्वी के तपोबल की अनुमोदना की। 36 उपवास के तपस्वी श्रीमती रश्मि मोहितजी तांतेड़ सहित सिद्धीतप के तपस्वी की तप अनुमोदना में श्री मनोहरलालजी तांतेड़ परिवार ने चातुर्मासकाल में विभिन्न तप करने वाले तपस्वियों का बहुमान किया गया।

तपस्वियों की अनुमोदना सभा में श्रीसंघ अध्यक्ष श्री प्रकाशजी बाफना, श्री राजेन्द्रजी सुराणा, श्री अशोकजी श्रीमाल, श्री नीरजजी सुराणा, श्री वर्धमानजी सुराणा, श्री मनोजजी श्रीश्रीमाल, श्री मनोजजी श्रीश्रीमाल ने तप अनुमोदना की। कार्यक्रम में विभिन्न शहरों से आए श्रीसंघ व परिषद के पदाधिकारीगण सर्वश्री कांतिलालजी भंडारी, मनोहरजी छाजेड़, राजेन्द्र जैन, दंगवाड़ावाला, सुधीर लोढ़ा, वीरेन्द्र राठौर, मुकेश जैन का बहुमान किया गया। समारोह में 36 उपवास की तपस्वी रश्मि तांतेड़ का बहुमान प्रांतीय

परिषद के पदाधिकारीगण सर्वश्री मुकेश ओरा, संजय कोठारी, राजेश पगारिया, राकेश गोलेच्छा, अनिल मूणत, निलेश लोढ़ा, मानमल नाहर आदि ने किया। कार्यक्रम का संचालन परिषद के प्रांतीय उपाध्यक्ष मोहित तांतेड़ ने किया। प्रारंभ में स्वागत सर्वश्री प्रकाश तांतेड़, शरद धोका, आदित्य धोका ने किया। तप महोत्सव में नवकारशी एवं स्वधर्मी-वात्सल्य का लाभ मनोहरलाल तांतेड़ परिवार ने लिया।

मास खमण के तपस्वी – श्रीमती रश्मिजी तांतेड़, श्रीमती परिधी जैन, श्रीमती गरिमा भंडारी।

सिद्धी तपस्वी – श्री झमकलालजी तांतेड़, श्री शेखरजी ओस्तवाल, श्री पुखराजजी बोकड़िया, श्री अशोक रांका, श्री पुनाजी, श्रीमती कांताबेन नाहर, श्रीमती चंदनबाला मांडोत, श्रीमती ज्योति चंडालिया, श्रीमती वंदना लोढ़ा, श्रीमती मोनिका श्रीश्रीमाल, श्रीमती सीमा श्रीश्रीमाल, श्रीमती सुनीता तांतेड़, श्रीमती अर्चना मेहता, श्रीमती अंजू मेहता, श्रीमती अंजिता कामदर, कु. चेतना तांतेड़, ईशिका चंडालिया।

अन्य तपस्वी – श्री आदित्य धोका, श्री जैनम तांतेड़ (16 उपवास), श्री अमित डूंगरवाल, कु. अवनी श्रीश्रीमाल, श्री आयुष जैन (11 उपवास) ■■■

10 नवम्बर को नवयुवक परिषद का राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न होगा

बैठक में राष्ट्रीय जनकल्याण मंत्री सुशील छाजेड़, पर्यावरण मंत्री अनिल दसेड़ा, मीडिया प्रभारी ब्रजेश बोहरा, सहमंत्री राजकमल दुग्गड़, यशवंत चोरडिया व अशोक नवलखा ने परिषद के गौरवमयी 60 वर्ष पूर्ण होने पर हीरक जयंती के रूप में अधिवेशन को भव्यता प्रदान करने की बात कही।

बैठक में चातुर्मास समिति अध्यक्ष राकेश जैन इंदौर ने बताया कि अधिवेशन को लेकर तैयारियां अंतिम चरण में है काफी हद तक परिवार पूर्ण की जा चुकी है नगर का सौभाग्य है कि इतना बड़ा आयोजन पिपलौदा में होने जा रहा है पिपलौदा श्री संघ व परिषद परिवार द्वारा इस आयोजन को भव्य कैसे बनाया जाए उस ओर प्रयास किया जा रहा है।

नवयुवक परिषद अध्यक्ष अशोक बोहरा, कैलाश नांदेचा, चातुर्मास सचिव मुकेश रॉयल, राजेश महावीर, प्रचार सचिव प्रफुल्ल जैन, जितेन्द्र बाबेल, तरुण अध्यक्ष हर्ष कटारिया आदि उपस्थित थे। ■■■

परिषद प्रांगण से

परिषद का हीरक जयंती अधिवेशन पिपलौदा में

पिपलौदा । अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम पर गच्छाधिपति नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. व साधु-साध्वी भगवंत की पावन निश्रा में सम्पन्न हुई।

बैठक में आगामी 9 व 10 नवम्बर को पिपलौदा में आयोजित परिषद के गौरवमयी 60 वर्ष पूर्ण होने पर हीरक जयंती राष्ट्रीय अधिवेशन को लेकर विस्तृत चर्चा कर आयोजन की रूपरेखा तैयार की गई। सर्वप्रथम सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने पुण्य सम्राट जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलन व साथ ही गच्छाधिपति श्री व मुनि भगवंत को वंदन कर आशीर्वाद लिया।बैठक में राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश भाई धरू ने कहा कि किसी भी संगठन की सुदृढता का उत्तरदायित्व हम सभी पर है। सभी को जिनशासन की सेवा में सदैव तत्पर रहकर कार्य करना चाहिए।

राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल ने कहा कि परिषद की समस्त शाखाओं द्वारा वर्ष भर में धार्मिक, सामाजिक, जीवदया व शिक्षा आदि के क्षेत्र में अनेक उल्लेखनीय कार्य किये गए हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री भरतभाई शाह ने कहा कि परिषद धार्मिक शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु प्रयासरत है लोगों में धार्मिक ज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए सदैव गुरु की सद्प्रेरणा से विभिन्न कार्य व प्रकल्प पूरे किए जा रहे हैं जिसमें श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ धार्मिक ज्ञानाभ्यास के क्षेत्र में गुरुदेव द्वारा प्रारम्भ एक दीर्घकालीन प्रकल्प है।

नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष नवीन भाई बल्लू, सहमंत्री प्रवीण डूंगरवाल, राजकमल दुगड़, प्रचार

मंत्री शांतिलाल गोखरू, सह प्रचार मंत्री अनिल वागरेचा आदि ने भी अपने विचार रखे। सभी पदाधिकारियों का नवयुवक परिषद अध्यक्ष अशोक बोहरा द्वारा बहुमान किया गया। बैठक में श्री संघ अध्यक्ष बाबूलाल धींग, कोषाध्यक्ष राजेन्द्र कोठारी, उपाध्यक्ष नरेन्द्र जैन, चातुर्मास समिति अध्यक्ष राकेश जैन इंदौर, वाटिका अध्यक्ष शैलेन्द्र कटारिया, चातुर्मास प्रभारी राकेश जैन, सचिव मुकेश रॉयल, महेश बोहरा, संजय नांदेचा, महावीर, हिमांशु पटवा, आजाद बोहरा आदि उपस्थित थे। संचालन प्रचार सचिव प्रफुल्ल जैन ने किया। आभार तरूण परिषद अध्यक्ष हर्ष कटारिया ने माना। ■■■

सूरत। अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारियों की तीर्थ वंदन यात्रा का चतुर्थ चरण 29 सितम्बर को प्रातः 'सूरत' से प्रारम्भ हुआ। साध्वीजी के दर्शन वंदन कर दोपहर में संघ व परिषद परिवार से चर्चा की।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नवीनभाई बल्लू, राष्ट्रीय धार्मिक शिक्षा मंत्री श्री भरतभाई वोरा, परिषद् व श्रीसंघ के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी ब्रजेश बोहरा ने सूरत में परम पूज्य साध्वीश्री अध्यात्मकला श्रीजी म.सा. आदि ठाणा, साध्वीश्री योगनिधों श्रीजी म.सा. आदि ठाणा, अडाजन, साध्वीश्री विराग निधी श्रीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन वन्दन कर क्षमायाचना की। परिषद् पदाधिकारियों ने दोपहर 3. बजे साध्वीश्री योगनिधी श्रीजी म.सा. की निश्रा में सूरत के परिवार की पांचों इकाई के साथ चर्चा की। श्रीसंघ प्रमुख नितीन भाई अदानीजी, परिषद के राष्ट्रीय मंत्री श्री अतुलभाई अदानी, राष्ट्रीय तरुण परिषद के अध्यक्ष करणभाई मोरखिया, हितेश भाई धरू गुरुजी, महिला परिषद् के राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री आशिता बेन, महिला परिषद् अध्यक्ष श्रीमती अलकाबेन अदानी, बालिका परिषद् अध्यक्ष शिमोनी दोसी, बहु परिषद् से मुन्नीबेन वोरा आदि ने अपने विचार भी रखे। राष्ट्रीय अध्यक्ष धरूजी ने सभी शाखा इकाई को परिषद् के राष्ट्रीय अधिवेशन 9 नवम्बर पिपलौदा में आने का निमंत्रण दिया। कार्यक्रम का संचालन जैनेशभाई देसाई ने किया व सभी का आभार नवयुवक परिषद् के अध्यक्ष चम्पकभाई धरू ने माना। सूरत परिषद् परिवार द्वारा राष्ट्रीय पदाधिकारियों का शाल श्रीफल से बहुमान किया। सूरत परिषद के

कार्यक्रम पश्चात सभी परिषद परिवार के पांचों इकाई सदस्यों ने सामूहिक चोविहार का लाभ लिया।

चातुर्मासार्थ बिराजमान साध्वीजीश्री ने प्रासंगिक और चिंतनीय अमृतवाणी में फरमाया की प्रत्येक कार्य जिनाज्ञा को ध्यान में रख के ही करना चाहिए। कार्य कितना भी भव्य क्यों न हो अगर जिनाज्ञा अनुसार नहीं है तो उसकी कोई वेल्यू नहीं है। सूरत त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के प्रमुख श्रेष्ठ श्री नीतिनजी अदाणी ने कहा की गच्छ सुरक्षा प्रभावना हेतु आचार्यद्वय के कार्यों में युवाओं को अनुशासन से समर्पित होना वर्तमान की आवश्यकता है विशाल ह्रदय, दीर्घदृष्टि और उदार भाव से संगठन भावना को मजबूत करना है। नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने फरमाया कि धार्मिक शिक्षा के अभाव में हम स्वयं को धर्ममार्ग में स्थिर नहीं कर पाएंगे अतः परिषद् परिवार अपने कार्यों में ज्ञान प्रसार को सविशेष प्राथमिकता दें।

राष्ट्रीय महामंत्रीश्री ने कहा की परिषद् साथीओं के जिनशासन गुरुगच्छ एवं समाज हित के निस्वार्थ कार्यों से परिषद् गौरावान्वित है। धर्मसभा में सूरत श्रीसंघ के ट्रस्टी श्रीअमृतजी आलीशान, श्री प्रकाशजी माजनी, परिषद् परिवार के श्री अतुलजी अदाणी, श्री चंपकजी धरू, श्रीकरनजी मोरखीया एवं विशाल संख्या में सदस्य उपस्थित रहे।

संघ रत्नश्री शैलेशजी पारिख की संघभक्ति की अनुमोदना प्रमुखश्री द्वारा हुई।

राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने पाटण नगर में बिराजमान मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी, मुनिराज श्री निपुणरत्नविजयजी आदि ठाणा एवं साध्वीश्री तत्वलताश्रीजी आदि ठाणा, साध्वीश्री कुमुद प्रियाश्रीजी आदि ठाणा, साध्वी श्री रुचिदर्शनाश्रीजी आदि ठाणा के दर्शन वंदन करने पधारे। मुनि भगवंतों ने आशीर्वाद एवं धर्मलाभ प्रदान करते हुए कहा कि परिषद एवं परिषद परिवार की सभी शाखाएँ और नई ऊँचाई को प्राप्त करते हुए यह संस्था विश्व विख्यात बने। इस प्रसंग पर त्रिस्तुतिक जैन संघ पाटण की ओर से परिषद् पदाधिकारियों का बहुमान किया गया। पदाधिकारियों ने परिषद की ओर से मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी महाराज की प्रेरणा से पाटण नगर में पर्युषण पर्व के आठों दिन कत्लखाने बंद करवाने में सहयोग करने वाले पाटण के नवयुवकों का बहुमान किया। परिषद पदाधिकारियों ने पाटण से ऊंझा में बिराजमान साध्वी श्री काव्य रत्नाश्री आदि ठाणा के दर्शन वंदन कर अहमदाबाद की ओर प्रस्थान किया।

महाराष्ट्र के मुम्बई शहर में परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने दौरा किया

श्री थराद त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ 'खेतवाडी' में चातुर्मास हेतु विराजित साध्वीश्री अनन्तदृष्टा श्री म.सा. व साध्वीश्री मयूरकलाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन वन्दन करने परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारी आये।

पूज्यद्वय साध्वीश्रीजी ने राष्ट्रीय परिषद् परिवार को आशीर्वाद देते हुए कहा परिषद की धार्मिक शिक्षा में निरन्तर प्रगति पुण्य सम्राट के स्वप्न को साकार कर रही हैं व जिनशासन के प्रति आपकी सेवाएँ अनुमोदनीय हैं। 'भायंदर' में बिराजमान साध्वीश्री रिद्धि निधी श्रीजी म. सा. व मुक्ति निधी श्रीजी म.सा. आदि ठाणा के भी दर्शन वन्दन किये। द्वय साध्वीश्रीजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि धार्मिक ज्ञान का यह दीप लगातार प्रज्वलित होता रहे, परिषद अधिक से अधिक बच्चों को धार्मिक शिक्षा से जोड़ने का प्रयास करे। धार्मिक शिविर के माध्यम से स्नात्र पूजन, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रिया के बारे में विधीपूर्वक ज्ञान देना चाहिए। बच्चों को जिनशासन का महात्व बताना चाहिये। श्री थराद त्रिस्तुतिक जैन संघ मुम्बई (भायंदर) ने परिषद् के पदाधिकरियों का बहुमान किया। श्री परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारी मुम्बई से देर रात बैंगलोर (दक्षिण) के लिये रवाना हुए।

हुबली – में बिराजमान पूज्य साध्वी श्रीआत्मदर्शनाश्रीजी म.सा. ने अपने प्रवचन में कहा कि पुण्य सम्राट द्वारा सिंचित परिषद् अपने अथक परिश्रम से सेवा के विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से संघ व समाज में उत्कृष्ठ कार्य कर रही है। परिषद के पदाधिकारी प्रतिवर्ष हमारी सार संभाल लेते जो अनुमोदनीय है। परिषद ने उत्तर से दक्षिण को जोड़ रखा है। मीडिया प्रभारी ब्रजेश बोहरा के समर्पणता की अनुकरणीय सराहना करते हुए पूज्यश्री जी ने कहा संचार की त्वरित सेवा से ब्रजेशजी संघ व परिषद की जानकारियों को जन – जन तक पहुंचा रहे हैं। प्रवचन के अन्त में मुनिराज श्री विनीतरत्नविजयजी म.सा. के गुणों का स्मरण करते हुए भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। हुबली में परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारी अध्यक्ष रमेश धरू की अगुवाई में साध्वीश्रीजी के दर्शन वंदन कर क्षमायाचना की। हुबली परिषद ने अभा श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का रेलवे स्टेशन पर आत्मीय स्वागत कर तीन वर्षों से स्टेशन पर सफलतम संचालित प्याऊ का अवलोकन करवाया। दोपहर

में नवयुवक व महिला परिषद की संयुक्त बैठक को सम्बोधित करते हुए राष्ट्रीय पदाधिकारी रमेशजी धरू, जावंतराजजी वाणीगोता, अशोकजी श्रीश्रीमाल, भरतजी वोहरा ने भाषण दिये।

परिषद के राष्ट्रीय मंत्री प्रकाशजी हिराणी ने हुबली परिषद परिवार में नई उर्जा का संचार किया जिससे पूरा सदन एक बार जोर से परिषद-परिषद की आवाज से गूंज उठा। स्थानीय परिषद व श्रीसंघ ने परिषद पदाधिकारियों का आत्मीय व श्री दिनेशजी ने शाब्दिक स्वागत व परिचय दिया। बैठक का संचालन कर रहे परिषद सचिव संजय सेठ ने बताया कि परिषद संघ का एक पर्याप्त बन गई है। संचार व प्रचार में अग्रणी परिषद धार्मिक व अन्य गतिविधियां नियमित कर रही है, प्रतिदिन गायों को गुड-रोटी खिलाने का कार्य करते हैं। अभी-अभी नवगठित महिला परिषद अध्यक्ष श्रीमती मिंटू जैन ने बताया की साठ सदस्यों की महिला परिषद की पूनम जैन, रिंकु जैन व अन्य तपस्वी नवयुवक परिषद के गुणवंत जैन, निलेश जैन का बहुमान किया। आभार हुबली परिषद अध्यक्ष नितेश जैन ने माना।

राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने हुबली संघ द्वारा साध्वीश्रीजी की प्रेरणा से श्री राजेन्द्रसूरि आराधना भवन हेतु ली गई जमीन का भी अवलोकन किया। संघ के प्रमुख श्री इन्दरमलजी, मांगीलालजी, अचलजी, कांतिलालजी व शांति मरूधर जैन संघ के सदस्य उपस्थित थे।

कुम्भोजगिरी तीर्थ - राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने कुम्भोजगिरी तीर्थ पर दर्शन पूजन व **सांगली** में महान व उग्र तपस्वी आचार्यदेवेस श्री हँसरत्नसूरिजी म.सा. के दर्शन वंदन कर आशीर्वाद लेते हुए तप की सुख शाता पृच्छा की।

अति आकर्षक 'जहाज मंदिर' के दर्शन भी किये। ट्रस्ट अध्यक्ष श्री चम्पालालजी कबदी ने कुम्भोजगिरी में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशजी धरु व पदाधिकारियों का अभिनन्दन किया। परिषद व ट्रस्ट ने सूरत के दो मुमुक्षु का बहुमान भी किया।

ट्रस्ट अध्यक्ष श्री चम्पालालजी कबदी जो सांगली में अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के अध्यक्ष भी हैं ने तथा परिषद के श्री निलेशजी राजगढ़ वाला, जयंतीलालजी कबदी, श्री जितेन्द्रजी नानेशा, महावीरजी छाजेड़, महावीरजी भंसाली ने सांगली परिषद व अन्य संस्थाओं द्वारा पिछले अगस्त सितम्बर में बाढ़ से प्रभावित लोगों को व जेल में बाढ़ में फसे कैदियों की गई सहायता का जिक्र किया। परिषद साथियों व अन्य दान-दाताओं ने 13 दिनों तक लगभग 10000 भोजन के पैकेट प्रतिदिन स्वयं व सेना के माध्यम से बाँटे। इसके अलावा

जरूरतमंदों को आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई तथा समाज के बाढ़ से प्रभावित लोगों को पुनः व्यवसाय स्थापित हेतु आर्थिक सहयोग किया। एक नाव भी खरीदकर रेस्क्यू ऑपरेशन से अनेक प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। सेवा के इस कार्य का महाराष्ट्र सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री सुभाषजी देशमुख तथा कमिश्नर व कलेक्टर महोदय ने स्वयं अवलोकन कर प्रशंसा की। राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने इस उत्कृष्ट कार्य की खूब-खूब अनुमोदना की।

बैंगलोर – अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारी दक्षिण प्रांत के बैंगलोर शहर पहुँचे यहाँ पर चातुर्मास हेतु विराजित पूज्य साध्वीश्री सूर्योदयाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री कैलाशश्रीजी , साध्वीश्री विपुल दर्शिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन वन्दन कर परिषद् परिवार की ओर से क्षमायाचना की। साध्वीश्रीजी के प्रवचन का लाभ भी लिया। साथ ही प्रवचन में बैंगलोर श्रीसंघ व परिषद परिवार की ओर से स्वागत गीत व बच्चों के द्वारा धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर सभी राष्ट्रीय पदाधिकारियों का बहुमान बेंगलोर श्रीसंघ व परिषद परिवार की ओर से शाल श्रीफल व साफा पहनाकर स्मृति चिन्ह लाभार्थी दक्षिण प्रांतीय अध्यक्ष बाबुलाल सवाणी द्वारा भेंट किया गया। दियावट डायरेक्टरी का विमोचन साध्वीश्रीजी की निश्रा में राष्ट्रीय पदाधिकारी द्वारा किया गया जिसके लाभार्थी चोपड़ा एक्सपोर्ट व लियो गारमेंट रहे। अध्यक्ष डुंगरवाल द्वारा वर्ष भर में किये गये कार्यो का विवरण बताया। बाद में नवयुवक व महिला परिषद की सामूहिक बैठक रखी गई है जिसमें परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश भाई धरू ने सभी को राष्ट्रीय अधिवेशन का निमंत्रण दिया व धार्मिक पाठशाला पर विशेष ध्यान देने का आग्रह किया। इस मौके पर श्री संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीजावन्तराज वाणीगौता, महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल, राष्ट्रीय मंत्री प्रकाश हिराणी, शिक्षामंत्री भरतभाई, मीडिया प्रमुख ब्रजेश बोहरा, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष भंवरलाल कटारिया, पूर्व राष्ट्रीय प्रचार मंत्री ओटमल संघवी, कोषाध्यक्ष हेमराज जैन, वर्तमान बेंगलोर परिषद अध्यक्ष डुंगरमल चोपड़ा, मंत्री नेमीचंद संघवी सहित प्रान्त के व स्थानीय श्री संघ के अध्यक्ष मेघराज भंसाली, कोषाध्यक्ष जयंतीलाल बालर, सह कोषाध्यक्ष त्रिलोकजी भंडारी आदि श्रीसंघ के सदस्य उपस्थित थे। बैठक में परिषद के विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई। परिषद् के चारों इकाई के पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित थे। कार्यक्रम के पश्चात् परिषद् परिवार की स्वामीभक्ति का आयोजन श्रीसंघ की ओर से रखा

गया। कार्यक्रम का संचालन मांगीलालजी वेदमुथा व नेमीचन्द वेदमुथा ने किया। आभार दिलीपजी कांकरिया ने माना।

रानापुर – अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरू, राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल, विनोद पोरवाल, प्रांतीय शिक्षा मंत्री संगीता पोरवाल आदि 5 सदस्यीय दल गुरुवार को रानापुर श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय पहुंचा। उन्होंने सम्यग् ज्ञान समृद्धि योजना के अंतर्गत यतीन्द्र सभा मण्डप में श्री यतीन्द्र जयन्त पाठशाला के बच्चों से सूत्र पूछते हुए उनके अभी तक के धार्मिक ज्ञान की परीक्षा ली। सभी बच्चों ने बारी-बारी से अपने कण्ठस्थ सूत्र दोहराए और जहाँ त्रुटि लगी उन्हें सुधार करवाया गया।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश धरू ने दौरे की जानकारी देते हुए बताया कि समाज में धार्मिक शिक्षा की कमजोरी को दूर करने हेतु सभी धार्मिक पाठशालाओं के बारे में जानकारी लेना और बच्चों के धार्मिक शिक्षा के स्तर को देखकर उनमें सुधार करवाने या अच्छे स्तर वाले बच्चों को आगे जोड़ना मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने बताया कि पाठशाला समाज की नींव है और नींव को मजबूत करने हेतु सभी अपने बच्चों को पाठशाला अवश्य भेजें।

इस अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में सर्वप्रथम सभी अतिथियों का श्रीफल एवम् मोती की माला से स्वागत श्रीसंघ अध्यक्ष चन्द्रसेन कटारिया, परिषद के स्थानीय अध्यक्ष पवन नाहर, समाज के वरिष्ठ मदनलाल नाहर, रखबचन्द कटारिया, मनोहरलाल नाहर, दिनेश नाहर, विनय नाहर, प्रकाश सालेचा, विमल कटारिया, महिला परिषद की आशा कटारिया, मनोरमा सालेचा, सुनीता कटारिया आदि ने किया। स्वागत के पश्चात् परिषद के हीरक जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में सामूहिक सामायिक, नवकारसी, स्नात्र पूजन करने में अग्रणी रहने वाली महिलाओं को परिषद की ओर से पुरस्कृत किया।

स्वागत उद्बोधन चन्द्रसेन कटारिया ने दिया। परिषद की गतिविधियों की जानकारी परिषद अध्यक्ष पवन नाहर ने दी। संचालन रजनीश नाहर ने किया। आभार कमलेश कटारिया ने व्यक्त किया। कार्यक्रम के पश्चात् अतिथि समाज के वरिष्ठ इंदरमल कटारिया के निवास पर उनके जमाई के असामयिक निधन पर संवेदना व्यक्त करने भी गए। वहीं मासक्षमण की तपस्वी श्रीमती अर्चना कटारिया के यहाँ शाता पूछने भी पहुंचे। इस अवसर पर सोहनलाल कटारिया, निरंजन सालेचा, ललित सालेचा, विनय कटारिया, प्रवीण नाहर आदि समाजजन, परिषद साथी एवम् महिलाएँ उपस्थित थीं। ■■■

ज्ञानपीठ परीक्षा 2019 का परिणाम घोषित

मंदसौर । श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ के अधिष्ठाता श्री सुरेन्द्र लोढ़ा तथा अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू ने बताया कि ज्ञानपीठ की परीक्षा 2019 का परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया गया है। कक्षावार तथा केन्द्रवार परिणाम इस प्रकार हैं। अंक सूचियां सभी केन्द्रों को भेज दी गई हैं। जिनको अभी तक प्राप्त नहीं हुई हो वे मंदसौर सम्पर्क करें।

सभी केन्द्रों के प्रमाण-पत्र तथा पुरस्कार सूची एक माह में केन्द्राध्यक्षों को प्राप्त हो जावेंगे। इस वर्ष से पुरस्कार बैंक के माध्यम से ऑन लाईन भेजने का निर्णय किया गया है। अतएव सभी केन्द्राध्यक्ष बैंक का नाम खाता का नाम, खाता नं. बैंक का आईएफएस कोड मंदसौर लिखकर भेज दें ताकि पुरस्कार राशि व्यवस्थित पहुंच सके।

आशा है सभी स्थानों पर अगले वर्ष के लिये परीक्षा की तैयारी छात्रों से प्रारंभ करवा दी जायेगी। नये केन्द्रों की स्थापना के लिए भी प्रयत्न कीजिये । जय जिनेन्द्र !

उदय (प्रथम)– 1. कुक्षी – कु. राखी जैन (द्वि), कु. आर्या (तृ), कु. आशी (द्वि), कु. जीया चौधरी (द्वि), कु. आंशिता (द्वि), जैनिल चौधरी (द्वि)

2. नारायणगढ़– अंगूरबाला बोरिया (तृ), चेतना कंगरेचा (द्वि), अमिता हीगड़ (द्वि)।

उदय प्रथम

3. पिपल्यामंडी – कु. प्राची सैनी (द्वि), कु. क्षमा चौरड़िया (प्र), कु. चेतस्वी सकलेचा (उ) ,कु. अर्पिता जैन (उ) ,कु. प्रियंका दख (द्वि), कु. क्वीनी जैन (प्र)

4. मनासा– कु. संश्रिता हीगड़ (उ) ,श्री शिल्पा हीगड़ (प्र), श्वेता हीगड़ (प्र), भव्यांश डांगी (द्वि), हर्षिता डांगी (उ),प्रीति डाँगी (प्रा), रिंकू बोथरा (प्र), प्रियांशी मनावत (प्रा), सुनिता मनावत (प्र), देवांग बोथरा (उ)

5. खवासा– सोनिया वागरेचा (उ)

6. पिपलौदा – शेखर गेहलोत (तृ), कु. साक्षी गेहलोत (तृ), कु. साक्षी छाजेड़ (प्र), कु. अवस्थी जैन (द्वि), कु. मंजु बोहरा (द्वि)

7. रिंगनोद– सिद्धी डूंगरवाल (द्वि), तनिषा डूंगरवाल (द्वि), भव्याश्रीमाल (तृ), नेहा श्रीमाल (द्वि), साक्षी चौपड़ा (प्रा), विधी चौपड़ा (प्रा), परिधी चौपड़ा (प्र), प्राची चौपड़ा (प्रा), मिनल मेहता (प्रा), जय चौपड़ा (तृ), संस्कार दसेड़ा (तृ), तनिष्क मेहता (प्रा), मनोज मेहता (उ), गगन मेहता (तृ), निकिता चौपड़ा (प्रा), मोनिका चौपड़ा (प्रा), शिल्पा दसेड़ा (प्र), अरुणा चौपड़ा (प्र), अपूर्वा चौपड़ा (तृ), निष्ठा चौपड़ा (द्वि), आशा चौपड़ा (प्र), प्रिंस डूंगरवाल (प्र), सलोनी डूंगरवाल (प्रा), प्रियल

श्रीमाल (प्रा.), अनमोल डुंगरवाल(तृ)।

8. विनोता – कु. नेहल मूणत (प्र), कु. शिवानी मूणत (प्र) , श्रेयांश जैन (तृ), छवि मूणत(प्र), दक्ष मूणत (तृ), मनिषा मूणत (द्वि), कामना जैन (द्वि), प्रमिला मुणत (उ) ,सोनल मूणत (प्र), लतादेवी मूणत (द्वि), पद्माबेन मूणत (प्र), शांताबेन मुणत (द्वि), कांता बेन (द्वि), मधुबाला मुणत (प्र), मुन्नीदेवी मूणत (द्वि), मंजु बैन जैन (द्वि) ।

9. कुकडेश्वर - दिक्षिका छाजेड़ (प्रा), शिवानी छाजेड़ (प्रा), मोनिका छाजेड़ (प्रा), रीति जोधावत (प्रा), धरा बाबैल (प्र), कनिष्का बाबैल(प्र), इतिशा बाबैल (प्रा), परी छाजेड़ (द्वि), सुनीता श्रीमाल (प्र), रेखा बाबेल (द्वि), शिल्पा मारू (प्र), स्मिता मारू (प्रा), मोनिका मारू (प्रा), कविता जौधावत (द्वि), हर्षिता छाजेड़ (द्वि), अंजली मारू (प्रा), सपना बाबेल (प्रा), आशा पटवा (प्रा), मोना बाबेल (प्रा), तारा बाबैल (द्वि), सौम्य पटवा (तृ), भूमि बाबेल (प्र.)।

10. भाटपचलाना– कु. दिया संघवी (प्रा.), दीपिका संघवी (प्रा.), कु. नेहल गिरिया (प्र.), कु. प्राची संघवी (प्र), कु. रिया संघवी (प्रा.), कु. आशी कटलेचा(द्वि), कु. यशवी गिरिया (प्र), अविका सोनी (प्र)।

11. बदनावर– ईशिका रांका (उ), तनवी जैन (द्वि), अक्षिता चौरड़िया (प्रा), सौम्या चौरड़िया (तृ), समीक्षा चौरड़िया (तृ), प्रकृति पटवा (प्रा), अनिष्का बोहरा (उ) ,लक्ष्य पटवा (द्वि), ओजस डोसी (तृ), विशी सकलेचा (प्र), संगीता चोपड़ा (प्र), मिनाली चौरड़िया (प्र), रानू लोढ़ा (प्र), मोनिका जैन (प्र), श्री कीर्ति भटेवरा (प्र), मीना सेठिया (द्वि), आरती पटवा (प्र), श्री कल्पना बोहरा (प्रा), कु. नव्या गादिया (तृ), कु. अनवी गादिया(उ), श्री रक्षिता वागरेचा (प्रा), प्रीति चौरड़िया (प्रा), पायल सर्राफ (प्रा), ज्योति मोदी (प्र), श्री कोमल खाबिया (प्र), सिद्धि जैन (द्वि) ।

12. बाग– यावी जैन (उ) ,पीहु जैन (उ), मीत जैन (तृ), अर्पित जैन (उ)

13. ढ़ोढर– प्रियंका बरड़िया (प्रा), पिंकी कोठारी (द्वि), कु. सुरभि चोरड़िया (प्र)।

14. खट्टाली– हितांशी मेहता (उ) , दर्शनी मेहता (प्रा.), शिवानी मेहता (प्र), कु. निकिता जैन (प्रा), कु. पायल मेहता (प्रा), शोभानी मेहता (प्र), कु. निशी जैन (द्वि)।

15. नीमच – सरिता चौधरी (प्रा), वेतल चौधरी (प्र), हीना चौधरी (प्रा), प्रियंका सेठिया (ठि), पूजा सेठिया (प्र), सुक्ती आयुषी गांग (प्र), कृतिका गांग (तृ), दीपाली सेठिया (द्वि), सुश्री निकिता सेठिया (प्र), अक्षिता चौधरी (तृ), श्रुति चौधरी (प्रा), सुहानी बोकड़िया (द्वि), सुचिता जैन (प्र)।

16. जोबट – स्तुति डुंगरवाल (द्वि), हित डुंगरवाल (तृ), हार्दिक डुंगरवाल (उ),दर्श डुंगरवाल (द्वि), अंशिका जैन

(प्रा), दीप्ति डुंगरवाल (प्रा), छाया डुंगरवाल (प्रा), अर्चना डुंगरवाल (प्र), अनीता चत्तर (प्र), पूजा जैन (प्र), शीतल डुंगरवाल (प्रा), अदिती जैन (प्र)

17. दलौदा – पिंकी जैन (प्र), पिंकी जैन (प्रा), विधी जैन (प्र)।

18. कालुखेड़ा – रानु छाजेड़ (प्र), कु. साक्षी जैन (प्र), कु. साक्षी नाहर (प्रा), कु. दिपाक्षी छाजेड़ (प्र), प्रियांशी भंडारी (प्रा), प्रियांशी भंडारी (उ), सिम्मी भंडारी (तृ), अंतिम छाजेड़ (प्र), शानु छाजेड़, (प्र), रुचिका छाजेड़ (द्वि), कु. दिपीका जैन (प्र), वीणा भंडारी ((प्र), रीना भण्डारी (प्र), सीमा भण्डारी (प्र), मोना भण्डारी (प्रा), रचना नाहर (द्वि), सिद्धि नाहर (उ) , शानू छाजेड़ (प्र), ऋषभ भंडारी (द्वि)।

19. निम्बाहेड़ा – संगीता ढेलावत (प्रा), सीमा जैन (द्वि), प्रतिमा विराणी (प्र), प्रियंका डुंगरवाल (प्र)।

20. उज्जैन – नीव चत्तर (द्वि), श्री नीता गादिया (प्रा), श्री शोभा चत्तर (प्र)

21. बड़ावदा – मीना ओरा (प्र), रीना सकलेचा (प्र), राहुल सकलेचा (द्वि)।

22. धार – यश जैन (द्वि), कु. ड्रिमी जैन (द्वि), सीमा कर्नावट (प्र), निधी जैन (प्र), कु. अंकिता जैन (प्र), अंजु वागरेचा (प्र), प्राची मण्डलेचा (द्वि), दक्ष धोका (द्वि), पार्श्वनाहर (उ), क्रिया जैन (उ),

23. राणापुर – मोक्षा नाहर (द्वि), माही जैन (द्वि), निति सालेचा (द्वि),नेहा कटारिया (प्र), वैदी जैन (तृ), अर्हम नाहर (प्र), प्रेक्षा कटारिया (द्वि), हनी कटारिया (प्र), ज्योति नाहर (प्रा), कु. सुदर्शना नाहर (प्रा), सोनल कटारिया (प्रा), राशी कटारिया (प्रा), भावना कटारिया (प्र), अक्षत कटारिया (प्रा), नीलम कटारिया (प्रा), मधुबाला जैन (द्वि), प्रियंका कटारिया (प्र), नंदा कटारिया (प्र), सुश्री गर्वी जैन (उ), दिव्य जैन (तृ)।

24. करवड़ – अमीषा भण्डारी (प्रा)।

25. महिदपुर रोड़ – आयुषी कोचर (प्र), सोम्या बराड़िया (तृ), अंगुरबाला कोचर (द्वि), यश जैन (द्वि), चहेती भण्डारी (तृ), गुनगुन बोथरा (तृ), सरिता भण्डारी (तृ)।

26. रतलाम – नमित जैन (प्र), सुनिता कोठारी (प्र), प्रगति कटारिया (प्रा), सार्थक कास्टिया (प्रा), दिव्या जैन (प्र), कविता रजावत (द्वि), रुचि सकलेचा (प्रा), कु. स्नेहा गुगालिया (प्रा)।

27. इंदौर – आर्या जैन (द्वि), ज्योति जैन (प्र), जैनेश जैन (द्वि), सिद्धी अस्टोलिया (द्वि), कु. मोक्षा जैन (द्वि), कु. आदि कोठारी (तृ), कु. सृष्टि जैन (द्वि), सोम्य जैन (उ), सुयश बोहरा (उ), आज्ञा जैन (द्वि), मानस जैन (उ), अविका जैन (द्वि), आदित्य मारु (द्वि), भारती मारू (प्रा), जयश्री डोसी (प्र), हीर कोठारी (प्र), ऋतिका संघवी (द्वि), यत्न जैन (प्र), अदिती मारू (प्रा)।

29. किशनगढ़ – हिमांशु रांका (प्र), हेमलता कर्नावट (प्रा), मन्जु कर्नावट

(प्रा), राजुल चौरड़िया (प्रा), कविता भंडारी (प्रा), श्री विजया चौरड़िया (द्वि)।

30. टाण्डा – स्नेहा डुंगरवाल (उ), स्तुति बाफना (द्वि), अमन लोढ़ा (उ), भव्य भण्डारी (उ), निमीष जैन पगारिया (तृ)।

31. खाचरौद – सिद्धि बोराना (प्र), विरति बोराना (प्र), कु. कृपा कुँवर (प्र), दिपाली भटेवरा (प्रा), कुमकुम भटेवरा (प्रा), ललिता कुँवर (द्वि), श्रुति सुराणा (प्र), मितांश जैन (प्र), देशना कुँवर जैन (प्रा)।

32. सांरगी – विधी तलेसरा (प्र), विनी जैन (प्र), कीर्ति तलेसरा (प्र)।

33. मेघनगर – श्री पूनम कोठारी (प्र)

34. रिंगनोद (धार) कविता जैन(प्र)

35. दसई – दिव्या मण्डलेचा (प्र), शुचि मण्डलेचा (द्वि)।

36. जावरा – श्वेता कोठारी (प्र), अनर्व दसेड़ा (तृ), नमन मेहता (उ), रोहित ओरा (तृ), जैनी पगारिया (प्र), प्रसिद्धि चौरड़िया (तृ), जय छाजेड़ (तृ), निकिता छाजेड़ (प्र), सर्वथा शेखावत (प्र), अक्षिता शेखावत (प्र), मीत जैन (द्वि), दीपिका चौपड़ा (प्रा), चिराग मेहता (उ), मोहित खेमसरा (तृ), ओजस सुराणा (उ), चन्द्रशेखर जैन (प्र), कान्ता सुराणा (तृ), प्रचिता चंडालिया (द्वि), पायल कांठेड़ (प्रा), रुचिका बाफना (प्र), नैतिक छाजेड़ (तृ), कु. भाविका धारिवाल (प्र), हिमांशु दसेड़ा (तृ), प्रियंका भंडारी (प्र), निकिता कोठारी (प्र), आयुषी दसेड़ा (प्रा), मुस्कान बाफना (प्रा), कविता संघवी (प्र), आरवी भंडारी (उ), कु. अवनी दसेड़ा (द्वि), नेहल मेहता (तृ), हार्दिक धारिवाल (तृ), रत्नराज तांतेड़ (तृ), वर्षा धारिवाल (प्रा), कु. अक्षरा जैन (द्वि), आरुषी तांतेड़ (प्र), अर्शिका तांतेड़ (प्र), अक्षा कर्नावट (उ), भूमी जैन (प्र), डॉली धारीवाल (प्र), निशा कोचर (प्र)।

37. कुशलगढ़ – प्रियांशी मेहता (प्रा), कु. सिद्धि चंडालिया (उ), प्रक्षाल गादिया (उ), वर्षा नाहटा (प्र), दामिनी जैन (प्र)।

40. ताल – कु. सलोनी मुणत (प्र), कु. हर्षिता मुणत (प्रा), श्री अंकिता धाकड़ (प्र), कृतिका जैन (उ), पूनम आँचलिया (प्र)।

41. बड़वाह – पूनम पारख (प्रा), ज्योति बम (द्वि), अभिलाषा सांड (द्वि), निकिता सुराणा (द्वि), शालू जैन (द्वि)

42. आलोट – जीवन पारिख (प्रा), आर्यन भण्डारी (द्वि), पुष्पा जैन (प्रा), सारिका पारिख (द्वि), सारिका पारिख (प्र)।

43. पारा – मीना काचेड़ (प्रा), चहेती कोठारी (उ), खुश्बु छाजेड़ (प्र), सोनल कोठारी (प्र),प्रिया कोठारी (प्रा)।

44. धुधंड़का – ख्याति जैन (प्र), रीतिका जैन (द्वि), राजकुमारी जैन (द्वि), प्रेरणा जैन (प्र)।

45. नागदा जक्शंन – विधी पगारिया (तृ), तनिषा कोचर (तृ), संयति (प्र), सोनू पावेचा (प्र), प्रविश कोठारी (प्र), चहेती

कोठारी (द्वि)।

46. धार – काव्य जैन श्रीमाल (उ), अक्षय धाड़ीवाल (उ), कृति श्रीमाल (तृ), जिज्ञासा जैन (प्रा), पलक रांका (उ), शार्डल पगारिया (तृ), पुष्पलता पारिख (तृ), विभा काठेड़ (प्र), रोशन बेन कांकरिया (तृ), दुर्वा जैन (प्र), शांताबम (उ), वंशिका जैन (तृ), भूमि जैन (उ)।

47. राजगढ़ – मनीष जैन (तृ), नेहा जैन (प्रा), निवी पुराणी (प्र), अश्मी पुराणी (तृ), पलक जैन (प्र), स्वाति मोदी (द्वि), हिमांशु जैन (प्र), प्रकृति जैन (तृ), नेहा जैन (द्वि), आरोही चत्तर (द्वि)।

48. भाबरा – पूजा जैन (उ), कु. महक जैन (उ), रूपाली जैन (द्वि), भावना जैन (तृ), पूजा जैन (प्र), इर्शिता जैन (द्वि), राहुल मेहता (तृ)।

49. मनावर – दिव्या कांकरेचा (प्र), अविना कांकरेचा (प्र), विपुल कांकरेचा (द्वि), कलश कांकरेचा (प्र), सुहानी कांकरेचा (उ), कल्पना खटोड़ (प्र)।

50. बड़नगर – मेघा ओरा (प्र)

51. झाबुआ– हर्षित रूनवाल (द्वि), नैतिक रूनवाल (उ), क्रिश रूनवाल (द्वि), माहीर जैन (द्वि), अनन्त जैन (तृ), रिया जैन (प्र), श्रेया कोठारी (प्रा), मंजू कोठारी (प्रा), प्रतिभा रूनवाल (द्वि), श्री अंतिम राठौर (प्र), श्रुति सकलेचा (प्र), ऐश्वर्या कोठारी (प्र), अनिता रूनवाल (द्वि), पायल ललवानी (प्र), सुहानी बाबेल (प्र), आगम संघवी (द्वि), सौनाली जैन (द्वि), शकुन्तला जैन (तृ), आदी जैन (उ), वामा जैन (उ)।

54. थांदला – नेहा रविन्द्र मोदी (प्र), अंकेश पोरवाल (प्र), रेखा जैन (द्वि), पूजा पोरवाल (प्र), हर्षी जैन (तृ)।

55. छोटी सादड़ी – साक्षी तेजीवत (प्रा), सलोनी जैन (प्र), दिव्या तेजीवत (द्वि), प्राची तेजीवत (प्र), नमन चोरड़िया (उ), दिक्षा जैन (द्वि), नीतू जैन (प्रा), पूजा गोदावत (प्र), खुशी जैन (प्र), उपासना जैन (प्रा), जिनेश तेजीवत (प्र), तनिषा तेजीवत (प्र), पियु नवलखा (तृ), अक्षरा खिमेसरा (प्र), कोमल गोदावत (प्रा), राजबाला (प्रा), सुमनदेवी नवलखा (द्वि)

56. चीताखेड़ा – रानू खिमेसरा (तृ), जयति मंडलेचा (प्र), रिया मंडलेचा (प्र), शाश्वता जाटारिया (तृ) सुविधी जाटरिया (प्र), निधी नवलखा (प्र), शिल्पा कोठारी (प्रा), संध्या खिमेसरा (प्रा), खुशी नवलखा (द्वि), राखी बोहरा (तृ), महक बोहरा (उ), मनस्वी जैन (द्वि), राजकुमारी नवलखा (द्वि), आँचल बोहरा (प्र), दिशा कांकरेचा (प्र), सिमरन कांकरेचा (प्र), मधुबाला जैन (द्वि), रंजना नवलखा (प्र), सुषमा कांकरेचा (द्वि), प्राची कांकरेचा (प्र), श्रेया खिमेसरा (प्र), श्रीकांता खिमेसरा (तृ), मुक्ति बोहरा (प्र), आँचल बोहरा (प्र), भारती जैन (द्वि), ज्योति जाटरिया (तृ), श्रुति खिमेसरा (द्वि)।

बैंगलोर (मामूलपेट) केन्द्र क्र.

59.– पुष्पा बेन बनावत (द्वि), निशाकुमारी बरबोटा (प्रा), मनीषा विकासजी (प्र), ललीता दिनेशजी (प्र), समता रतनजी (तृ), किनल सौलंकी (प्र), टीना सौलंकी (प्र), यकिन जैन (द्वि), रेखा रमेशजी (प्र)।

58. बैंगलोर (ऐवेन्यु रोड़)– समता जैन (उ), मामता धोका (द्वि)।

61.– बैंगलोर (यशवंतपुर)– खुशी सौलंकी (तृ), सम्यक चौपड़ा (तृ), रुचि श्रीमाल (प्र), सिद्धी सौलंकी (तृ), हर्षल श्रीमाल (प्र), दिव्या गांधी (प्र), करुणा श्रीमाल (प्रा), प्रांजल श्रीमाल (प्रा.), प्रथम चौपड़ा (द्वि), वीणाबाई गाँधी (प्र), मांगीदेवी संघवी (प्र), श्री जयश्री संघवी (प्र), किरणकुमारी खाटेड़ (प्र.), शांतिदेवी कटारिया (प्रा), वेणीबाई तातेड़ (प्रा), कु. नन्दिता संयक (द्वि)।

62.– बैंगलोर (रांकापार्क)– सिद्धी कवाड़ (द्वि), दिव्या जैन (तृ),रेखा कवाड़ (द्वि), ईना कोठारी (तृ), निशा तलेसरा (प्र), श्री शंकुतला सर्राफ (प्र)।

63.–बैंगलोर (नेहरु नगर)– अर्नवधीलोन (तृ), सारिका सौलंकी (प्र), वृद्धि वेदमुथा (तृ), दिक्षा वेदमुथा (उ), उन्नति धोका (तृ), नेहा कटारिया (तृ), स्तुति शाह (तृ), निर्वी शाह (द्वि), सुनीता श्रीमाल (प्र)।

64.– बैंगलोर (ऐवेन्यु रोड़)– श्वेता अंकुशजी (प्र)।

39.– मंदसौर– रुचिका कोठारी (प्रा), सीमा चंडावला (प्रा), श्री मुनमुन डोसी (प्रा), भावना व्यास (प्र), सुश्री आर्ची हिगड़ (द्वि), निशा जैन (सुराणा) (तृ), वनिता जैन (कांकरेचा) (द्वि), धवल जैन (प्र), ऋषभ कोठारी (प्र), हेमा हिगड़ (प्र), अक्षिता जैन (द्वि)।

■■■

ईष्ट द्वितीय

(1) कुक्षी– ईष्ट श्रीमती कृतिका जैन (प्र), आर्ची जैन (प्र), प्रशंसा जैन (प्र.), सानदी जैन (प्र.), आर्वी पारिख (द्वि), जिया जैन (द्वि), आकृति (द्वि), अश्मि जैन (प्र), श्रीमती महिमा (प्रा.), द्विया विवेकजी जैन (प्रा.)

(2) नारायणगढ़ ईष्ट – श्रीमती निर्मला पामेचा (प्र.), दिव्या कुमठ (प्र.), श्रीमती टीना जैन (प्र.), नेहा कुमठ (प्रा.), अंजलि रूंगरेचा (प्र.), निशा बोरिया (द्वि), प्रियंका कुमठ (प्रा.), श्रीमती मंजु पामेचा (प्र), श्रीमती सुलोचना संगरेचा (द्वि), श्रीमती अमिता बोहरा (प्र.)।

(3) पिपल्यामण्डी ईष्ट– अंजलि सकलेचा (द्वि), दक्ष सकलेचा (द्वि), श्री अमृता जैन (तृ), अंकिता भंडारी (तृ), तनिषा जैन (द्वि), श्रीमती निधी आँचलिया (प्र.), राधा जैन (प्रा.)।

(5) खवासा ईष्ट– मोनिका वागरेचा (प्र.), वैशाली वागरेचा (प्र.)।

(6) पिपलौदा ईष्ट– नेहा भंडारी (प्र.), खुशी नांदेचा (प्र.), सुनिता नांदेचा (प्र.), सावी जैन (प्रा.), सुमित भंडारी (तृ), शुभम भंडारी (प्र), गरिमा नांदेचा (प्र)।

(10) भाटपचलाना– ईष्ट– श्री सपना (द्वि)

(12) बाग ईष्ट– हँसी जैन (प्र)

(13) ढोढर ईष्ट– कविता पगारिया (प्रा), साधना ढेलावत (द्वि), कु. माही बोरदिया (प्र)

(15) नीमच ईष्ट– पल्लवी पोरवाल (प्रा), सुश्री भावना गांधी (प्र), सुश्री गरिमा सेठिया (द्वि), पलक सेठिया (प्र), श्री अंकुश सेठिया (द्वि)।

(16) दलौदा ईष्ट– रानू मोगरा (प्रा), पृथ्वी जैन (प्र), संयम दुग्गड़ (प्र), मेघा जैन (प्र), भाग्य श्री मेहता (प्रा), जया जैन (प्र), रीना जैन (प्रा), हर्ष जैन (द्वि), रचना जैन (प्र), रचिता जैन (प्र), अल्का सुराणा (प्र), चहेती सुराणा (प्रा)।

(19) निम्बाहेड़ा ईष्ट– अनुराधा जैन (द्वि), महिमा सिरोहिया (द्वि), विद्या छाजेड़ (प्रा), कीर्ति पालरेचा (प्र), स्नेहलता पालरेचा (प्र), सुनिता मोदी (प्र)

(20) उज्जैन ईष्ट– तनिषा डाँगी (उ), अक्षत जैन (द्वि), मंजु कोठारी (प्र), अनुष जैन (उ)।

(21) बड़ावदा ईष्ट – रुचि चत्तर (प्र)

(22) धार ईष्ट– चहेती जैन (प्र), भवि नाहर (तृ), मीत कामदार (द्वि), कश्वी वागरेचा (प), अर्हम धोका (प्र), अर्पिता जैन (प्र), पूर्वी मण्डलेचा (द्वि), जैनिशा जैन (प्र), नित्या जैन (प्र), रीत जैन (तृ), आगम वागरेचा (तृ)।

(23) राणापुर ईष्ट– पूनम सकलेचा (प्रा), स्नेहा नाहर (प्र)।

(25) करवड़ ईष्ट– सुहानी भण्डारी (प्र), कु. आयुषी भण्डारी (प्र), भव्या बाफना (द्वि)।

(26) महिदपुर रोड़ ईष्ट– मीनु तलेरा (प्रा), ऋषिका तलेरा (प्रा), शिल्पा कोचर (प्र), गुनगुन कोचर (प्र), अल्का कोचर (द्वि), नीलेश कोचर (प्र), मनोरमा कोचर (प्र)।

(27) रतलाम ईष्ट– शान्तिलाल बावेल (प्र), श्रद्धा लुणावत (प्र), स्वीटी चण्डालिया (प्र), चयन लुणावत (प्रा)।

(28) इन्दौर ईष्ट– कशिश जैन (प्रा), मोक्षा (तृ), दीवा कोठारी (उ), सृष्टि जैन (प्र), खुशी मोदी (तृ), मोनिका बम (प्रा), पद्मा चौपड़ा (प्र), विजया मोदी (प्र), प्रिया जैन (प्रा), माही कोठारी (द्वि), अदिति

जैन (प्र), सृष्टि जैन (प्रा.), कुलदीप परमार (द्वि), हिमांशी जैन (द्वि)।

(30) टाण्डा ईष्ट – श्री अपेक्षा डांगी (प्रा), माही गादिया (उ), आशी जैन (तृ), विधी जैन (प्र), माधव गांग (तृ), अमित डुँगरवाल (प्र), सपना लोढ़ा (प्र)।

(31) लाबरिया ईष्ट – ईशा कटारिया (प्रा), शिवानी जैन (प्र), नमन जैन (द्वि), भव्या कांकरिया (प्र), प्रियंका कटारिया (प्रा), रानी कोठारी (प्र), तमिष कटारिया (द्वि)।

(32) खाचरौद ईष्ट – ज्योति छाजेड़ (प्रा), नीलू कुँवर (प्र), रानी खमेसरा (प्र), भारती नवलखा (प्रा), आशा खमेसरा (प्रा), रीना घोचा (प्र), सिद्धि सुराणा (प्र), विमी लुक्कड़ (प्र), निशि सुराणा (प्रा)

(34) मेघनगर ईष्ट – प्रिया मुथा (प्रा)

(35) रिंगनोद (धार) ईष्ट – तरुणा इमलीवाला (प्र), सोनम जैन (प्र), अर्पिता जैन (प्र), कमला मेहता (द्वि), सुनिता लुणावत (प्र), अनुष्का पंवार (प्र), कलावती जैन (प्र), मंजुला हरण (द्वि), दर्शना कोठारी (प्र), आशा डुंगरवाल (प्र), आस्था डुंगरवाल (प्र), शिखा सेठिया (प्र)।

(30) दसई ईष्ट – उषा पिपाड़ा (प्र), हिताशा पिपाड़ा (प्र), सिद्धार्थ पिपाड़ा (प्र), साक्षी पावेचा (द्वि), रानी खाबिया (द्वि), भूमिका सियाल (द्वि), जैनम जैन (द्वि)।

(37) जावरा ईष्ट – शुभ सुराणा (उ), सुविधी मेहता (प्र), हर्षिता ओस्तवाल (तृ), स्मिता कोलन (प्र), अक्षत भंडारी (तृ), दिव्या गोखरू (प्र), कृपा गोखरू (प्र), अर्हता गोखरू (प्र), वंशिका नवलखा (तृ), विरति संचेती (प्रा), रेखा बरमेचा (प्र), पूर्वा रूनवाल (प्रा), प्रतिक्षा रूनवाल (प्रा), सपना सिसोदिया (प्रा), विधी डांगी (प्र), वत्सल तांतेड़ (तृ), विस्मत तांतेड़ (तृ), नेहा धाड़ीवाल (प्रा), तु. प्रिया चोरड़िया (प्र), नव्या दख (द्वि), जय कोलन (तृ), अक्षत मारवाड़ी (द्वि), मोक्षा सुराणा (प्र), पार्श्वी वन्याया (उ), गोतम गोखरू (द्वि), जिनिशा कोठारी (उ), रानू चोरड़िया (प्र), वर्षा सालेचा (तृ), शिखा दसेड़ा (प्र), अदिती दसेड़ा (प्र), चार्मी धाड़ीवाल (द्वि), संजोती मेहता (प्रा)।

(38) कुशलढ़ ईष्ट – निकिता मेहता (प्र), सुरभि जैन (प्रा), कमलेश लुणावत (प्र)

(40) ताल ईष्ट – कु. निकिता मुणत (द्वि), भक्ति सकलेचा (द्वि), प्रियाशी मुणत (प्र), कुशाल आँचलिया (उ), कल्पना सकलेचा (प्र), निहारिका आँचलिया (प्र), स्वाति सकलेचा (प्रा), टीना सकलेचा (प्रा)

(41) नामली ईष्ट – गजेन्द्र नाहटा (प्र), द्राक्षी जैन (तृ), लब्धि चौधरी (उ), मयुरी

भंसाली (तृ)।

(42) बड़वाह ईष्ट – विजया पारख (प्र), निर्मला मेहता (द्वि), साधना राठौर (प्र), प्रीर्ति डोसी (प्र), रेखा जैन (प्र), मोनिका पारख (प्र), सुनिता चौपड़ा (द्वि), नेहा ओस्तवाल (द्वि), शीतल सुराणा (द्वि)।

(43) आलोट ईष्ट – सुनिता पारीख (प्रा), कविता भंडारी (द्वि), मंजु जैन (प्र)।

(44) पारा ईष्ट – सश्री पिंकी कोठारी (प्रा), मोक्ष जैन (द्वि), नेहा सोलंकी (प्र), सुनिता सियाल (प्र)।

(45) धुन्धड़का ईष्ट– लहर सगरावत (द्वि), रिया जैन (प्र), कविता सगरावत (द्वि), प्रेरणा जैन (प्र), सुमन जैन (द्वि)।

(46) नागदा जक्शन ईष्ट– सुशीला बेन (द्वि), सुनिता छोरिया (द्वि), पीयुष बोहरा (द्वि), मोना नागदा (द्वि), कु. वर्षा गाँधी (द्वि), कृति गाँधी (द्वि)।

(47) धार ईष्ट– श्री रानी श्रीमाल (प्रा), शकुन्तला गोखरू (प्र)।

(48) राजगढ़ ईष्ट– नम्र भंडारी (प्र), निकिता भंडारी (तृ), आरजू चत्तर (प्र), उज्जवल छजलाणी (तृ), छवि छजलानी (प्र), हंसा पोरवाल (प्र), प्रिंसी जैन (प्रा), नमिष भंडारी (द्वि)।

(49) भावरा ईष्ट– रीतु जैन (प्र)

(50) इंदौर ईष्ट– किरण मेहता (प्र)

(51) मनावर ईष्ट– वर्षा भंडारी (द्वि), लब्धि भंडारी (द्वि)

(52) बड़नगर ईष्ट– शानु ओरा (द्वि), श्री सियाल (तृ), प्रिया ओरा (प्रा) , निर्मला ओरा (प्र)।

(53) झाबुआ ईष्ट– ओनिश जैन (उ), संस्कार मेहता (उ), लवेश वागरेचा (उ), पंकज भंडारी (प्र), तमन्ना रूनवाल (द्वि), युक्ति मेहता (द्वि), रचिता कटारिया (प्रा), मेघा कोठारी (प्रा), सरिता बाबेल (प्रा), श्वेता कटारिया (प्र)।

(54) बैंगलोर (मामूल पेट) – नीलम बेन गाँधी (प्र), संगीता नेमीचंदजी (प्र), दीया कुमारी (उ), सविता बेन (द्वि), प्रियांशी कुमारी (द्वि), मनीषा बेन (प्र)।

(60) बैंगलोंर (ऐवेन्यु रोड़) – प्रीतिबेन परमार (प्र), रिंकु बेन (प्र), पद्मा बेन (प्र), पुश्वी कुमार (तृ)।

(63) बैंगलोंर (नेहरू नगर) – काजल वेदमुथा (प्रा), कोमल वेदमुथा (प्र)।

(64) बैंगलोंर (ऐवेन्यु रोड़) – डिम्पल बेन (प्रा), पिंकी (द्वि), सुशिला बेन (प्र)।

(39) मंदसौर – श्री रश्मि बाफना (प्रा), रीना मेहता (प्र), गुंजन पामेचा (उ), अजय छिंगावत (प्र), नेहा खाबिया (प्रा)।

वरिष्ठ (तृतीय)

(1) कुक्षी - तृतीय वरिष्ठ - नैवी जैन (तृ), दीपाशी जैन (द्वि), अदिती जैन (प्रा.)।

(5) खवासा -तृतीय वरिष्ठ - सोनम वागरेचा (द्वि)।

(6) पिपलौदा-तृतीय वरिष्ठ - ज्योति नांदेचा (प्र), हँसा बाबेल (प्रा), क्रिश नांदेचा (प्र), अल्का भण्डारी (प्र)।

(10) भाटपचलाना-वरिष्ठ- निधी संघवी (प्र)

(12) बाग-तृतीय वरिष्ठ- एंजल जैन (प्र), नित्या जैन (प्र), अरिहा जैन (प्र)।

(13) ढोढ़र-तृतीय वरिष्ठ- आशा पगारिया (प्रा), प्रियांशी पारख (प्र), आंशी ढेलावत (द्वि), नेहा बोरदिया (प्र), साधना चौरड़िया (प्र), ऊषा चौरडिया (द्वि), श्रद्धा बोरदिया (प्रा), मेहन्द्र बरड़िया (तृ)।

(17) दलौदा- तृतीय वरिष्ठ- निकता दुग्गड़ (प्रा), रिया जैन (प्रा), प्रिया जैन (प्रा), सोनाली जैन (प्र), सोनू जैन तांतेड़ (प्रा), प्राची पोरवाल (प्र), नेहा जैन (प्रा), पलक जैन (प्रा)।

(19) निम्बाहेड़ा - तृतीय वरिष्ठ- टीना विराणी (प्रा.), रवि चौरड़िया (द्वि), चन्दना विराणी (प्र)।

(20) उज्जैन - तृतीय वरिष्ठ- गर्वित जैन ओरा (प्र), आगम डाँगी (द्वि), शानू बरड़िया (प्रा), सुजल सकलेचा (द्वि), दीप्ति संघवी (प्रा), पंकज रूनवाल (प्र), शोभिता रूनवाल (प्र), ओजस्वी रूनवाल (प्र), सोनम बरड़िया (प्र.), जूली गोलच्छा (प्रा.), जया नाहर (प्रा)

(21) बड़ावदा - तृतीय वरिष्ठ- मीना सकलेचा (प्रा), प्रीति सकलेचा (प्रा), सुनिता चत्तर (प्र), सरला सकलेचा (द्वि), संगीता बाफना (तृ), जैनी सकलेचा (प्र), साधना बाफना (प्रा), खुशी चत्तर (प्रा), संगीता सकलेचा (प्रा), प्राची सकलेचा (प्रा), ममता सकलेचा (प्रा), रिंकू सकलेचा (तृ)।

(22) धार - तृतीय वरिष्ठ- अर्चना मेहता (प्रा), परी जैन (द्वि), प्रीति चंडालिया (प्रा), सरोज भावनिया (प्रा), आदित्य धोका (प्रा.), स्नेहलता कावड़िया (प्रा), अरूणा अम्बोर (प्रा), प्रियल चंडालिया (प्र)।

(24) रंभापुर - तृतीय वरिष्ठ- संगीता भण्डारी (तृ), सलौनी भंडारी (उ), रानी चंडालिया (प्र), अंगूरबाला जैन (बोहरा) (प्र), प्रीति जैन (बोहरा) (प्र), संगीता चंडालिया (प्र), चन्दनबाला चंडालिया (प्र), संतोष कुमारजी (प्र)।

(25) करवड़ - तृतीय वरिष्ठ- विजय लक्ष्मी भण्डारी (प्र), रंजना भण्डारी (प्र), पूनम भंडारी (प्रा), मंजु भंडारी (प्र), ईशा भंडारी (प्रा), गरिमा भंडारी (द्वि), वीरबाला भण्डारी (प्र)।

(27) रतलाम - नीम वाला उपाश्रय - तृतीय वरिष्ठ- प्रेमलता कटारिया (प्र), शान्ता कटारिया (द्वि), युंग खिमेसरा (द्वि), स्वीटी जैन चंडालिया (प्र), खुशी खिमेसरा (प्र), श्यामा देवी नांदेचा (प्र)।

(28) इंदौर - - तृतीय वरिष्ठ- ममता मोदी (प्र), सुधर्मा जैन (प्रा), चंचल भटेवरा (तृ.), नेहल जैन (तृ), विनिता बांठिया (प्रा)।

(29) किशनगढ़ - तृतीय वरिष्ठ- अल्का कोठारी (प्रा), खुशबु कर्नावट (प्र), कल्पा जैन (प्रा), सीमा डाकलिया (प्र) ।

(30) टाण्डा - तृतीय वरिष्ठ- लब्धि जैन (तृ), प्रणय बांठिया (प्र), रक्षित बांठिया (प्रा), श्री स्वर्णा जैन (तृ), प्राचीन कांकलिया (तृ) ।

(31) लाबरिया - तृतीय वरिष्ठ- सुनिता कटारिया (प्रा), विनिता कटारिया (प्रा), सोनाली कटारिया (प्र), शशि कटारिया (प्र)।

(32) खाचरौद - तृतीय वरिष्ठ- प्रक्षाल माण्डोत (उ), अनिता वागरेचा (प्रा), दर्शना पगारिया (प्र), वर्षा घोचा (प्रा), अर्चना भटेवरा (प्र), निशा भंडारी (प्र), मिनी बनवट (प्र), माही घोचा (प्रा), विभा हेमन्त भंडारी (प्र) ।

(34) मेघनगर - तृतीय वरिष्ठ- खुशी मुथा (प्र), पूर्वी भंडारी (प्र)।

(35) रिंगनोद - तृतीय वरिष्ठ- रेखा हरण (तृ), सुधा पंवार (प्रा), प्रखर बांठिया (प्र), पूर्वी बांठिया (प्र), सुरभि जैन (प्र), सीमा पंवार (प्र), ज्योति कोठारी (प्र), रूपाली कोठारी (प्र), अनिता जैन बोहरा (प्र)।

(36) दसई - तृतीय वरिष्ठ- जयंति जैन (द्वि), परिधी जैन (द्वि), केतन जैन (उ), रितिक मंडलेचा (तृ), हिमांशी जैन (प्र), नेहा पावेचा (प्रा)।

(37) जावरा - तृतीय वरिष्ठ- कु. मोना मांडोत (उ), हनुषा तांतेड़ (प्र), अक्षत तांतेड़ (द्वि), आर्ची बांठिया (उ), पूजा संचेती (प्र), गरिमा रूनवाल (प्रा), सीमा मेहता (द्वि), विभा संघवी (प्र), सोनम ओरा (प्र), महावीर तांतेड़ (प्र), सुधा चोरड़िया (द्वि), दीप्ति कोचर (प्र)।

(38) कुशलगढ़ - तृतीय वरिष्ठ- अर्चना चंडालिया (द्वि), गरिमा मेहता (प्रा), सुष्टी विनल मेहता (तृ), निशी लुणावत (प्रा) अंकित नाहटा (प्र), प्रिंयका लुणावत (प्र) ।

(41) नामली - तृतीय वरिष्ठ- नितिशा चत्तर (प्र), पायल जैन (प्र), रिया कोठारी (तृ), संयम नाहटा (प्र), भविका राका (तृ), अनन्या जैन (द्वि), रमाकान्ता श्रीमाल (प्र), तनिषा श्रीमाल (द्वि), अर्चिता चत्तर (प्र), वर्षा राका (प्रा), दिव्याजी नाहटा (प्र), मुकेश कुमार नाहर (प्र), इन्दुबाला चत्तर (प्र), पायल चत्तर (प्र), रेखा चौपड़ा (प्रा), पूनम भंसाली (प्रा), अंकिता चत्तर (द्वि), अर्हम कोठारी (उ), दर्शन नाहटा (द्वि) ।

(46) नागदा जंक्शन - तृतीय

वरिष्ठ – आशी जैन (उ), शीतल कांकरिया (प्र), मनीषा गांग (द्वि), संगीता कोचर (उ), प्रतिमा कुंवर (प्र), प्राक्षी चौधरी (तृ)।

(47) धार – तृतीय वरिष्ठ – नेहल श्रीमाल (प्रा)

(48) राजगढ़ – तृतीय वरिष्ठ – नवकार जैन (द्वि), राशि जैन (तृ), मितवा प्रणय भंडारी (प्र), संजली जैन (प्र), लता भंडारी (प्र), दर्शित छजलाणी (द्वि), दीपा रितेशजी मोदी (प्र), शिखा गोल्डी मामा (प्रा)।

(49) भाबरा – तृतीय वरिष्ठ – कु. लविशा जैन (तृ), परिधी जैन (प्रा), अर्पिता जैन (प्र), शोभा जैन (द्वि), कुसुमलता (प्र)।

(50) इंदौर – तृतीय वरिष्ठ – प्रीति गिरिया (प्रा), सोनम पीपाड़ा (प्र)।

(51) मनावर – तृतीय वरिष्ठ – रानू डूँगरवाल (प्र)।

(52) बड़नगर – तृतीय वरिष्ठ – रुपाली सियाल (प्र), अमिता सियाल (प्र), अनिता सर्राफ (प्रा)।

(53) झाबुआ – तृतीय वरिष्ठ – मोहक जैन (द्वि), रजनी रूणवाल (उ), संगीता सकलेचा (प्रा)।

(54) थांदला – तृतीय वरिष्ठ – केवल जैन (तृ), जैनम जैन (लोढ़ा) (तृ)।

(59) बैंगलोर (मामूलपेट) – तृतीय वरिष्ठ – निकिता जैन (प्र), माला जैन (द्वि), मधुबेन बोकड़िया (उ), रेखाबेन जैन(प्र), वर्षा कुमारी जैन (प्र), लीना कुमारी श्रीमाल (प्र), वेणिका सौलंकी (प्रा), पुष्पाबेन जैन (प्र), निधी कुमारी (प्र), मीना बेन भंसाली (प्र), गौरव मनोजजी (तृ), मंजु राजूजी (प्रा), दिव्याकुमारी (प्र)।

(60) बैंगलोर (ऐवेन्यु रोड़) – नीता मेहता (द्वि), भारती बेन (तृ), कविता जैन (द्वि), ज्योत्सना बेन (प्र), दिव्या बाफना (द्वि), शीतल जैन (द्वि)।

(64) बैंगलोर (ऐवेन्यु रोड़) – प्रिंयका बंसल (प्र), लक्ष जैन (उ), रेखाबेन संघवी (द्वि)।

(39) मंदसौर – ज्योति चपरोत (प्र), अलका चंडावला (प्र), टीना हिगड़ (प्र)।

■■■

ज्येष्ठ (चतुर्थ)

(5) खवासा – चतुर्थ ज्येष्ठ – पूर्वी वागरेचा (प्रा), दिप्ती वागरेचा (तृ), मंजु वागरेचा (प्र), वर्षा वागरेचा (तृ)।

(10) भाटपचलाना – चतुर्थ ज्येष्ठ – रिद्धि संघवी (प्र), ज्योति जैन (द्वि), चारूलता रूनवाल (प्र), परी रूनवाल (प्र)।

(19) निम्बाहेड़ा – चतुर्थ ज्येष्ठ – प्रभादेवी पारख (प्र), पुनिता मोदी (प्र),

भावना चपलोत (प्र), चन्द्रकान्ता सेठिया (प्र)।

(20) उज्जैन - चतुर्थ ज्येष्ठ - कु. दिव्यांशी लुक्कड़ (द्वि), सुयश सकलेचा (तृ), सलोनी बराडिया (द्वि), मोक्षित चत्तर (द्वि)।

(23) राणापुर - चतुर्थ ज्येष्ठ - संगीता सकलेचा (प्र), चेतना सकलेचा (प्र), सपना सकलेचा (प्र)।

(27) रतलाम - चतुर्थ ज्येष्ठ - सरोज कांसवा (प्रा), अंकित सकलेचा (प्र), आनन्द जैन (प्र)।

(29) किशनगढ़ - चतुर्थ ज्येष्ठ - वनिता कोठारी (प्रा), संध्या मेहता (प्रा), नीतू करनावट (प्र)।

(33) सारंगी - चतुर्थ ज्येष्ठ - बीना तलेसरा (प्र), मेघा तलेसरा (प्रा), पायल तलेसरा (द्वि), सुरभि तलेसरा (प्र), रिया तलेसरा (प्र), श्रद्धा तलेसरा (प्र), कुनिका तलेसरा (प्र)।

(34) मेघनगर - चतुर्थ ज्येष्ठ - नेहा भंडारी (द्वि), परी जैन (द्वि)।

(36) दसई - चतुर्थ ज्येष्ठ - जैनम जैन (द्वि), दर्शन पावेचा (द्वि), बबीता मण्डलेचा (उ), कृतिका सियाल (प्र), मुस्कान पावेचा (प्र)।

(37) जावरा - चतुर्थ ज्येष्ठ - सारिका कोलन (द्वि), अंजु तातेड़ (प्र), गरिमा चौपड़ा (प्र), शांलू बांठिया (प्र), कु. आशी दसेड़ा(द्वि), कु. कृति भंडारी (प्रा), रानी सुराणा (प्रा), स्नेहा बांठिया (प्र), अंजलि पीपाड़ा (द्वि), अंजलि चौरड़िया (द्वि)।

(38) कुशलगढ़- चतुर्थ ज्येष्ठ - तर्लिका नाहटा (प्रा), प्रसंग चोरड़िया (द्वि)।

(44) पारा - चतुर्थ ज्येष्ठ - रश्मि कोठारी (प्र), स्वीटी जैन (पगारिया) (प्र)।

(46) नागदा जंक्शन - चतुर्थ ज्येष्ठ - शिल्पा गुगलिया (प्र), कोमल चौधरी (द्वि) मोक्षा गुगालिया (उ), अंतिम ओरा (प्रा), सोनु सकलेचा (प्र)।

(50) इंदौर- चतुर्थ ज्येष्ठ - मोना श्रेणिकजी वोहरा (प्र)।

(51) मनावर - चतुर्थ ज्येष्ठ - मीनल चत्तर (प्र)

(52) बड़नगर - चतुर्थ ज्येष्ठ - श्रद्धा जैन (द्वि)।

(53) झाबुआ - चतुर्थ ज्येष्ठ - अंश जैन (द्वि), हर्ष लोढ़ा (उ), ममता संघवी (द्वि), उषा मेहता (प्र), मंजु जैन (द्वि), ज्योति लोढ़ा (द्वि), प्रेमलता जैन (द्वि), सुषमा जैन (प्र), रेखा कटारिया (द्वि), सोनल संघवी (द्वि)।

(39) मंदसौर - नेहा बाफना (प्र), दिशा डोसी (द्वि), दर्शना डोसी (द्वि), जिनल चपरोत (तृ), ऋषिता चपरोत (तृ), हर्षल जारोरी (उ)।

■■■

श्रेष्ठ (पंचम्)

(10) भाटपचलाना– पंचम ज्येष्ठ – कीर्ति सकलेचा (द्वि), आयुषी कटलेचा (द्वि)।

(19) निम्बाहेड़ा – पंचम ज्येष्ठ – मनिषा मोदी (द्वि), लता डांगी (प्र)।

(20) उज्जैन– पंचम ज्येष्ठ – अनिता संघवी (प्र), डॉ. दीपाली रूनवाल (प्र)।

(23) राणापुर– पंचम ज्येष्ठ – सीमा सालेचा (द्वि), सुनीता कटारिया (प्र)।

(27) रतलाम– पंचम ज्येष्ठ – मधु जैन (सिसोदिया) (द्वि), कु. मानसी मेहता (प्र), श्री प्रवीण बरबोटा (प्रा)।

(32) खाचरौद– पंचम ज्येष्ठ – रमिला खमेसरा (द्वि), निशा वनवट (द्वि)।

(37) जावरा– पंचम ज्येष्ठ – सुरभि चत्तर (प्र), कु. तानिया चौपड़ा (प्र), संगीता रूनवाल (प्र)।

(38) कुशलगढ़ – पंचम ज्येष्ठ – संगीता धारीवाल (प्र)।

(44) पारा– पंचम ज्येष्ठ – बेला सियाल (नागोरी) (द्वि)।

(48) राजगढ़– पंचम ज्येष्ठ – मनोरमा भंडारी (द्वि), नमिता चंडालिया (प्र)।

(50) इंदौर– पंचम ज्येष्ठ – पूनम जैन (द्वि)।

(52) बड़नगर– पंचम ज्येष्ठ – श्री जयणा (जमना) जैन (प्र)।

(53) झाबुआ– श्रेष्ठ – श्री सुनिता जगावत जैन (द्वि), श्री संगीता संघवी (द्वि), श्री रानु रूनवाल (द्वि)।

(39) मंदसौर– श्री अर्चना लोढ़ा (प्र), कु. निकिता धारीवाल (प्र), सुश्री कृतिका जारोरी (प्र.)। ■■■

सुष्ठ (षष्ठम्)

(1) कुक्षी– सुष्ठ – प्रीति जैन (द्वि)

(19) निम्बाहेड़ा– सुष्ठ – सुशील संघवी (द्वि), विमला सिरोहिया (द्वि)।

(20) उज्जैन– सुष्ठ – प्रीति कोठारी (प्रा), चन्द्रकान्ता गादिया (द्वि)।

(27) रतलाम– सुष्ठ – मधु बालागांग (प्र), रमीला बरबोटा (प्र), श्री चन्द्रकान्ता खिमेसरा (प्र)।

(28) इंदौर– सुष्ठ – संयम जैन (द्वि), सोनल जैन (प्र)।

(37) जावरा– सुष्ठ – ज्योति चपड़ौद (प्र), अंगुरबाला मुणेत (द्वि), सौरभ चौरड़िया (प्र), दीप्ति भंडारी (द्वि), आँचल मेहता (प्र), प्रिया मेहता (प्र)।

(38) कुशलगढ़– सुष्ठ – रंजना नाहटा (प्र)।

(44) पारा– सुष्ठ – मोनिका कर्नावट (प्र)।

(39) मंदसौर– रीतु जैन छिंगावत (प्र), मधुबाला धारीवाल (द्वि)। ■■■

श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ परीक्षा- 2019

प्रावीण्य सूची-2019

कक्षा-उदय

रोल नं.	छात्र/छात्रा का नाम	केन्द्र का नाम	प्राप्तांक	प्रावीण्य सूची में स्थान
1910	श्रीमती पायल आयुषजी कांठेड़	जावरा	97	प्रथम
1094	रीति जोधावत	कुकडेश्वर	96	द्वितीय
1389	श्राजुल अजितसिंहजी चौरड़िया	किशनगढ़	95	तृतीय
	कक्षा - ईष्ट			
3079	श्रीमती पल्लवी अर्पितजी पोरवाल	नीमच	96	प्रथम
3086	रानु मोगरा	दलौदा	95	द्वितीय
3218	कु. प्रिया योगेशजी जैन	इंदौर (28)	95	द्वितीय
3263	श्रीमती प्रिया अर्पितजी मुथा	मेघनगर	93	तृतीय
3304	श्रीमती पूर्वा प्रतीकजी रूनवाल	जावरा	93	तृतीय
	कक्षा - वरिष्ठ			
4037	प्रिया राजेन्द्रजी जैन	दलौदा	94	प्रथम
4190	श्रीमती गरिमा गोकुलजी मेहता	कुशलगढ़	94	प्रथम
4054	श्रीमती दिप्ती रितेशजी संघवी	उज्जैन	93	द्वितीय
4316	साधना बाफना	बड़ावदा	93	द्वितीय
4091	श्रीमती पूनम लखनजी भण्डारी	करवड़	93	द्वितीय

4311	प्रीति सकलेचा	बड़ावदा	92	तृतीय
4130	श्रीमती अनिता अनिलजी बागरेचा	खाचरौद	92	तृतीय

कक्षा – ज्येष्ठ

5007	कु. पूर्वी नवीनचंदजी वागरेचा	खवासा	139	प्रथम
5030	श्रीमती वनिता सुशीलजी कोठारी	किशनगढ़	139	प्रथम
5058	कु. कृति धर्मेन्द्रजी भंडारी	जावरा	130	द्वितीय
5025	श्रीमती सरोज तेजमलजी कासवा	रतलाम	127	द्वितीय

कक्षा – श्रेष्ठ

6018	श्री प्रवीणजी बरबोटा	रतलाम	185	प्रथम
6051	कु. जयणा (जमना) जैन	बडनगर	156	द्वितीय
6017	कु. मानसी देवेन्द्रजी मेहता	रतलाम	155	तृतीय

कक्षा – सुष्ठ

7008	श्रीमती प्रीति राजेन्द्रकुमारजी कोठारी	उज्जैन	165	प्रथम
7013	श्रीमती रमीला प्रवीणजी बरबोटा	रतलाम	157	द्वितीय
7041	मोनिका कर्नावट	पारा	155	तृतीय

श्री मोतीलालजी हरण का दुःखद निधन

राजगढ़ । परम गुरू भक्त श्री मोतीलालजी हरण का दुःखद अवसान 1 अक्टूबर 2019 को हो गया. उनकी अंतिम यात्रा निज निवास राजगढ़ से 2 अक्टूबर 2019 बुधवार को निकली। परम गुरु भक्त, समाजसेवी, उदार हृदयी, मिलनसार प्रवृत्ति के श्री मोतीलालजी हरण पुण्य सम्राट के अनन्य भक्त थे।

पूज्यश्री की भावना का सम्मान करते हुए आपने म्यूजियम की भूमि संघ को अर्पित की।

आज वह पावन भूमि गुरु तीर्थ भूमि बनकर इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गई। पूज्य गुरुदेव ने आपकी दान, वीरता, समर्पण व गुरुभक्ति को देखते हुए आपको म्यूजियम का आजीवन ट्रस्टी बनाया था। वे पुण्य सम्राट के अति निकट थे। उनके प्रत्येक प्रसंगों पर आप अनिवार्य रूप से उपस्थित रहते थे। 'रिंगनोद' में जन्में श्री मोतीलालजी का बचपन और युवा अवस्था अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में व्यतीत हुई पर आपने संघर्षशील परिश्रम से एक उपलब्धि भरा मुकाम हासिल किया। इस हेतु आपने ग्राम बोला तथा विभिन्न स्थानों पर अपनी किस्मत आजमाई। राजगढ़ का 'मोती महल' आपकी पहचान बन गई। आपने 'सम्मेद शिखरजी' पालीताना सहित विविध तीर्थों की यात्रा की। आपका वियोग परिवार, संघ, समाज परिषद के लिए अपूर्णनीय क्षति है। आपकी अंतिम यात्रा में बड़ी संख्या में नागरिकों ने भाग लिया। श्री सौबृत त्रिस्तुतिक जैन संघ तथा परिषद परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली। ■■■

अनिलजी राणावत का निधन

राजगढ़ । परम गुरु भक्त श्रद्धेय श्री अनिलजी राणावत सरलता, सरसता, सजगता, विनम्रता एवं सक्रियता की मिशाल थे। उनका निधन विगत दिनों हो गया। गुरुआज्ञा शिरोधार्य उनकी पहचान थी। संघ, समाज व परिषद में सदैव अग्रणी भूमिका में रहे।

फतेपुरा प्रतिष्ठा आयोजन में शानदार प्रदर्शन रहा। तीर्थ रक्षा, संघ एकता के लिए हमेशा सक्रिय रहे। पुण्य सम्राट की निश्रा में होने वाले प्रमुख आयोजनों में लगभग उनकी उपस्थिति रहती थी। पुण्य सम्राट ने उनकी समर्पणता व सरलता को देखते हुए उन्हें अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की महाराष्ट्र इकाई का प्रांतीय संचिव नियुक्त किया था। ■■■

नेत्रदान

परिषद परिवार की सार्थक हुई पहल। पुण्य सम्राट श्री के परम भक्त, परिषद साथी श्री दिलीपजी फूलचंदजी भंडारी अकस्मात अरिहंत शरणम हो गये। परिषद परिवार की पहल एवं परिवार सदस्य श्री कीर्तिजी, नितिनजी, अमितजी भंडारी की स्वीकृति से नेत्रदान का कार्य सरदारपुर व धार हास्पिटल के डॉक्टरों की टीम द्वारा किया गया। इस पहल से किसी व्यक्ति की आँखों को रोशनी मिलेगी। इसके पूर्व भंडारी परिवार के वरिष्ठ श्री फूलचंदजी भंडारी का भी परिवार द्वारा नेत्रदान कराया गया था। इस सुकार्य के लिए भंडारी परिवार की खूब-खूब अनुमोदना।

■■■

तप अनुमोदना समारोह सम्पन्न

जावरा । साध्वीरत्ना अविचल दृष्टा श्रीजी म.सा. की सुशिष्या श्री अमितदृष्टाश्रीजी आदि ठाणा 7 की प्रेरणा से अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सर्राफ प्रकाश कांठेड़ ने मासक्षमण (महा मृत्युंजय तप) एवं उनकी पत्नी श्रीमती आशादेवी कांठेड़ ने सिद्धितप की तपश्चर्या सानंद पूर्ण की। इसके पूर्व भी श्री कांठेड़ अपनी तपस्या के दौरान गच्छाधिपति श्री से पिपलौदा आशीर्वाद लेने पहुंचे एवं संवत्सरी प्रतिक्रमण भी उनकी निश्रा में किया। इस अवधि में परिषद के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सेवंती भाई मोरखिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू, अशोकजी श्रीमाल, श्री जे.के. संघवी, श्री प्रकाश हीराणी, डॉ. श्रीमती कोकीलाजी, श्रीमती अंगुरबाला सेठिया, श्रीमती पद्माजी सेठ, श्री कांतिलाल भंडारी, जन कल्याण मंत्री श्री सुशीलजी छाजेड़, राजकमल जैन ने तपस्वीयों की सुख शांता पूछी एवं बहुमान किया। श्री ब्रजेश बोहरा नागदा श्रीसंघ के साथ पहुंचे एवं अलीराजपुर श्रीसंघ के सदस्य भी पहुंचे एवं तपस्वी दम्पत्ति का बहुमान किया।

दिनांक 25.09.2019 की रात्रि अनुप जैन अर्केष्ट्रा पार्टी द्वारा भक्ति संगीत का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक 26.09.2019 को प्रातः देवदर्शन, शासन माता पूजन के पश्चात् प्रातः 9.15 बजे निवास से वरघोड़ा प्रारंभ हुआ जिसमें सम्पूर्ण जैन समाज के स्नेहीजन बाहर के अतिथी भी विशाल संख्या में सम्मिलित हुए। जुलूस का मार्ग में स्थान - स्थान पर तपस्वी दम्पत्ति का शाल, माला, श्रीफल से विभिन्न महानुभावों, संस्थाओं द्वारा बहुमान किया गया, बी.एल.एम. पैलेस पर साध्वीजी अमित दृष्टाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में धर्मसभा का आयोजन हुआ।

मंगलाचरण कु. प्रियंका चौहान नीमच एवं स्तवन डॉ. शीतल जैन, उज्जैन ने प्रस्तुत किया। पूज्य साध्वीजी म.सा. ने अपने प्रवचन में फरमाया कि तपाराधना बगैर पुण्योदय के संभव नहीं है इंद्रियों पर नियंत्रण करना बहुत कठिन है पर देव-गुरु धर्म के आशीष से कांठेड़ दम्पत्ति ने अपने तप सकुशल पूर्ण किये हैं।

प्रकाशजी पिछले 45 वर्षों से समाज में भी सक्रियता से जुड़े हैं। इस अवसर पर श्रीसंघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता एवं विधायक श्री चेतन्यजी काश्यप ने कहा कि प्रकाशजी के मेरे पारिवारिक संबंध है एवं समाज में हमने वर्षों साथ में काम किया है समाज के साथ ही तपाराधना में भी प्रकाशजी पहले वर्षीतप एवं अब मासक्षमण एवं अन्य तपस्याएँ की है जो सराहनीय है। जावरा विधायक डॉ. राजेन्द्रजी पाण्डेय ने अपने उद्बोधन में कहा कि मेरे बड़े भाई प्रकाशजी ने यह तपस्या कर बहुत बड़ा कार्य किया तपस्या करना, साधारण, सहज नहीं है। बहुत इच्छा शक्ति से ही तप हो सकता है। इस अवसर पर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ जावरा के अध्यक्ष बाबुलालजी तातेड़, श्री ज्ञानचन्द्रजी चौपड़ा, श्री अनिलजी दसेड़ा, श्री शेलेष कांठेड़ मंचासीन रहे सभी ने अपने विचार व्यक्त किये। संचालन प्रवीण नवकार ने किया। मित्रों, रिश्तेदारों, का स्वामी वात्सल्य का आयोजन सम्पन्न हुआ। ■■■

श्री अनिलजी का स्वर्गवास

पूना । परम गुरु भक्त श्री अनिलजी राणावत सरलता, सरसता, सजगता, विनम्रता एवं सक्रियता की मिशाल थे। गुरुआज्ञा शिरोधार्य उनकी पहचान थी। संघ, समाज व परिषद में सदैव अग्रणी भूमिका में रहे। फतेपुरा प्रतिष्ठा आयोजन में शानदार प्रदर्शन रहा। तीर्थ रक्षा, संघ एकता के लिए हमेशा सक्रिय रहे। पुण्य सम्राट की निश्रा में होने वाले प्रमुख आयोजनों में लगभग उनकी उपस्थिति रहती थी।

पूज्य पुण्य सम्राट ने उनकी समर्पणता व सरलता को देखते हुए उन्हें अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की महाराष्ट्र इकाई का प्रांतीय सचिव नियुक्त किया था। गुरुदेव के भरोसे पर सही उतरते हुए पिछले वर्ष राष्ट्रीय पदाधिकारी श्री रमेशजी धरू, श्री जे.के. संघवी, अशोक श्रीश्रीमाल, भरत भाई व्होरा, प्रांतीय अध्यक्ष श्री मोहनजी ढालावत के महाराष्ट्र प्रवास के समय सांगली वाई, गर्जत, कराड़ आदि 6 स्थानों पर परिषद का गठन करवाने में सक्रिय भूमिका निभाई।

अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद परिवार परिषध के महाराष्ट्र इकाई के प्रांतीय सचिव श्री अनिलजी राणावत को भाव भरी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

पू. मुनिश्री विनीतरत्नविजयजी म. का कालधर्म

जोधपुर । सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के जैनाचार्य पुण्य सम्राट युग प्रभावक श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज के शिष्य रत्न एवं गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी महाराज और आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयरत्न सूरीश्वरजी महाराज के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री विनीत रत्न विजयजी महाराज का शाम 3/10/2019 को जोधपुर में देवलोक गमन हुआ है , आप वर्तमान में मुनिराज श्री वीर रत्नविजयजी महाराज की निश्रा में जोधपुर चातुर्मास में विराजमान में मुनिराज का जन्म राजस्थान के सियाणा नगर में हुआ था, आपने गुरुदेव श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज की पावन निश्रा में रहकर निरन्तर अपने संयम जीवन का पालन कर रहे थे।

मुनिराज श्री की डोल यात्रा दिनांक 4 अक्टूबर 2019 को दोपहर 2.15 बजे ऊजी तारा जैन भवन, अमरनगर, जोधपुर से प्रारंभ होकर ओसवाल स्वर्गाश्रम, सिवांची गेट, जोधपुर पहुँची, जहाँ विधि विधान के साथ लाभार्थी परिवार द्वारा मुखाग्नि दी गई। श्री सम्भवनाथ-राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मन्दिर के पदाधिकारी एवं विशाल संख्या में गुरुभक्त उपस्थित थे।

शाश्वतधर्म द्वारा श्रद्धांजली ■■■

श्री धरू को बहिन शोक

मुंबई । श्रीमती रसीलाबेन हीरालाल वोरा मुंबई का 17 अक्टूबर 2019 को रात्रि में निधन हो गया। धरू कुल की लाड़ली श्रीमती विजयाबेन बचुभाई चिमनलाल धरू की बेटी व परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेशभाई धरू व श्री भरतभाई, नवीन भाई धरू की बहन तथा वोरा हालचंद्र भाई खेतसी भाई परिवार की श्रीमती रसिलाबेन हीरालाल वोरा नहीं रही। वेदनीय कर्म के उदय से रसिलाबेन एक लंबे समय से अचेतन अवस्था में लकवे की गहन बीमारी से त्रस्त होकर बिस्तर पर थी। परिवारजनों ने इस अवस्था में खूब सेवा की। श्रीमती रसीलाबेन परम गुरुभक्त अत्यंत धार्मिक एवं निर्मल स्वभाव वाली महिला थी। जीवन में अनेक धार्मिक यात्रा की। हार्दिक श्रद्धाजंली। ■■■

जैन विश्व

धर्मध्यान का अनूठा नजारा

बेंगलूरू (कर्नाटक) । शांतिनगर बेंगलूरू के प्रबल पुण्योदय से इस वर्ष यहाँ पर श्रीमती भीखीबाई पूनमचन्दजी लुणावत जैन स्थानक में- श्रमणश्रेष्ठ आगम मर्मज्ञ बहुश्रुत पंडितरत्न पूज्य गुरुदेव श्री समरथमलजी म.सा., श्रमण निर्माता पूज्य गुरुदेव तपस्वीराज श्री चम्पालालजी म.सा. की परम्परा के युगपुरुष पंडितरत्न श्री उत्तमचन्दजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी परम विदुषी व्याख्यानी महासती श्री जयश्रीजी म.सा., महासती श्री प्रभाजी म.सा., पुरुषार्थी महासती श्री यशस्वीजी म.सा., तत्वचिन्तिका महासती श्री अर्जिताजी म.सा., सतत स्वाध्यायरत महासती श्री निवृत्तिजी म.सा. ठाणा-5 का धर्म प्रभावक आडम्बर रहित आध्यात्मिक चातुर्मास अपूर्व धर्म, ध्यान- तप त्याग से निरन्तर गतिमान है। इस वर्ष यहाँ पर समर्थगच्छीय महासती मण्डल के चातुर्मास में प्रतिदिन प्रार्थना, महावीर कॉलेज (धार्मिक कक्षा), प्रवचन, दोपहर में ज्ञानाराधना, रात्रि प्रतिक्रमण एवं धर्मचर्चा में उपस्थिति काबिले तारीफ है। शांतिनगर सहित समस्त बेंगलुरू के श्रावक-श्राविका एवं युवक-युवती तथा बालक-बालिका प्रत्येक धार्मिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। चातुर्मास प्रारंभ से दि. 3.9.2019 तक धर्म प्रभावना व तप-त्याग की जानकारी क्रमशः इस प्रकार है-

तिविहार दीर्घ गुप्त तपस्या- 52 उपवास (यह तपस्या आगे जारी है)

मासखमण- (31 उपवास) श्रीमती किरणबाई सुरेशचन्दजी मुथा, श्रीमती आशाबाई दिनेशकुमारजी चोपड़ा, श्रीमती रिद्धी मलरेचा, सुपुत्री श्री जवरीलालजी मडलेचा, श्रीमती लीलाबाई धनराजजी रूणवाल । **17 से 21 तक** की तपस्या - 2 जनों ने, **11 से 16 तक** की तपस्या 20 जनों ने पूर्ण की एवं 5 जनों के तप अभी जारी हैं । **8 से 9 तक** की तपस्या लगभग 125 जनों ने पूर्ण की **(अठाई व नौ) पंचोला व तेला तप आराधना** लगभग 825 जनों ने किए (नोट- चातुर्मास प्रारंभ से

तेले की लड़ी रोजाना निरन्तर अलग से चल रही है।) **एकान्त की तपस्या** – 55 जनों ने की। **एकासन व बेआसने की तपस्या**– हर घर में हुई है (करीब 125 घरों में बड़ों व बच्चों ने यह तपस्या की है।) एकासन व बेआसन के मासखमण– लगभग हर घर में चल रहे है। ग्यारह रंगी, एक नवरंगी, एक पंचरंगी एक अबी तक यहाँ पर हुई है । उपवास– हजारों की तादाद में यहाँ पर सम्पन्न हुए हैं। दया– संवर– पौषध – सैकड़ों की तादाद में सम्पन्न हुए हैं। सामूहिक एकासन यहाँ पर दो बार हुए हैं– प्रथम बार– 250 जनों ने किए। दूसरी बार– 200 जनों ने किए। इसके अलावा अनेक छोटे/बड़े तप व विविध कर्म निर्जरा के अनेक त्याग– प्रत्याख्यान हुए हैं। प्रतिदिन प्रवचन में भी आशातीत उपस्थित रहती है। शांतिनगर के अलावा आसपास के क्षेत्रों तथा बेंगलूरू महानगर के उपनगर निवासी भी उपस्थित होते रहते है। चातुर्मास में सामायिक सूत्र व प्रतिक्रमण सूत्र कंठस्थ करने की ज्ञान आराधना में लगभग 45 श्रावक–श्राविका/ युवक–युवती निरन्तर आगे बढ़ रहे हैं।

प्रवचन के बाद विभिन्न ज्ञानवर्धक कक्षाएँ चलती हैं जिनमें पच्चीस बोल की कक्षा में लगभग 50 सदस्य, गुणस्थान की कक्षा में लगभग 30 सदस्य एवं नन्दीसूत्र की कक्षा में लगभग 25 सदस्य उपस्थित होते हैं। दोपहर में कर्म प्रकृति की कक्षा में महिलाएँ व लोक का थोकड़ा की कक्षा में भी महिलाएँ बढ़चढ़ कर भाग ले रही हैं। प्रतिक्रमण उपरांत रात्रि में लघुदण्डक की कक्षा में भी महिलाएँ व युवतियाँ पूरे उत्साह से ज्ञान – ध्यान सीख रही हैं। बेंगलुरू के इतिहास में पर्युषण पर्व का नजारा शांति नगर क्षेत्र के लालबाग में बड़ा ही प्रेरणादायक व अपूर्व धर्म प्रभावक रहा। पर्युषण पर्व में रोजाना लगभग 2500 की उपस्थिति तथा संवत्सरी महापर्व के दिन लगभग 3200 की उपस्थिति अत्यन्त प्रभावशाली रही। अन्तकृतदशांग सूत्र का सांगोपांग प्रभावी वाचन व विश्लेषण एवं विभिन्न प्रासंगिक विषयों पर सचोट व्याख्यान सबको प्रभावित करते रहे। अंतिम दिन संवत्सरी को वृहदालोयणा का वाचन भी लालबाग में किया गया। शांतिनगर युवक मण्डल तथा शांतिनगर महिला मण्डल की उत्साह वर्धक सेवाएँ विशेष रूप से सराहनीय रही।

– छगनमल लुणावत
(मंत्री–शांतिनगर श्रीसंघ), बेंगलुरू

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला, फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी
  भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा, फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार, फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि. मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी
  फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्मःशा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

SHRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR

पिपलौदा में
पू. श्री गच्छाधिपतिश्री
के परम सान्निध्य में
श्री उपधान तप आराधना
का समापन

श्री प्रकाश कांठेड़
द्वारा मासखमण
की तपश्चर्या, तपोत्सव
आयोजित श्रीमती कांठेड़
ने भी किया सिद्धितपः
जावरा में तप अनुमोदना

श्री तथा श्रीमती कांठेड़
की तपश्चर्याओं की
अनुमोदना में समारोह
के मुख्य अतिथि
विधायकश्री
चैतन्यजी काश्यप
तथा विधायक
डॉ. राजेन्द्रजी पांडे

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/18-20
Posting Date at Mandsaur on 3rd Day of Every Month

त्रिवर्षीय शुल्क-400/- वर्ष-66, अंक-11 कुल पृष्ठ कवर सहित 128

रामेश्वरम् में जिनालय तथा गुरु मंदिरों का
समारोहपूर्वक विधिवत् शिलान्यास

धार में सम्पन्न हुआ तप अनुमोदना महोत्सव

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001